Plagiarism Detector v. 2942 - Originality Report 5/25/2026 3:15:04 PM

Analyzed document: CPS-1 (1).pdf Licensed to: Pitamber Dutt Pant

Comparison Preset: Rewrite Detected language: Hi

Check type: Internet Check

TEE and encoding: PdfPig

Detailed document body analysis:

Relation chart:

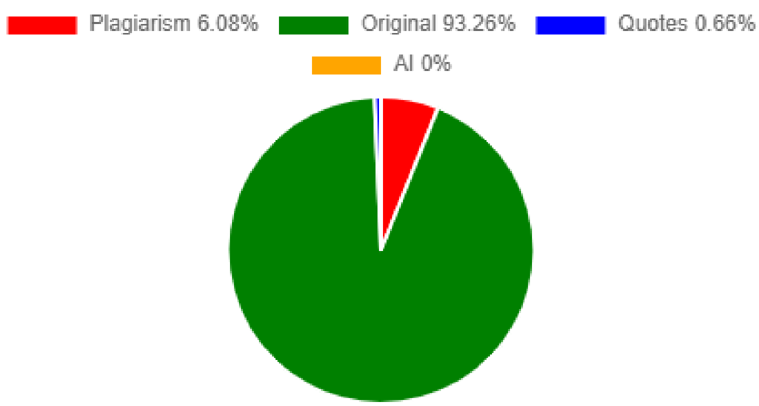

Distribution graph:

Top sources of plagiarism: 43

3%	624	1. https://web-crawler.plagiarism-detector.com/get-doc-pt?did=8kmlPYG48zVEmA
2%	1144	2. https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/
1%	723	3. https://www.notesinhindi.com/blog/स्पर्श व्यंजन क वर्ग क ख ग घ ङ

Processed resources details: 112 - Ok / 9 - Failed

Important notes:

Wikipedia:	Google Books:	Ghostwriting services:	Anti-cheating:
Wiki Detected!	[not detected]	[not detected]	[not detected]

UACE: UniCode Anti-Cheat Engine report:

[uace_line1]

[uace_line2]

3. Document not normalized: normalizer is switched off

[uace_line4]

[uace_line5]

[uace_line_recommendation_title]

[uace_line_recommendation]

Alphabet stats and symbol analyzes:

UACE does not support the doc language! UACE logics skipped!

Active References (Urls Extracted from the Document):

No URLs detected

Excluded Urls:

No URLs detected

Included Urls:

No URLs detected

Detailed document analysis:

CPS -1 □□□□ 1 - □□□□ □□ □□ : □□□ □□ □ □ 1.1 □□तावना 1.2 उ□□□ य 1.3 िविभ□न मानव समह" #ारा स$□□षण हते बोली का □योग: ऐितहािसक प/र□□0य ृ ु 1.4 भाषा उ2पि□ से स$बिधत 5ोत व आधार ं 1.5 िलिप का िवकास और िविभ□न भाषाओ क: िलिप ं 1.5.1 िलिप 1.5.2 िलिप और बोली म; अतर ं 1.5.3 िलिप और बोली म; स$बध ं 1.6 िलिप के िवकास का इितहास 1.7 िविभ□न भाषाओ क: िलिपयाँ ं 1.7.1 भारतीय िलिपयाँ 1.7.2 िवदशे ी िलिपयाँ 1.8 साराश ं 1.9 शEदावली 1.10 अGयास □H" के उ□र 1.11 सदभ। J4 सची व उपयोगी पाठयसामJी ् ू ं ं 1.12 िनबधा2मक □H ं 1.1 □□□□□ □ भाषा का □योग िजतना ही नैसिगाक, सरल और उपयोगी ह,ै इसको प/रभािषत करना उतना ही किठन ह।ै भाषा मानव क: नसै िगाक जैवीय Sमता के साथ ही एक सा□कितक िवशेषता भी ह।ै जो िविभ□न भाषाओ ृ ं ं के मV्य अतर का आधार ह।ै भाषा िकसी समाज क; अ□दर अनेकानेक िजटल Xयव□थाओ के मV्य एक ं ं िजटल Xयव□था (System) ह।ै िजसम; कई उप-Xयव□थाए होती ह।ै मानव भाषा का िवकास कब और ं कै से हआ इसपर कोई एक मत िनराकरण नही हो सका ह।ै िवषय क: िजटलता और अनभवज□य सा0य" c ु के अभाव के कारण

Quotes detected: **0.01%** id: **1**

'भाषायी समाज पे/रस'

(Linguistic Society of Paris, 1871) ने इस िवषय पर त2कालीन और भिवqय म; िकसी भी प/रचचा। पर रोक लगा दी थी(Larson, Dprez & Yamakido, 2010)। यह □□तब□ध पिyमी दशे " म; बीसवz शदी के अत तक □भावकारी बना रहा ह ै तथािप चोम□क:, ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 1 ु CPS -1 हउसर, िफच (Chomsky, Hauser, Fitch) आिद िव#ान" के इस िदशा म; सतत काया।शील रहन े से इस िवषय पर लगा □□तबध □तीका2मक □प से ख2म हो जाता ह ै और अथा।हीन हो जाता ह।ै भाषा क: उ2पि□ ं के िवषय म; उपलEध अनेकानेक िस□□त व 5ोत □चिलत रह ; ह,ै उनम; से कछ पर चचा। हम आगे के प□□ ृ ु ं म; कर;गे। 1.2 □ □ इस इकाई को पढ़न े के उपरात आप म; िन$निलिखत Sमताएँ अपेिSत ह;ै ं 1. भाषा के दो त2व" बोली और िलिप के स$□2यय को समझ सक; गे। 2. बोली और िलिप के अतर को □प□ कर सक; गे। ं 3. भाषा (बोली) के िवकास क: ऐितहािसक िववेचना कर सक; गे। 4. भाषा क: उ2पि□ से स$बिधत िविभ□न 5ोत", आधार" व िस□त" का म□याकन कर सक; गे। ू ं ं ं 5. िलिप के इितहास को जानते समझते हए बताने म; सSम ह"गे। c 6. िलिप के िविभ□न □कार" का वग□करण कर सक; गे। 7. िविभ□न िलिपय" के िलखन े के तरीक" म; अतर □प□ कर सक; गे। ं 8. िविभ□न भारतीय और िवदेशी भाषाओ क: िलिपय" को बता सक; गे। ं 1.3 □□□□□ □□ □ □□□ह□ □□□□ □□□ □□ ह□ □ □ !" #□ □□ $: &□□ह□□□# '□□□ (□ (Use Of Spoken Languages For Communication By The Various Segments Of Human Groups: A Historical Perspective) इकाई के इस खड म; हम मानव #ारा भाषा के □योग के इितहास पर चचा। कर;गे। जब कभी भी भाषा के ं इितहास क: बात आती ह ै तब हमारा Vयान सवा।□थम बोलचाल क: भाषा पर ही जाता ह।ै इसम; कोई सदेह नही ह ै िक सवा।□थम बोली(Spoken Language) का िवकास हआ था। इस त□य को हम मनqय म; c ु ं भाषा के िवकास के अवलोकन से भी िस□ कर सकते ह।ै आपन े दखे ा होगा िक ब□चे बोलना पहले सीखते ह ै और अपनी आव□यकताओ क: पित। के िलए आवाज करते ह ै िजन Vविनय" पर उनक" ू ं सकारा2मक □□ित□या िमलती ह ै उन Vविनय" को वे दोहराते रहते ह ै (इस त□य के आधार पर भी भाषा क: उ2पि□ का एक िस□□त □□तपािदत िकया गया ह)ै । य े दखे ा गया ह ै िक मानक:कत भाषा के िवकास के ृ ं उपरात भी कछ ब□चे □वय के बनाए हए शEदो का □योग सदभ । िवशेष म; जारी रखते ह।ै यह िसफ। एक c ु ं ं ं शEद का िकसी एक ब□चे के िलए अथा।पणा। बनन े का सदभा। ह ै । सम□त मानव □जाित के िविभ□न ू ं वग□/समह"/□खड" क: सामा□य भाषा और िविभ□न भाषाओ के िवकास का इितहास हजार" वषा। पहले ू ं ं □□र$भ हआ था, जो आज भी जारी ह ै । c उ□राख□ड म िव□□व□□लय 2 ु CPS -1 भाषा क: उ2पि□ के सदभा। म; सामा□य □H जो आपके िम□तqक म; आते ह ै और इस िवषय पर पवा। क: चचा। ू ं के आधार पर आप यह तो मान सकते ह ै िक भाषा एक िजटल और िवलSण सक□पना ह।ै इसको ं प/रभािषत करना और इसक: उ2पि□ के िवषय म; सही सही कछ कहना अस$भव नही पर द□ह काया। ु ु अव□य ह।ै भाषा क: उ2पि□ के सही समय के िवषय म; सटीक अनमान लगाना सभव नहz ह।ै हम यह ु ं नहz जानते ह □ िक भाषा का िवकास कै से हआ, □योिक जीवन क: उ2पि□ के □□िर$भक पिदच□ह" क: भाँित c भाषा क: उ2पि□ के सदभा। म; ऐितहािसक □माण व सा0य □□□ नही हए ह।ै िव#ान" का अनमान ह ै िक यही c ु ं कछ लगभग एक लाख से पचास हजार वष□ के बीच बोलचाल क: भाषा का िवकास हआ होगा और c ु िलिखत भाषा का िवकास लगभग पाँच हजार वष□ पवा। हआ होगा। जैसा िक भाषा सभी िवषय" क: c ू आधार ह ै और एक अितवा।षयक अनशासन भी हएै क अध ययन सामJी क: □प म; भाषा अनेकानेक ् ु ं िवषय Sे□" के अनतगा।त आती ह ै िज□ह ; हम भाषा क; आधार कह सकते ह।ै इन िविभ□न □□□कोण" से हम भाषा क: उतपि□ का इितहास पता करने का □य2न करते ह।ै 1.4 □□□□ L'□M □ □□□□O□ P □ □ QO□□ N भाषा क: उ2पि□ से स$बिधत सैकड़ो िस□□त □□तपािदत िकए गये ह ै िज□ह ; हम 5ोत व आधार भी कहते ं ं ह ै । सभी िस□□त" क: चचा । करना यहाँ स$भव और आव□यक नही ह ै । अतः हम कछ □मख िस□□त" व ु ु ं ं िवचारधाराओ क: चचा। कर;गे। ं 1. धािम क ोत: हम जानते ह ै िक िव□ के सभी धम□ म; जो □मख त2व ह ै वह मानव और ई□र का ु अि□त2व, िवशेषताए और दोनो त2व" का आपस म; स$बध क: िववेचना करते ह।ै भाषा भी एक ं ं मनqय से जड़ी िवशेषता ह।ै अतः िव□ के □मख धम□ म; भाषा क: उ2पि□ के सदभा। म;

भी िववेचना ु ु ु ं िमलती ह।ै िहद धमा के अनसार भाषा का ज□म दवे ी सर□वती से हआ। यहदी और ईसाई धमा के c □ ु ं ू अनियायय" का मानना ह ै िक ई□र न े सवा□थम आदम को उ2प□न िकया। आदम न े ससार के अ□य ु ं □□□णय" के िवषय म; जो भी कछ कहा वे शEद ही उनके नाम हो गए। ससार के आिद प□ष और ु ु ं □□(आदम और हौवा) िजस भाषा म; बात िकया करते थे उसी से ससार क: सम□त भाषाओ का ज□म ं ं हआ। इस बात को िस□ करने, जाँचन े और खडन करन े हते 25000 वष□ से 500 वष□ के पवा तक c ु ू ं शोध व परीSण िकए जाते रह(े यले, 2006)।

Plagiarism detected: **0.03%** https://mycoaching.in/barahkhadi id: **2**

आज के समय म; भाषा क: उ2पि□ के इस आधार पर ु चचा करना अनाव□यक माना जाता ह

(ै शमा, 2010)। 2. □□कितक □विन ोत: इस िवचारधारा के अनसार □□रि$भक शEद" क: उ2पि□ मनqय #ारा ृ ु ु □□कितक Vविनय" के सनने और उनिक आवि□ करने से हई। इस िवचारधारा के अनसार काँव काँव c ृ ृ ु ु क: Vविन से कौआ शEद बना। इसी िस□□त क: एक कड़ी के □प म; यह िवचार आता ह ै िक मानव के ं हष। और िवषाद के अनभव" के बाद क: □वभािवक Vविनय" जैसे िक

Quotes detected: **0%** id: **3**

'आह'

Quotes detected: **0%** id: **4**

'ओह'

Quotes detected: **0%** id: **5**

'वाह'

Quotes detected: **0%** id: **6**

'हाय'

ु आिद से भाषा का िवकास हआ होगा। यह बात स2य ह ै िक भाषा म; कछ शEद ऐसे भी ह □ जो जीव" c ु के नाम और उनके Xयवहार से स$बध रखते ह े परत स$पणा मानव भाषा क: उ2पि□ क: Xया□या इस ु ू ं ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 3 ु CPS -1 आधार पर नही क: जा सकती। शEद िव□□न(Morphology), जो िक आज एक पणा िवकिसत ू िवषय माना जाता ह,ै वह िकसी भी भाषा के शEद" क: उ2पि□ के िसफा यही 5ोत तो नही बताता ह।ै तथािप इस 5ोत का हम पणा□प से खडन नही कर सकते ह।ै हो सकता ह ै िक मानव घोषय□ का ू ं ं □योग इ□ही शEद" के □योग से □□र$भ हआ हो। c 3. मातभाषा िस□□त: □□कितक 5ोत के ही समान मातभाषा िस□त के मानने वाले सोचते ह।ै इस मत ृ ृ ृ ं ं के अनसार भाषा क: उ2पि□ सवा□थम माता और उसके िशश के बीच स$वाद से हई जो बाद म; आगे c ु ु ं चलकर अ□य िनकट सबिधय" म; स$वाद का माVयम बनते हए समदाय िवशेष क: भाषा का □प ले c ु ं ं लेती ह।ै 4. जैिवक सरचना/ शारी!रक अनकलन ोत: कछ िव#ान" का मानना ह ै िक मनqय म; भाषा का ु ू ु ु ं िवकास इसिलए हआ िक उसक: जैिवक सरचना अ□य जीव" क: तलना म; अिधक अनकल थी। इस c ु ु ू ं िवचार □म म; सवा□थम हम मनqय के पणातः िं#पदीयचर(दो परै " पर चलने वाला) होन े पर Vयान देते ु ू ह।ै इस कारण से मनqय के मि□तqक तथा घोषय□ का समिचत िवकास हो सका। अब आप मनqय के ु ु ु ं दातो पर Vयान दग; े जो सीधी खड़ी ि□थित म; होते ह।ै मासाहारी जीव" क: भाँित मानव-दत भोजन को ं ं ं चीरन े म; बहत उपयोगी तो नही कह े जा सकते ह,ै पर दताSर" (वण□:

Plagiarism detected: **0.07%** https://www.amojeet.com/2021/05/ka-se-gy-tak… + 2 resources! id: **7**

त, थ, द, ध) के उ□चाराण म; c ं अनठी भिमका अदा करते ह।ै मानव ओ□ क: सरचना शEद उ□चारण क: □□□ से अिधक अनकल ू ू ु ू ं होती ह ै िजससे ओ□य वण□ (प, फ, ब, भ

) का उ□चारण स$भव हो पाता ह।ै इसी □कार से जैवभािषिव□□□नय" न े हमारे मख, ताल, िजXहा, आिद क: िविश□ सरचना को भाषा के आधार का ु ु ं कारण माना ह।ै मनqय म; घोषय□ का □थान भी अ□य □तनपायी (बदर, बनमानष आिद) जीव" क: ु ु ं ं तलना म; कछ नीचे होता जो गलकोश को बड़ा करते हए Vविन-गजन क: सभावना उ2प□न करता ह।ै c ु ु ुं ं घोषय□ क: यह ि□थित मानव के िं#पदचारी होन े के कारण मानी जाती ह ै । ं नीगस के अनसार मनqय का शाकाहारी होना भी भाषा के िवकास का कारण बना। मासाहारी जीव" म; ु ु ं कपोल" और मख का ठीक से िवकास नही हो पाता ह ै □य"िक वे भोजन को ठीक से चबाते नही ह □ । ु इसके िवपरीत मनqय मख व कपोल" का अिधक िवकास कर सका इसिलए Vविन-भदे म; वह अ□य ु ु पशओ से अिधक समथा हो सका (Negus, 1946) । मखिववर के सकचन और □सर से मनqय ु ु ु ु ं ं बोलन े और गाने म; सहायता लेता ह।ै गाने क: Sमता को भी भाषा के िवकास का एक उ□च कोिट का पायदान माना जा सकता ह,ै िजसम; गायक को भाषा म; □योग होन े वाले िविभ□न अग" का ं कशलता से □योग करना होता ह।ै ु 5. अनिवाशक ोत: इस िवचारधारा के लोग भाषा को एक अनिवाशक लSण मानते ह।ै आप ने दखे ा ु ु ं ं होगा िक कछ ब□चे जो ज□म से बहरे होते ह,ै प/रणामतः वे िहदी, अJजे ी, गढ़वाली आिद साम□य□प ु ं ं स; □चिलत मानक भाषाएँ नही सीख पाते ह।ै तथािप समयातराल व अवसर

□□□ होन े पर वे भी सके त ं ं भाषा म; स$□□षण करन े म; सSम हो जाते ह।ै उनम; से कछ ब□चे तो समाज म; □चिलत मानक भाषा ु भी सीखने लगते िजसे देखकर आम जन ई□र का चम2कार कहते ह।ै इससे एक बात तो िस□ होती ह ै िक मानव िशश भाषा स$बिधत एक िवशेष Sमता के साथ ही ज□म लेते ह।ै ु ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 4 ु CPS -1 भाषा क: उ2पि□ के अनेकानेक 5ोत, िस□□त, व तक। □□तत िकए जा चके ह ै तथािप इसक: उ2पि□ ु ु ं का □□रभ और कारण एक रह□य ही बना ह।ै अनविाशक: एक ऐसा िवषय ह ै जो ति□का िव□□न, ु ं ं ं आणिवक जीव िव□□न, िवकासवादी जीवविव□□न क: मदद से शायद इस पहले ी का हल िनकालने म; ु सSम हो। भाषा क: उ2पि□ से स$बिधत यह खोज अब उस िवशेष

Quotes detected: **0%** id: **8**

'भाषा जीन'

(Language- ं gene) क: खोज क: ओर अिभमख होता िदखाई देता ह,ै जो मनqय को अ□य □□□णय" से अलग ु ु करता ह।ै □□स□ भाषािवद यले महोदय भी भाषा क: इस पहले ी का हल मानव अनविाशक: म; ही ू ु ं मानते ह।ै उनका मानना ह ै िक हम भाषा के कछ गण" व िवशेषताओ का वण।न तो कर सकते ह ै परत ु ु ु ं ं एक व□तिन□ सव।मा□य प/रभाषा □□तत करना आज भी सभव नही ह(ै Yule, 2006, p.16). ु ु ं लिकन एक त□य तो सव।मा□य□प से िस□ हो चका ह ै िक मानव म; कछ जिवक Sमताएँ तो होती ह ै ु ु जो िकसी भाषा के □2यS अनदशे न के िबना भी मानव को उस भाषा िवशेष को □योग करने क: ु दSता □दान करती ह ै (Larson, Dprez & Yamakido, 2010)। रामिवलास शमा। जी के शEद" म; इस प/रचचा। को एक अत िदया जा सकता ह।ै शमा।जी कहते ह ै िक भाषा रचना का कारण मानव का ं प/रवेश, उसके िजवन क: अव□यकताए ँ तथा उसका िवशेष शारी/रक गठन ह ै (Sharma, 2010)। अ&यास □(1. िलिखत भाषा क: उ2पि□ िकतने वष□ पव। से मानी जाती ह?ै ू 2. बोलचाल क: भाषा क: उ2पि□ को िकतन े वष□ पव। से माना जाता ह?ै ू 3. भाषा रचना के कौन-कौन से कारण मान े जाते ह?ै 1.5 □!□' #□ □□#□□ S□ □□□□□ □□□□T N #" □!□' (Development of the Alphabets and Scripts of Various Languages) 1.5.1 िलिप □या आप जानते ह ै िक िलिखत भाषा या िलिप का □योग सव।□थम कहाँ हआ था? िलिप और बोली म ; c □या अतर ह?ै और िविभ□न भाषाओ क: िलिपय" का िवकास कै से हआ? □या िकसी भाषा क: िलिप म; c ं ं कभी आिशक या पण। प/रवत।न हआ ह?ै इ□ही रोचक □H" के उ□र जनने के िलए हम आगे बढ़ते ह।ै c ू ं िलिप या िलिखत-भाषा को प/रभािषत करना और इसके िवकास क: ऐितहािसक िववेचना करना, भाषा (बोली) क: तलना म; बहत किठन काय। नही ह।ै □य"िक यह एक मत। त2व ह।ै िडनयल (Daniels, c ु ू 2003) िलिप को इस □कार से प/रभािषत करते ह;□

Quotes detected: **0.1%** id: **9**

" िलिप □यिनाधक थाई िच□ह□ क□ □णाली या प□□त होती ह ै जो ू िकसी बोली या कथन िवशेष को इस □कार से □ तत करने के िलए ु उ□राख□ड म िव□□व□□लय 5 ु CPS -1 □य& होती ह ै िक व&◌ा क□ ह त'ेप के िबना लगभग वैसा ही पनः ु ु □□+ िकया जा सके "

। अथा।त जो िवचार य सदशे व ◌ा ने स□□□षत िकए ह,□ 5ोता भी लगभग वैसा ही □□□ कर; या वही अथ। ं ं िनकाल;। इस प/रभाषा म; िलिप को एक िच□ह" क: □णाली बताया गया ह।ै िलिप का उ□□□ य दरवत□ ू स$वाद को व□तिन□ तरीके से □थािपत करना ह।ै िशS◌ा तकनीक:, जनसचार तकनीक:, सचना-स$□□षण ु ू ं तकनीक: के S◌े□ म; एक बड़ी उपलिEध म; िगना जाता ह।ै िव□ म; िकतनी भाषाए बोली जाती ह?ै इसका एक अदाजा ही लगाया जा सकता ह।ै □2येक बार क: ं ं नजातीय गणना म; इनक: स□या बदलती रहती ह।ै आप िविभ□न प□तक" म; अलग अलग स□थाओ #◌ारा ृ ु ं ं ं िदए त□य" म; अतर पाय;गे। इससे हम; ¢िमत होने क: आव□यकता नही ह ै □य"िक हम जानते ह ै क: भाषा ं एक गितशील व प/रवत।नशील त2व ह।ै अभी तक यही कोई 5000 से 7000 के बीच भाषाए बताई जाती ं ह।ै िव□ के लगभग 200 दशे " म; (196) 6000 से अिधक (6909) भाषाओ का □योग िकया जाता ह।ै ं जबिक इन सभी भाषाओ के □योग करने वाले कल लगभग दो दज।न िलिपय" क □योग करते ह।ै भाषाओ ु ं ं क: तरह िलिपय" क: स□या भी अिववािदत □प से िनियt नही क: जा सकती ह।ै यहाँ िलिपय" क: स□या ं ं क: चचा। करन े का उ□□□ य यह ह ै िक आप भाषाओ और िलिपय" क: स□या म; अतर दखे कर □वय समझ ं ं ं ं जाय;गे िक भाषा और िलिप दो अलग अलग त2व ह।ै िलिप का िवकास भाषा के उदिवकास के बहत बाद c म; हआ ह ै तथािप िलिप का इितहास भी हजार" वष। पराना हो चका ह।ै बोले जाने वाले अमत। शEद" व c ु ु ू भाव" को मत। □थायी □प देने के बहत से और बहत तरीक" से □यास िकए गय े (िजनक: चचा। हम इस c c ू ख□ड म; आगे कर;गे)। इन अनेकनेक □यास" के ल$बे इितहास म; बहत सी िलिपय" ने ज□म िलया। इनम; से c कछ आज भी □योग म; ह ै और कछ िवल□ हो गई। इसके अलावा कछ िलिपय" म; समय और सिवधा के ु ु ु ु ु िहसाब से मलभत प/रवत।न हए। कछ िलिपय" न े नई िलिपय" को ज□म िदया य अ□य िलिपय" का पोषण c ू ू ु िकया और उनका □योग ख2म हो गया। कछ 5ोत" के अनसार श□ िलिपयाँ और वण।मालाएँ 20 ही ह ै ु ु ु (worldstandards.eu, & sixtyvocab.com). सभी □कार क: िलिपय" और वण।मालाओ को जोड़ने ं पर भी इनक: स□या 40 से अिधक नही हो पाती ह।ै अ□तन जानकारी के अनसार िव□ क: 7099 जीिवत ु ं भाषाओ(Ethnologue, 2017) म; से िसफ। 300 भाषाए िलिखत □प म; □योग क: जाती ह ै ं ं (DayTrnaslation, n. d.)। अथा।त भाषा िलिखत □प म; ही हो, यह िकसी भी भाषा के अि□त2व क: अिनवाय। शत। नहz ह।ै सभी भाषाए एक िलिप म; और एक भाषा सभी िलिपय" म; िलखी जा सकती ह।ै ं आइये हम भाषा और िलिप के अतर को िबदवार तरीके से समझने

क: कोिशश करते ह;ै ं ं ु 1.5.2 िलिप और बोली म/ अतर ं • िलिप या लेखन भाषा क: तरह कोई जैिवक यह अनिवाशक कारण नहz होता ह।ै कोई भी मानव ु ं िशश अपने वातावरण म; बोली जान े वाली भाषा को सीख; िबना नहz रह सकता ह।ै परत िलिप इसके ु ु ं िवपरीत कोई नैसिगाक ि□या नहz ह ै िबना अनदशे न (िशSण) के कोई ब□चा िलखने और पढ़ने क: ु ि□या □□रभ नहz कर सकता ह।ै ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 6 ु CPS -1 • बोली क: अपेS◌ा लेखन एक सचेतन ि□या ह।ै इसके िलए मानव मि□तqक का कोई िवशेष िह□सा िनधाा/रत नहz होता ह,ै और न ही इसके िलए कोई िवशेष मानव जीन(Gene) आधार ह।ै िलिप □कि□पत(Devised) त2व ह,ै िजसक: रचना सचेतन □प से क: गई ह।ै जबिक भाषा एक उदिवकिसत (evolved) मानव छमता ह।ै िजसक: उ2पि□ मानव के लाख" वष□ के उि#कास के इितहास म; िछपी हई ह।ै c • आज सचना तकनीक के समय म; आपके िलए यह समझना किठन नहz ह ै िक िकसी भी भाषा क: ू िलिप म; प/रवता न िकया जा सकता ह।ै आप मोबाइल सदशे भेजते ही ह"गे। मोबाइल सदशे क: ं ं भाषा िहदी, गढ़वाली, कमाऊनी कछ भी रखते हए रोमन िलिप(अJेजी भाषा क: िलिप) का □योग c ु ु ं ं तो कर ही लेते ह"गे। अथवा आपने बहत से अJेजी के शEद दवे नागरी िहदी वणा माला िलिप म; िलखे c ं ं ह"गे। िजसम; आपका अपना नाम सवाािधक िलखा जाने वाला शEद होगा। कहन े का ता2पय । यह ह ै क: िलिप और भाषा अलग-अलग त2व ह।ै एक भाषा को सभी िलिपय" म; िलखा जा सकता ह।ै दशे क: भाषा या भाषाए कोई भी हो पर समझन े क: सिवधा क: □□□ से हम िलिप िवशेष के □योग को ु ं कानन #◌ारा अिनवाया भी कर सकते ह।□ जैसा िक हमारे देश के सभी सरकारी कामकाज को दवे नागरी ू और रोमन ि

Plagiarism detected: **0.04%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… id: **10**

लिप म; ही □कािशत िकया जाता ह।ै उ□राख□ड क: □शासिनक भाषाए िहदी और ं ं स□कत दोनो ही दवे नागरी िलिप म; िलखी जाती ह।ै ृ ं आप बहत सी िहदी भाषा क: कहािनय" को अJेजी(रोमन) िलिप म; कई इटरनेट साइट" पर पढ़ सकते c ं ं ं ह।ै दो भाषाओ के सय □योग के कारण कछ Eलोग (Blog/ वेबसाइट पर लेख व िनबध) लेखक" ु ु ं ं ं ने तो रोमनागरी (Romanagari) □बद का □योग करना श□ कर िदया ह।ै रोमनागारी एक सय ु ु ं शEद (portmanteau word) ह ै जो िहदी(देवनागरी) लेख" को अJेजी(रोमन) िलिप म; िलखे जाने ं ं पर □यो

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.learncbse.in/class-8-hindi-chapter-9… id: **11**

ग होता ह ै िजसम; शEद दवे नागरी के और अSर(वणा) रोमन िलिप के होते ह।ै इस

□योग से आप भाषा और िलिप के □वत□ अि□त2व को समझ सकते ह।ै ं • अपनी गितशील व □वाहमय लSण के कारण बोली(भाषा) धीरे -धीरे िवकिसत

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindimatra.co.in/ka-se-shabd-hindi/ id: **12**

होती ह ै और िवल□ ु भी हो सकती ह।ै उ□राखड क: 15 बोिलय" म; से दो (गढ़वाली और कमायनी) ही □मखता से बोली ु ु ु ं जाती ह

□ और बाक: म; से कछ तो अ□□य होने क: कगार पर ह।□ अथाात िज□ह ; उ□राख□ड के लोग भी ु ं नही जानते िक यह बोिलयाँ उनक: ही स□कित का अग रही ह।ै ऐसी िवल□□□य बोिलयाँ Jामीण ृ ु ं ं इलाक" म; िसफा िबना पढ़; िलख े या बजगा लोगो #◌ारा □योग म; लाई जाती ह।ै ऐसे ही बहत सी भाषाए c ु ु ं मर चक: ह □ या मत□□य ह □ □य"िक उनको बोलने वाले लोग या तो नहz रह े या तो भाषा प/रवता न कर ृ ु चके ह।□ परत उन भाषाओ का सािह2य िचरजीवी होता ह।ै िसध सGयता के अवशेष" से जो िलिप ु ु ु ं ं ं िमली ह ै हम उसका अथा िनकालने म; असमथा ह ै □य"िक वह भाषा अब ल□ हो चक: ह ै परत आप ु ु ु ं दखे रह े ह □ क: िलिप आज भी आपके सामने अि□त2व म; ह।ै हम कह सकते ह □ कोई भी िलिप तलना2मक □प से भाषा क: अपेS◌ा अिधक लबी उ क: होती ह।ै यह भाषा और िलिप के अतर के ु ं ं साथ साथ स$बध का भी कारण कहा जा सकता ह।ै िकसी भाषा को िचरजीवी बना देने के िलए ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 7 ु CPS -1 उसका िलिखत भाषा के □प म; होना ज□री होता ह।ै िलिप के िलखने और □योग के तरीक" म; भी प/रवता न होते ह □पर ऐसे प/रवता न िकसी बोली क: तलना म; नग□य कह े जा सकते ह।□ ु नेशनल िजओJािफक मािसक पि□का के अनसार हर दो स□□ह (14 िदन) म; एक भाषा ल□ हो जाती ु ु ह ै और इस गित के िहसाब से अगली शताEदी तक िव□ म; □चिलत लगभग 7000 भाषाओ म; स े ं आधी ही रह जाय;गी(Rymer, 2012)। • भाषा िव□□न को जब हम मनोिव□□न के साथ जोड़कर समझते ह □ तब िलिप भािषव□□न के पाले को छोड़कर सके तशा□ य लSिणव□□न (Semiotics) क: तरफ खड़ी िदखा

Plagiarism detected: **0.08%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ + 3 resources! id: **13**

ई देती ह।ै □य"िक ं मनोिव□□न के अनसार भाषा एक स□□ना2मक अमता ि□या हो जाती ह।ै जबिक िलिप मता व □थल ु ू ू ू ं □िकत क: होती ह।ै ृ • □□िन; ®य □योग के आधार पर भाषा और िलिप म; अतर हो जाता ह।ै छोटी स

◌ी बात ह ै िक जो हम ं सनते ह ै वह भाषा य बोली ह ै और जो दखे ते ह ै वह िलिप य लेखन □णाली ह।ै यह बात िसफा समझने ु के िलए ह ै वैसे मनqय एक □□न;®◌ी को रोककर दसरे का □योग नही करता ह।ै पाठन के उदाहरण से हम ु ू दोनो के एक साथ □योग को समझ सकते ह।ै उपरो भाषा और िलिप के अतर का वणा न का एक मा□ उ□□□ य यह िस□ करना रहा ह ै िक हम भाषा ं और िलिप के □वत□□ अि□त2व को समझ सके । एक आम अदमी भाषा और िलिप म; अतर नही कर ं पाता

ह।ै परत िशSक" को यह अतर समझना आव□यक होता ह।ै भाषा और िलिप म; अतर के साथ ु ं ं ं साथ घिन□ स$बध होता
ह,ै यही कारण ह ै िक हम दोनो को अलग अलग करके नही समझ पाते। अब ं हम अतर क: तरह दोनो म; स$बध भी सचीब□
कर ल;। ू ं ं 1.5.3 िलिप और बोली म/ स1बध ं • भाषा (बोली) और िलिप दोनो ही समाज िवशेष क: स□कित का □तीक होती
ह।ै प/रणामतः पहचान ृ ं और □िवभमान का कारण भी बनती है। हम िवदशे म; अपनी मातभाषा को बोलने का अवसर िमलने
ृ पर सखद अनभव करते ह।ै यिद आप अपनी भाषा को बोलने वाले Xयि को उ□राखड से बाहर पाते ु ु ं ह ै तो उसे तरत ही
पहचान लेते ह।ै साथ ही समय उपलEध रहने पर प/रचय बढ़ाकर अपनी भाषा म; ु ं वाताlलाप भी करने का अवसर □□□ कर लेते
ह"गे। • अतर म; हमन े समझा िक भाषा को समाज म; रहते हए हम सीख ही लेते ह,ै जबिक िलिप सीखन े के c ं िलए
िशSण क: आव□यकता होती ह।ै लेिकन यह नैसिगlक अिधगम क: □□□या मात-भाषा म; ही ृ होती ह।ै अ□य भाषाओ के
सीखने के िलए हम; िशSण य अनदशे न क: आव□यकता पड़ती ह ै ु ं अ□यथा जब तक िक हम उस भाषा िवशेष के लोग"
के मVय रहन े न लगे। अतः दोनो म; ही िशSण क: आव□यकता होती ह।ै • भाषा स0म व अ□थायी त2व होती ह।ै इस को □थल
व िचर□थायी बनान े के िलए िलिप अपना स$बध ू ू ं िनभाती ह।ै उ□राख□ड म िव□□व□□लय 8 ु CPS -1 • दोनो ही
अिभXयि का माVयम होती ह।ै ¢मरिहत व बाधारिहत स$□□षण म; दोन" एक दसरे क: पिता ू ू करती ह।ै आप िशSक के □प
म; कोई िवषय ब□च" को समझाने का □यास करते ह।ै ब□च" क: समझ को स□ढ़ करन े और समझ क: गार□टी □दान करन े
के िलए आप अपने Xया□यान के साथ साथ ु □यामप¯ पर म□य िबद िलखन े क: कोिशश ज□र करते ह"गे या करेग;। अतः
अिभXयि के माVयम ु ं ु के □प म; दोनो अ□यो□यािl5त होती ह।ै अ&यास □(4. िव□ म; लगभग िकतनी भाषाएँ बोली जाती
ह?ै 5. िव□ म; लगभग िकतनी िलिपयाँ □चिलत ह?ै 6. नेशनल िजओJिफक मािसक पि□का के अनसार िकतन" िदन" म;
एक भाषा ल□ हो जाती ह?ै ु ु 7. बोली और िलिप म; कोई दो अतर बताइये ं 1.6 □!□' # □□#□□ #□ Y□□ह□□ िलिप के
िवकास क इितहास भी बहत रोचक और ल$बा ह।ै मानव ने अपनी अिभXयि को □थायी बनाने c के िलए कई तरह के □योग
िकए ह।ै िज□ह ; हम गफाओ म; □□□ िच□" से श□ करते हए, िशलालेख", c ु ू ं ताप□", भोजप□", प□तक", वेबसाइट"
आिद आिद पर एक नजर डालकर समझ सकते ह।ै बोली या ु बोलचाल क: भाषा का □योग करते हए आप अपने सामने वाले Xयि
को अपना सदशे य िवचार c ं स□□□षत कर सकते ह ै और एक समय िवशेष का □योग ही कर सकते ह।ै बोलचाल क: भाषा
क: सीमा को ं पार करते हए एक िलिप (यहाँ िलिखत भाषा कहना अिधक उिचत होगा) समय और □थान के परे c स$□□षण का
कायl करती ह।ै शायद मनqय क: यही आव□यकता उसे िलिप के सजlन के िलए बाVय करती ु ह।ै मानव ने हजार" □योग
िकए ह"गे िजनसे स□□षण के अनके ानके माVयम" का ज□म हआ। िलिप िवकास c ं िकसी भी मानव स□कित के िलए
□□□तकारी घटना रही होगी। जैसा क: िव□ क: सभी □□चीन सGयताओ ृ ं ं ं म; िकसी न िकसी तरह मतl स□□षण/
अिभXयि के िच□ह िमल जाते ह।□ इससे हम; एक बात तो समझ लेनी ू ं चािहए िक िलिप िकसी भी िवकिसत सGयता का
अिनवाय l त2व होती ह।ै जरा क□पना क:िजए िक भाषा (बोली) के ज□म से मानव को समह बनाकर रहने का अवसर िमला
होगा। आपसी सहमित बनी होगी। ू आपसी Xयवहार के िनयम बने होग;। सामिहक जीवन सखद, सरिSत और सामज□यपणl हो
गया होगा। ू ु ु ू ं आप बोलचाल क: भाषा के सहारे िसफl सामिहक जीवन क: तो क□पना कर सकते ह ै पर वतlमान म; ू
िव□मान दशे " और राq°" क: क□पना नही कर सकते। अथाlत वहद समदाय के सद□य" को सामिहक ृ ु ू िनयम" का पालन
करवाने के िलए िलिखत कनन, सरकार, □शासन आिद क: ज□रत होती ह।ै □शासन के ू िलए िलिप अिनवायl शतl होती ह।ै
यही कारण ह ै क: □वत□ता □□□□ के उपरात हम राq°भाषा सिनyत तो ु ं ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 9 ु CPS -1
नही कर सके पर □शासिनक भाषा और िलिप हमन े सिनyत क: या करनी पड़ी। शायद इन सब बात" से ु आपके िम□तqक म;
िलिप क: अिनवायlता और इसके िवकास क: आव□यकता तो □प□ हो चक: होगी। ु अब हम िलिप के िवकास पर एक
ऐितहािसक नजर डालते ह।ै िव□ क: सGयताओ के इितहास म; हम दखे ते ह □ िक सवl□थम लगभग पाँच हजार वष l पवl ू ं
म;सोपोटािमया क: सGयता के शहर सम;र (वतlमान ईरान इराक वाला Sे□) म; क:लSर/क:लाकार िलिप ु का िवकास हआ था।
यह िलिप िम¯ी के फलक" पर उ2क:णl क: जाती थी(िच□ 1)। इस िलिप म; c िच□□2मक व रेखा2मक दोनो ही □कार के
िच□ह" का □योग िकया जाता था। िच2 1: म/सोपोटािमया क5 क5ला6र िलिप (िच2 ोत: ं
https://www.haikudeck.com/mesopotamia-inventions-education-presentation- 2xuiSNCZba#slide3) वतlमान िलिप
से □प□□प से सबिधत □तीत होती हई □□चीन िलिप 3000 वषl पवl िशलालेख" म; िदखाई c ू ं ं दते ी ह।ै इन हजार"
वष□ के सफर म; हजार" पड़ाव िमलते ह।ै गफाओ म ; □□□ िच□कारी को अिधकतर ु ं भाषािवद िलिप का िह□सा नहz
मानते ह।□ लेिकन अिभXयि को □थायी करने के िलए िच□ प□□त ने मह2वपणl भिमका अदा क: ह।ै यह िच□कारी िच□कला
क: िवशाल परपरा का एक िह□सा ही मानी जाती ू ू ं रही ह।ै जब कोई िच□/□□तिकत (image) सतत □प से िकसी
पदाथl, उ2पाद या प/रणाम को विणlत करने ृ लगती ह ै तब इस तरह के वणlन को िच□□िलिप (Pictogram) क: स□□ दी जाती
ह।ै हमारी □□चीनतम ं स□धव सGयता के अवशेष" से पता चलता ह ै िक यहाँ भी िच□□िलिप का □योग िकया जाता
था(िच□ 2)। उ□राख□ड म िव□□व□□लय 10 ु CPS -1 िच2 2: हणRपा स&यता क5 िच2 िलिप (िच2 ोत:
https://www.harappa.com/script/parpola8.html) जो चचाl हम; बाद म; करनी चािहए थी वह अभी करना ज□री हो रहा ह।ै
बात यह ह ै िक िच□ के माVयम से स□□षण िलिप के िवकास क: श□आत तो ह ै पर श□ िलिप के िवकास के बाद भी
हमन े िच□ प□□त क ु ु ं □योग बद नही िकया ह।ै आज भी राq°ीय राजमाग□ पर सावlजिनक □थल" जैसे िक रेलवे
□टेशन, ं िवमानप□न पर िच□ के माVयम से स□□षण िकया जाता ह(ै िच□ 3)। इसका कारण ह ै िक िच□" के माVयम
ं से स$□□षण म; ¢म क: स$भावना कम से कम होती ह।ै िच2 3: आिधनक िच2 स□□षण िचVह(िच2 ोत: ु ं

https://www.pinterest.com/tris112397/pictograms/) िच□□लिप म; जब अमता िवचार" को स$□□□षत करने क: Sमता आ जाती ह ै तब हम इसे िवचारिलिप य ू भाविलिप (Ideogram) कहते ह।ै िच□□लिप और भाव िलिप म; िसफा त2व के □□तिनिध2व का अतर ह।ै ं एक म; मता पदाथ□ का वणा करते ह □ और दसरे म; अमता िवचार" का वणान करते ह।□ जब इस िसतारे ू ू ू उ□राख□ड म िव□□व□□लय 11 ु CPS -1 के िच□ के माVयम से हम आकाश के तार" का वणान कर; तो इसे हम िच□□लिप का एक उदाहरण कह सकते ह।ै

Quotes detected: **0%** id: **14**

'तारा'

शEद िलखने के अलावा हम इस िच□ को बनाकर अपनी बात कह सकते ह।ै परत जब ु ं तारे के िच□ के माVयम से हम रिा□, शिात, शीतलता आिद भाव" को □दिशात करन े लगते ह ै तब इसे हम ं भाविलिप क: स□□ दते े ह।ै □□चीन िच□ प□□त के कई िच□ आज क: वणामाला के अSर के □प म ; ं प/रवितात हो गए ह।□ िच□□लिप से वणािच□ह क: ओर जाना मानव मि□तqक क: बढ़ती हई अमता िचतन क: Sमता c ू ं का □□तक ह।ै जब □तीक िच□ह शEद" का □□तिनिध2व करन े लगते ह □ तब □तीकिलिप (Logograms) का िवकास होता ह।ै इसका □योग आज भी होता ह।ै बहत सी कपिनय" के िच□ह ही उनके नाम का c ं □□तिनिध2व करते ह।ै आप ब□क ऑफ इिडया को िलखने के िलए आप िसतारे के िच□ह का □योग कर ं सकते ह।ै यनीलीवर क$पनी के िलए (U) क िच□ह □योग कर सकते ह।ै समेर क: क:लाSर िलिप भी एक ू ु □कार क: □तीकिलिप ही थी। वतामान म; चीन क: भाषा म; □तीक िच□ह" का □योग देखा जा सकता ह।ै चीनी वणामाला के कई वणा एक Vविन मा□ को नहz बि□क स$पणा शEद (या शEद के अथा) को विणात ू करते ह □ या शEद के एक भाग को विणात करते ह।□ इस परपरा से अलग दसरी □णाली ह ै जहा वणा-िच□ह (य िच□) भाषा के शEद को नहz Vविन को ं ं ू विणात करते ह।□ इसे कटलेखन(Rebus Writing) नाम िदया गया ह।ै जब कभी भी उस Vविन का □योग ू शEद" म; होता ह ै तो उस Vविनिच□ह(कटिच□ह) को उस शEद म; जोड़ िदया जाता ह।ै Vविनकट हम; ू ू वतामान वणामाला क: ओर अिधक पास ले आते ह।ै आज भी हम अपनी अिभXयि के कट तैयार करत े ू रहते ह।ै कटVविन के अिधनक उदाहरण से समझ सकते ह ै िक एक Vविन कै से एक शEद को य शEद के ू ु भाग को □दिशात करती होगी। उदाहरण के िलए same too you क: जगह same 2 you, Night को Vविन कट म; Ni8 भी तो िलख दते े ह ै और Today को 2Day। ू जब कोई □□तकित (Image) भाषा के □वर या Xयजन वणा का □□तिनिध2व न करके ृ ं शEदाश/□वराश (Syllable का □□तिनिध2व करती ह ै तब हम उसे □वराश िलिप (Syllabary) कहते ह।□ ं ं ं जापान क: भाषा म ; इस शEदाश लेखन □णाली का □योग िकया जाता ह।ै □□चीन िमµ और सम;र क: ु ं िलिपय" म; भी शEदाश लेखन का □योग िमलता ह।ै शEदाश िलिप हम; वतामान वणामाला के सबसे ं ं िनकटतम पायदान तक पहचँ ा दते ी ह।ै जहा एक वणा-िच□ह िसफा एक Vविन को □□तिनिध2व करता ह।ै c ं अरबी और यहदी जैसी समी(Semetic) भाषाओ क: िलिप □णाली म; िसफा Xयजन" (क ख ग च आिद) □ ं ं क: सहायता से ही शEद िलखे जाते थे। □वर(अ इ उ आिद) का िच□ह पाठक को □वय अपन े िववेक से ं समझना होता था। यही Xयजक वणामाला वतामान भाषाओ क: वणामाला का स□पात करती ह।ै यहाँ तक ू ं ं हम एक िच□ह एक □वर तक पहच चके होते ह।ै परत श□ □वर अSर (Vowel) के िच□ह को तैयार नही c ु ु ु ु ं कर सके थे। इितहास म; सवा□थम यनािनय" ने □वर अSर" क: पिता करके श□ व पणा वणामाला को ज□म ू ू ु ू िदया। उ□राख□ड म िव□□व□□लय 12 ु CPS -1 1.7 □□□□□ □□□□T N #" □!□'□□ [िविभ□न भाषाओ क: िलिपय" के अVययनके िलए हम वतामान से भतकाल क: ओर बढ़;गे अथाात िजन ू ं िलिपय" का हम □योग करते ह □ उनक: उ2पि□ व □कित के अVययन करते हए □□चीन िलिपय" के बारे म ; c ृ िसS□ चचाा कर;गे। ं हमारे □दशे उ□राखड म; म□य □प से तीन भाषाए िहदी, स□कत, और अJेजी □योग क: जाती ह।ै ृ ु ं ं ं ं ं अतः हम इ□ही भाषाओ क: िलिपय" पर म□य □प से Vयान दग; े ह।□ अप यह तो सन े ही ह"गे िक िहदी म ; ु ु ं ं □य िलिप का नाम दवे नागरी िलिप ह।ै आइये इसके बारे म; जानते ह,ै ु 1.7.1भारतीय िलिपयाँ क.

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.notesinhindi.com/blog/स्पर्श व्यंजन क व... + 2 resources! id: **15**

देवनागरी िलिप: िहदी और स□कत भाषाए वतामान समय म; दवे नागरी िलिप म; ही िलखी जाती ह।ै ृ ं ं ं िहदी और दवे नागरी िलिप तो एक-दसरे के पयााय बन गए ह।□ प/रणाम □व□प देवनागर

ी को िहदी ं ं ू िलिप भी कहते ह □ इसका एक नाम नागरी िलिप भी ह।ै इसके नामकरण के कारण को भी □प□ □प से पहचाना नहz जा सका ह।ै अलग-अलग िव#ान अपनी अपनी क□पना के आधार पर (□य"िक सा0य का अभाव ह)ै इसक: Xया□या करते ह।□ i. □थम मत के अनसार यह िलिप नगरीय (शहर" क:) सGयता म; ज□मी और □चिलत रही। ु ii. ि#तीय मतानसार गजरात के नागर ·ा ्ण" #ारा □योग क: जाती रही। ु ु iii. ततीय मतानसार यह िलिप देवनगर □थान म; उ2प□न हई। c ृ ु iv. एकमत के अनसार यह िलिप काशी और आसपास के S□े म; िवकिसत हई। काशी को c ु दवे नगर भी कहते ह।□ इसिलए इसका नाम दवे नागरी हो गया। दिSण भारत म; इसका नाम

Quotes detected: **0%** id: **16**

'नदी-नागरी'

िलिप भी ह,ै जो इसका सबध काशी िशव और □□चीनतम नगर वाराणसी से ं ं ं जोड़ता ह।ै इस िलिप का िवकास 1000 से 1200 ई० के लगभग □□चीन नागरी िलिप से

Plagiarism detected: **0.04%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ + 2 resources! id: **17**

माना जाता ह।ै □□चीन नागरी िलिप के अिभलेख आठवz शदी से 16 शदी तक दिSण भारत म; िमलते ह।□ देवनागरी िलिप म; सामा□य□प से 52 अSर बताय े जाते ह।ै िजनम; से 49 अSर व2माान समय म; अिधक □चलन म; ह,ै और 3 का िहदी म; □योग नग□य हो गया ह।ै स□कत भाषा म; ज़□र सभी 52 अSर" का □योग िकया जाता ह।ै ृ ं ं स□कत म; □य अSर" के आधार पर देवनागरी िलिप म; अSर" क: स□या 56/57 तक पहचँ जाती ह।ै c ृ ु ं ं □□चीन समय म; स□कत भाषा ·ा$ही िलिप म; िलखी जाती रही ह।ै अतः उन अSर" को ·ा$ही िलिप का ृ ं िह□सा मानकर छोड़ िदया जाता ह।ै लेिकन हम; याद रखना चािहए क: दवे नागरी िलिप का ज□म भी ·ा$ही िलिप से ही हआ ह।ै c ख.]ा^ी िलिप: ·ा् ी िलिप को कई िलिपय" क: लबी 5खला क: जननी कहा जा सकता ह।ै एक ं ं सव°Sण के अनसार 198 िलिपयाँ इस िलिप से िनकली ह।ै लगभग सभी भारतीय भाषाओ (उद । जैसी ु ं ृ उ□राख□ड म िव□□व□□लय 13 ु CPS -1 एकाध को छोड़कर) क: िलिपय" के अलावा नेपाल, बा»लादेश आिद कई एिशयायी दशे " क: ं भाषाअओ क: िलिपयाँ इसी से ज□मी ह।ै यह एक □□चीन भारतीय िलिप ह ै जो 350 ई० प० से 300 ू ं ई० तक भारत के अिधकतम भाग पर □चलन म; रही। □□0 Eयलर के अनसार इस िलिप म; 41 अSर ू ु थे िजनम; 9 □वर और 32 Xयजन थे(Buhler, 1898)। इस िलिप के नामकरण के पीछे कई मत ह □ जो ं आपस म; सिबधत भी ह।ै आइय े हम इन मतो को जान;। ं ं i. □थम मत के अनसार भगवान ·्ा न े इस िलिप को बनाया था इसिलए इसे ·ा$ही कहते ह।ै ु ii. ि#तीय मत के अनसार ·्□ान यानी वेद □□न के सरSण (□िथाय2व) हते इस िलिप क: रचना ु ु ं हई थी। c iii. ततीय मत के अनसार ·ा्ण" ने इसको बनाया और इसका □योग िकया इसिलए इसका नाम ृ ु ·ा्ी िलिप हो गया। कई पाyा2य िव#ान ¢म, अहम आिद िवकार" के कारण इसक: उ2पि□ चीनी य सामी िलिप से मानते ह।□ ऐसी क□पना करना भी अक□पनीय बात ह।ै सामी से एकािधक समानता ·ा्ी िलिप म; तो ह,ै परत दोन" ु ं म; एक स े अिधक मलभत अतर ह।ै जैसे िक यह िलिप बाए से दाए िलखी जाती ह ै जबिक सामी िलिप ू ू ं ं ं दाई से बाई ओर िलखी जाती ह।ै सामी म ; के वल 22 अSर ह □ जबिक ·ा्ी म; 41 अSर होते ह।□ ं ं सवाािधक मह2वपणा त□य यह ह ै िक ·ा्ी म; वण□ क: आिकत व□□2मक भी हजै बिक अ□य िवदेशी ृ ृ ू िलिपय" म; इस तरह क: अSर रचना नहz दखे ी जाती ह।ै अत: यह एक भारतीय भभाग पर उ2प□न िलिप ू ही ह।ै इस िलिप क: दो उ□री और दिSणी शैिलया मानी जाती ह।□ उ□री शैली से िन$निलिखत िलिपय" ं का िवकास हआ ह;ै c i. ग_ िलप: यह िलिप ग□ वश के राजाओ के अिभलेख", जैसे िक □याग □िश□त आिद ु ु ं ं अिभलेख, म; िमलती ह।ै ii. किटल िलिप: यह ग□ िलिप से ही ज□मी एक िलिप ह।ै इसम; □वर" क: मा□□ए किटल या टेढ़ी ु ु ु ं हो जाती ह।□ इसिलए इसको किटल िलिप कहते ह।□ इससे नागरी और शारदा िलिपय" का ु िवकास हआ ह।ै c iii. □ाचीन नागरी िलिप: इस िलिप क: पव□ शाखा से बगला िलिप और पिyमी शाखा से ू ं राज□थानी, गजराती, महाराq°ी आिद िलिपया िवकिसत हई ह।ै c ु ं iv. शारदा िलिप: इस िलिप का िवकास □□चीन समय म; क□मीर और पजाब म; हआ। 10वz c ं शताEदी के लगभग इस िलिप का □योग होता था। क□मीरी, ग□मखी, डोगरी आिद िलिपया ु ु ं इसी से िनकली ह।ै v. बागला िलिप: यह िलिप बगला उिड़या आिद भाषाओ म; □योग क: जाती ह।ै इस िलिप से ं ं ं असमी, मिणपरी भाषाओ क: िलिपय" का ज□म हआ ह।ै c ु ं ·ा्ी क: दिSणी शैली से िन$निलिखत िलिपया उ2प□न हई। c ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 14 ु CPS -1 i. पि`मी िलिप: यह िलिप पाचवी सदी के लगभग □योग म; थी। गजरात, िनासक, क"कण ु ं आिद S े□" से िमले लेख" म; इस िलिप के □योग िमलते ह।□ ii. म□य □देशी िलिप: यह िलिप चौथी से आठवz शदी के लगभग □योग म; रही। मVय □दशे , बदले खड, हदै राबाद आिद के लेख" म; इस िलिप का □योग होता था। ु ं iii. तेलग-कVनड़: यह िलिप तेलग और क□नड़ भाषाओ क: िलिप ह।ै ु ु ु ु ु ं iv. किलग िलिप: यह िलिप सातवz से »यारहवz शदी के मVय किलग के S े□ म; यह िलिप □चलन ं ं म; थी। v. bथ िलिप: मलयालम और तेलग िलिपया ·ा्ी क: इसी शाखा से िनकली मानी जाती ह।□ ु ु ं ं इसम; स□कत Jथ" क: रचना हई इसिलए इसका नाम Jथ िलिप हो गया। c ृ ं ं ं vi. तिमल िलिप: सातवz शताEदी से आज तक यह तिमल भाषा क: िलिप ह।ै उपरो िववेचन से हम कह सकते ह □ िक ·ा्ी िलिप सभी

Plagiarism detected: **0.08%** https://testbook.com/question-answer/hn/which… id: **18**

भारतीय भाषाओ क: िलिपय" क: जननी ह।ै ं ·ा्ी िलिप को खरो□□ िलिप से भी स$िबधत माना जाता ह।ै ं ग. खरोe्ी िलिप: □□चीन भारतीय िलिपय" म; से एक खरो□□ िलिप भी ह ै यह िलिप 350 ई० प० से ू 200 ई० तक □चलन म; मानी जाती ह

।ै इस िलिप का □योग □चीन गाधार (वतामान अफगािन□तान) ं के S े□ म; िकया जाता था। उस S े□ म; इस िलिप न े गाधारी-□□कत और स□कत भाषाओ क: सेवा क:। ृ ृ ं ं ं स□ाट अशोक के शाहबाजगढ़ी और मानसेरा (दोनो ही □थान पजाब म; ह)ै के अिभलेखो म; इस ं िलिप का □योग िमलता ह।□ अशोक के अलावा शक और कषाण" के अिभलेख भी खरो□□ म; ही ह।ै ु कछ िव#ान इसे एक भारतीय िलिप मानते ह □ और कछ इसे आमे°इक िलिप मानते ह।□ इसम; 37 वणा ह □ ु ु िजनम; 5 □वर और 32 Xयजन होते ह।□ अ□सर यह िलिप दाए से बाए िलखी जाती ह।ै ं सभी वत मान भारतीय िलिपयf म/ एक समानता देखी जा सकती है। वह इस □कार है; • लगभग सभी िलिपयाँ ·ा्ी िलिप से ज□मी ह।□ • सभी Vव□या2मक ह,□ एव कवगा, चवगा आिद म; बटे ह।□ ं ं • सभी के िलखने म; मा□□ का □योग होता ह।ै • सबम; सय ोSर" का □योग होता ह।ै

ं ु • सबके वण। □प म; काफ: िमलते ह।□ • □वर, Xयजन, मा□□ तीन" का अलग □□वधान ह।ै ं 1.7.2 िवदेशी िलिपयाँ भारतीय िलिपय" के िववरण के बाद हम कछ िवदशे ◌ी िलिपय" से एक सिS□ प/रचय करते ह।□ ु ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 15 ु CPS -1 i. लैटिन या रोमन िलिप: इस िलिप का ज□म िवदशे ◌ी धरती पर ज□र हआ पर आज हम इसे c िवदशे ◌ी िलिप नही कह सकते ह।ै आज यह िलिप हमारी ि#तीय □शासिनक भाषा क: िलिप ह ै और भारत के सिवधान #◌ारा अिधनियमित भी ह।ै अJेजी भाषा म; □य िलिप (ABCD) को ु ं ं रोमन िलिप कहते ह।□ वतामान म; यह सवाािधक □य िलिप ह ै इसम; 26 वण। होते ह,□ िजनम; 5 ु □वर और 21 Xयजन ह।ै इन 26 वण□ क: 45 Vविनया होती ह।ै यह िव□ क: अनेक भाषाओ क: ं ं ं िलिप ह।ै □या आप जानते ह ै िक लैटिन, ½◌ासीसी, अJजे ◌ी जैसी म□य भाषाओ के साथ साथ एक ु ं ं ं भारतीय भाषा भी इस िलिप का □योग करती ह।ै यह भाषा भारत के पव□□री रा¾य िमजोरम क: ू म□य भाषा ह,ै िजसे िमजो या लसाई(Mizo/ Lusahai भाषा कहते ह।□ जैसा िक यरोप क: ु ु ू अिधकाश िलिपया यनानी िलिप से ही उ2प□न हई ह ै अतः यह िलिप भी यनानी िलिप से ही c ू ू ं ं ज□मी मानी जाती ह।ै ii. यनानी िलिप: यह िव□ क: □□चीनतम िलिप म; से एक ह।ै इसम; 24 अSर होते ह।□ इसके ही ू □थम दो अSर अ□फा(α) और बीटा(β) के आधार पर ही अJजे ◌ी म; वणामाला को अ□फाबेट ं कहते ह।□ इसे हम यरोपी िलिपय" क: जननी कह सकते ह □ इसक: उ2पि□ उ□री सामी िलिप से ू मानी जाती ह।ै iii. सामी िलिप: सामी िलिप भी □□चीनतम िलिप म; □□चीनतम कही जा सकती ह।ै इसम; 22 वण। होते ह।□ इस िलिप का □योग 1000 से 800 ईसापव। के आसपास िकया जाता रहा। इसक: उ□री ू शाखा से अमºइक और फोनेशी िलिपय" का ज□म होता ह।ै इसक: दिSणी शाखा से अरबी िलिप का िवकास हआ ह।ै c iv. अरबी िलिप: वतामान म; □चिलत िलिपय" म; से यह एक □मख िलिप ह।ै मलतः इसम; 28 ु ू अSर होते ह।ै यह दाए से बाए िलखी जाती ह।ै यह अरब, अफिगान□तान, फारस आिद □थान" ं ं पर □चिलत ह।ै फारसी भाषा म; चार अSर और अिधक जोड़कर 32 अSर" के साथ इस िलिप का □योग िकया जाता ह।ै भारतीय भाषा उद । म; फारसी म; □य अSर" के अलावा पाच अSर ु ं ू और अिधक जोड़कर 37 अSर" का □योग िकया जाता ह।ै v. चीनी िलिप: यरोपीय और भारतीय िलिपय" से अलग चीनी िलिप भी एक □□चीनतम िलिप ह।ै ू इसका िवकास 3200 से 2700 ईसा पव। के लगभग हआ था। यह चीन क: भाषाओ क: □मख c ू ं ु िलिप ह ै वैसे मडा/रन ही चीन िक म□य िलिखत भाषा ह।ै यह िविच□ िच□□2मक िलिप ह ै (;汉 ु ं 字 漢 字) िजसे िव□ क: एक मा□ सनातन िलिप क: स□□ दी जा सकती ह ै । □योिक यह ं िलिप □चीन काल से आज तक □चलन म; ह।ै इसम; िहदी य अJेजी क: तरह अSर Vविनया नही ं ं ं होती ह।ै इसम; हजार" □वराश (logograms) □योग िकए जाते ह।ै चीनी भाषा म; साSर होन े के ं िलए तीन से चार हजार □वराशो/अSर"/ िच□" आिद को सीखन े क: आव□यकता होती ह।ै ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 16 ु CPS -1 अ&यास □(8. सवा□थम िलिप का िवकास कहाँ हआ? c 9. िच□□लिप और भाव िलिप म; □या अतर ह?ै ं 10. दवे नागरी िलिप म; कल िकतने अSर होते है? ु 11. भारतीय िलिपय" कोई दो िवशेषताएँ िलिखए। 12. ·◌ा$ही िलिप क: दिSणी शाखा से उ2प□न दो िलिपय" के नाम िलिखए। 13. कौन सी भारतीय भाषा रोमन िलिप म; िलखी जाती ह?ै 1.8 □□□□N] हमने देखा िक जो भाषाएँ हम लोग इतनी आसानी से □योग करते ह ै वे हजार" वष□ के मानव उि#कास और □यास का प/रणाम ह।ै समा□य मानव भाषा के ज□म को पिहचाना एक किठन काय । ह,ै पर जो भाषाएँ आजकल □चलन म; ह ै उनक: जड़ो को ज□र पिहचाना जा सकता ह।ै भाषा के बारे म; अVययन करना एक बहत बड़ा और जिटल Se□ ह।ै यहाँ जिटल को किठन नही समझना चािहए। जब भाषा के उ¿व और c िवकास के तार हम; एक िनियt □थान पर नही ले जाते हो; हम िकसी एक □□□कोण से भाषा क: समJता को नही दखे सकते हो; जब इसके अVययन म; िवषय" क: परत दर परत खलती जाती हो, तब इसे जिटल ु कहना ही उिचत होगा । हम देख सकते ह ै िक एक शताEदी म; ही आिधनक भाषाश□ ने दजान" िवषय" को ु ज□म द े िदया ह।ै उदाहरण के िलए भाषाशा□(Linguistics) से ज□मे कछ िवषय" के नाम हम दखे सकते ु ह:ै ऐितहािसक-भाषाशा□, □□योिगक-भाषाशा□, सामािजक-भाषाशा□, मनो-भाषाशा□, तलाना2मक- ु भाषाशा□, शैिSक-भाषाशा□, िनदाना2मक-भाषाशा□ इ2यािद। भाषा के िवषय म; अVययन करते हए c हम नये-नय े िवषय" से □ब□ होते जा रह े ह।ै वैसे यह एक रोचक िवषय ह ै और हम िशSक" को इसक: जानकारी होनी चिहए। िकसी भाषा के इितहास और जड़ो को जानने से उस भाषा म; हमारी □□च भी बढ़ती ह ै और हम; सीखने म; आसानी भी होती ह।ै आज के बहभािषक समाज म;, िवशेष□प से भारतीय समाज म; c एक से अिधक भाषाओ को सीखना ज□री हो जाता ह।ै वैसे जब हम; मालम हो िक एक से अिधक ू ं भाषाओ को जानना स□□ना2मक □□मण को गित □दान करता ह ै तब हम □वय ही एक से अिधक ं ं ं भाषाओ को सीखने और िव□□□थाय" को िसखाने के िलए □व□□/रत ह"गे। ं 1.9]_`□□!" 1. बहभािषकता (Multilingualism) - दो य दो से अिधक भाषाओ का अतसा$बध और k ं ं ं अित□। ं 2. बहभाषी (Polyglot or Multiglot) - एक से अिधक भाषाओ का □□योग करन े वाला k ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 17 ु CPS -1 3. स□□षण (Communication) - सचना, सदशे या त□य" का आदान □दान ू ं ं 4. शैि6क-भािषिवn◌ान (Educational Linguistics) - भाषा क: िशS◌ा मै ँ भिमका का ू अVययन करने वाले 5. िqपदीयचर (Bipedal) - दो पैरो पर चलने वाला जीव 6. घोषय2 (larynx) - गले का एक अग जो □वर उ2प□न करता ह ै ं ं 7. गलकोश (Pharynx) - मख के पीछे का िह□सा (□वर के प/रवतान और गजन के िलए) ु ु ं 8. धविन-ग़जन (Resonance) - मनqय म; □वर" को अतर से उतप□न करने क: िश ु ु ं ं 9. अनकलन (Adaptation) - समायोजन प/िर□थित िवशेष म; ढाल लेना ु ू 10. wतनपायी (Mammal) - अपन े ब□च" को दध िपलान े वाला जानवर ू 11. □िकxपत (Devised) -Xयिव□थित और योजनाब□ तरीके से उ2प□न 12. ति2का िवn◌ान (Neurology) - एक िवषय िजसे अJेजी म; Neurology कहते ह।ै ं ं 13. अनविाशक5 (Genetics) - एक िवषय िजसे अJेजी म; Genetics कहते ह।ै ु ं ं 1.10 bc□□□ □d□ # M□ 1. लगभग 5000 वषा पवा ू 2. एक लाख से पचास हजार वषा पवा ू 3. भाषा रचना के कारण: a. मानव का प/रवेश, b. उसके िजवन क:

अव□यकताएँ तथा c. उसका िवशेष शारी/रक गठन ह ै 4. िव□ म; लगभग छह हजार से अिधक भाषाए ँ बोली जाती ह?ै 5. िव□ म; लगभग लगभग दो दजान िलिपयाँ □चिलत ह?ै 6. 14 िदन" म; (दो स□□ह) िदन" म; एक भाषा ल□ हो जाती ह?ै ृ 7. बोली और िलिप म; कोई दो अतर: ं a. िलिप या लेखन भाषा क: तरह कोई जैिवक यह अनिवाशक कारण नहz होता ह।ै ृ ं b. जो हम सनते ह ै वह भाषा य बोली ह ै और जो दखे ते ह ै वह िलिप य लेखन □णाली ह।ै ृ 8. सवा□थम िलिप का िवकास म;सोपोिटमयाँ म; हआ? c 9. िच□□िलप और भाव िलिप म; िसफा तत्व के □□ितिनिधत्व का अतर ह।ै ं 10. दवे नागरी िलिप म; कल 52 अSR होते ह?ै ृ 11. भारतीय िलिपय" कोई दो िवशेषताएँ: a. सभी के िलखने म; मा□□ का □यो

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.learncbse.in/class-8-hindi-chapter-9… id: **19**

ग होता ह।ै उ□राख□ड म िव□□व□□लय 18 ृ CPS -1 b. सबम; सय ◌ISR" का □योग होता ह

।ै ृ ं 12. ·◌I$ही िलिप क: दिSणी शाखा से उ2प□न दो िलिपयाँ a. मVय □दशे ◌ी िलिप b. तेलग-क□नड़ ृ ृ 13. िमजो भाषा (िमज़ोरम रा¾य क: भाषा) रोमन िलिप म; िलखी जाती ह?ै 1.11 □N`□ e fNg □h" □ '□ $" '□i□□□f" □ 1. Akkinaso, f. N. (1992). Schooling, language and Knowledge in literate and non-literate societies. Comparative Studies in Society and History, 34, 1, 68-109. 2. Borodotsky, L. (

Plagiarism detected: **0.03%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… id: **20**

2001). Does Language Shape Thought? Mandarin and English Speakers' Conceptions of Time. Cognitive Psychology 43, 1

–22 3.

Plagiarism detected: **0.02%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… + 7 resources! id: **21**

Brown, R. (1973). A first language. Cambridge, MA: Harvard University Press.

4. Buhler, J. G. (1898). On the origin of the Indian brahma alphabet. Strassburg: K. J. Trübner. 5. Daniels, P. T. (2003) Writing system.

Plagiarism detected: **0.02%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… + 2 resources! id: **22**

In M. Aronoff & J. Rees-Miller (Eds.) The handbook of Linguistics (pp.

43-80). Oxford: Blackwell. 6. DayTrnaslation (n. d.). World languages. https://www.daytranslations.com/world-languages 7. Dua, H. R. (

Plagiarism detected: **0.02%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… id: **23**

2008). Ecology of multilingualism: language, culture and society. Mysore: yashoda

publication. 8. Dwivedi, K. D. (2010) Bhasha-Vigyan evam Bhasha-Shastra (12th ed. Hindi). Varanasi: Vishwavidyalay Prakashan. 9. Ethnologue (2017). Language of the world. Available on https://www.ethnologue.com/browse/names 10.

Plagiarism detected: **0.03%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… id: **24**

Fillmore, L. W. and Snow, C. E. (2000). What teacher need to know about language. Washington DC:

Centre for Applied Linguistics. 11.

Plagiarism detected: **0.02%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… + 5 resources! id: **25**

Garcia, O. (2009). Bilingual education in 21st century: global perspective. West Sussex (UK

): Wiley-Blackwell. उ□राख□ड म िव□□व□□लय 19 ृ CPS -1 12.

Plagiarism detected: **0.13%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… + 2 resources! id: **26**

Halliday, M. A. K.(1975). Halliday's Functions of Language. Retrieved from www.communityinclusion.org/elm/Professionals/.../Halliday- handout.d 13. Halliday, M.A. K. (1993). Towards a Language-Based Theory of Learning. Linguistics and Education 5, 93- 116. Retrieved from lchc.ucsd.edu/mca/Paper/JuneJuly05/HallidayLang Based.pdf. 14. Halliday, M.A.K. (2004). Three Aspects of Children's Language Development: Learning Language, Learning through Language, Learning about Language. In J.J. Webster (ed.), The Language of Early Childhood: M.A.K. Halliday, pp 308-326,

Ch. 14. New York: Continuum. 15.

Plagiarism detected: **0.03%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… id: **27**

Kristeva, J. (1989). Language the Unknown: An initiation into linguistics. New York: Columbia University Press.

16. Kumaravadivelu, B. (2006). Understanding language teaching: from method to post method. New York: Routledge. 17. Larson, R. K.,

Plagiarism detected: **0.02%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… + 3 resources! id: **28**

Deprez, V., Yamakido, H. (2010). The evolution of human language: Biolinguistic

perspective. Delhi: Cambridge University press. 18. Linguistics Society of America (n.d.). http://www.linguisticsociety.org/content/how-many-languages-are-there- world. 19. NCERT (2005). National Curriculum Framework, 2005. 20. Negus, V. E. (1946). The comparative anatomy and physiology of the larynx. New York: Hafner publishing Company. 21. Richards, J. C., & Renandya, W. A. (2002). Methodology in language teaching: anthropology of current practice. New Delhi: Cambridge University Press. 22. Rymer, R. (2012). Vanishing Voices, National Geographic (July). Available on http://ngm.nationalgeographic.com/2012/07/vanishing- languages/rymer-text 23. Sharma, R. (2010). Bhasha aur samaaj (7th ed. Hindi). New Delhi: Rajkamal Publication. 24. Sixtyvocab.com (n.d.). How Many Alphabets are there in the World? http://www.sixtyvocab.com/blog/many-alphabets-world/ उ□राख□ड म िव□□व□□लय 20 ृ CPS -1 25. Williams, R. (1977). Marxism and Literature. Oxford: Oxford University Press. 26. Worldstandards.eu (n.d.). The world’s scripts and alphabets. http://www.worldstandards.eu/alphabets/ 27. Yule, G. (2006). The study of language (3rd Ed.). New Delhi: Cambridge University Press. 1.12 □ □O□L□# □d N 1. भाषा क: उ2पि□

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.notesinhindi.com/blog/स्पर्श व्यंजन क व… + 3 resources! id: **29**

के िविभ□न आधार कौन से ह?ै 2. भाषा क: उ2पि□ से स$बिधत िविभ□न आधार" म; से आप िकससे अिधक सहमत ह ै और कौन? ं 3. िलिप के िवकास को रेखािकत करते हुए िव□ क: िविभ□न

िलिपय" क: चचा। क:िजए । c ं 4. भारतीय िलिपय" के िवकास वणा।न करते हुए िस□ क:िजए िक खरो□□ िलिप अनेक भारतीय c िलिपय" क: जननी ह।ै उ□राख□ड म िव□□व□□लय 21 ृ CPS -1 □□□□ 2- □□□□ □□ □□□ 2.1 □□तावना 2.2 उ□□□ य 2.3

Quotes detected: **0.01%** id: **30**

‘िशSण भाषा म वातावरण म; सभव नही ह’

ै के सामा□य अवधारणा क: साथक। ता ृ ं 2.4 भाषा □वीणता/ सभी िशSक" के िलए भाषा □वीणता क: अिनवाया।ता 2.4.1 भाषा □वीणता 2.4.2 िशSक के िलए भाषा □वीण/ िनपण होना □य" आव□यक ह?ै ृ 2.5 भाषा िशSा के माVयम के □प म ; 2.6 शEदावली 2.7 अGयास □H" के उ□र 2.8 सदभ। Jथ सची व उपयोगी पाठयसामJी ृ ू ं ं 2.9 िनबधा2मक □H ं 2.1 □□□□□ □ भाषा मानव के िलऐ एक िवलSण शि , Sमता और पिहचान ह।ै आप गहनता से िवचार कर;गे तो देख सकते ह ै िक भाषा का मानव □जाित से एक िविश□ स$बध ह।ै रेयम□ड िवि□लअ$स (Williams, ं 1977) महोदय ने तो यहाँ तक कह िदया िक भाषा क: कोई भी प/रभाषा □2यS य अ□2यS □प से मानवमा□ क: प/रभाषा ह।ै भाषा क" प/रभािषत करना अ2यत द□ह व अन□त क: खोज करने जैसा ह।ै ं ृ इसक: अन□त तरीके से अनत प/रभाषाए दी जा सकती ह।ै इसक: अमता। □कित के कारण ½ासीसी ृ ू ं ं मनोभािषाव□□नी(Psycholinguist) जिलया िे□□तेवा(1989) ने कहा िक भाषा आज भी अ□□त त2व ृ ह।ै भाषा को समझना और इसक: उ2पि□ व □भाव के बारे म; शोध करना िकसी एक िवषय Sे□ क: बात नही ह।ै दशा।न से लेकर ति□किाव□□न जैसे नवीनतम िवषय" म; मानवभाषा के िवषय म; अVययन िकया ं जाता ह।ै वता।मान भािषाव□□□नय" का मानना ह ै िक भाषा क: Sमता को समझन े के िलए ठोस अतिवा।षयी ं सहयोग क: आव□यकता ह।ै इन िवषय" म; िवकासवादी-जीविव□□न, नशा□, मनोिव□□न और ति□का- ृ ं िव□□न आिद □मख ह।ै ृ भाषा का िशSा क: िवषय और Sे□ म; मह2वपण। भिमका ह ै □योिक भाषा िसफ। स$□□षण का ू ू माVयम ही नही वरन Xयि के िवचार" का आधार होती ह।ै यह त□या2मक□प से िस□ िकया जा चका ह ै ृ िक भाषा या शEद" का मानव मि□तqक पर वहद असर होता ह ै (Borodotsky, 2001)। उदाहरण हते ृ ृ आप मानव के धािमा।क Xयवहार को ल ; सकते ह ै और आप देख सकते ह ै िक िविभ□न धम□ के अनिायय" ृ उ□राख□ड म िव□□व□□लय 22 ृ CPS -1 के मVय जो मतभेद और सघष। होता ह ै वह म□यतः भाषा का ही सघष। ह।ै कछ धािमा।क शEद जो िकसी ृ ृ ं ं धम। के मानन; वाल" के िलए उजा। का 5ोत तथा पिव□ता का आधा

Plagiarism detected: **0.07%** https://www.learncbse.in/class-8-hindi-chapter-9… + 2 resources! id: **31**

र होते ह ै और उस धम। िवशेष के मानने वाले Xयि य" म; अनशासन व सयम का सचार करते ह,ै उ□ही शEद" का □भाव अ□य धम। के ृ ं ं Xयि य" के िलए श□य होता ह,ै और

कभी कभी घणा, िव#षे आिद नकारा2मक भावनाओ के साथ साथ ृ ू ं उजा। का Sय भी करते ह।ै कहने का अथा। यह ह ै िक िकसी िवशेष भाषासमह का सद□य होने और स□िकत ृ ू ं िवशेष का अनयायी होने के आधार पर हमारे िचतन क: Sमता और िदशा दोनो ही □भािवत होती ह।ै ृ ं भाषा के अभाव म; स$□□षण और िचतन दोनो ही स$भव नही ह।ै इस □कार हम दखे सकते ह ै िक भाषा के ं अभाव म; िशSा क: Xयव□था का अि□त2व क□पनातीत लगने लगता ह।ै भाषा और िशSा अ□यो□यािा5त सा□िकतक त2व ह।ै ृ ं 2.2 □ □ इस इकाई को को पढ़ने के उपरात आप: ं 1. भाषा और िशSा के स$बध क: िववेचना कर सक; गे; ं 2. िशSण म; भाषा क: भिमका का म□याकन कर सक; गे; ू ू ं 3. भाषा □वीणता के स$□2यय को

□प□ कर सक; गे; 4. िशSक" के िलए भाषा-□वीण होने क: आव□यकता क: समालोचना कर सक; गे; 5. भाषा का िशSण माVयम के □प म; वणlन कर सक; गे। 2.3

Quotes detected: **0.01%**

id: **32**

'□]k□ □□□□ □l□ □□□□□□□ □ □N□□ ह" ह'

n # □□□□p□ b□O□□□□ m #" □□g#e □□ (Significance Of The General Notion That Teaching Cannot Take Place In A Language-Free Environment.) िपछली इकाई म; आप भाषा और िलिप के उ¿व और िवकास का अVययन कर चके ह।ै भाषा को यिद ु हम प/रभािषत कर; तो शायद मानव जीवन से अलग करके प/रभािषत नहz कर सकते ह।□ आप कह सकते ह □ िक मानव न े भाषा क: रचना नहz क:, आप इसे दवै ीय शि #ारा उ2प□न मान सकते ह।ै इसे नैसिगlक Sमता य अनिवाशक Sमता भी मान भी सकते ह।□ परत आप इस बात से इकार नहz कर सकते क: िलिप ु ु ं ं ं क: रचना मानव ने क: ह।ै िलिप देश और काल क: सीमा से परे एक □थाई त2व ह।ै जब िलिप सीखन े क: बात आती ह ै तब अिधगम, िशSण, िशS ालय आिद स□2यय अक□मात ही सामन े आ जाते ह।□ दसरी ं ू ओर यिद हम िशS ालय क: आव□यकता और उ2पि□ पर िवचार कर; तो हम समझ सकते ह □ िक िकसी भी सGयता और काल मे िशS ालय क: □थापना िकसी समदाय िवशेष ने अपनी स□िकत व □□न क: रS ा और ृ ु ं इनके □थािय2व और ह□तातरण के िलए क: होगी। एक िवशेष सदभ l म; कहा जा सकता ह ै िक आज भी ं ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 23 ु CPS -1 िव□□लय य िशSण स□थाओ का यही कायl ह।ै भाषा (बोली और िलिप) क: उ2पि□ और िवकास का ं ं इितहास भी मानव स□िकत क: रS ा, □थािय2व तथा ह□तातरण से जड़ा हआ ह।ै अतः भाषा और c ृ ु ं ं िव□□लय दोनो क: उ2पि□ का उ□□□ य एक ही लगता ह।ै इस □कार ये दोनो एक दसरे के परक या ू ू अ□यो□यािर5त कह े जा सकते ह।ै िव□□लय म; चलने वाली □□□या िजसे िशSण अिधगम कहते ह,□ के अि□त2व म; आने के दो आधारभत और अिधXयािपत (Overlapping) कारण हो सकते ह।□ □थम कारण ू यह िक समाज/सGयता िवशेष क: भाषा और िलिप हो सकती ह ै िजसे अगली पीढ़ी #ारा सीखने क: आव□यकता ने िशSण और िशS ालय" को ज□म िदया होगा। ि#तीय □वय िलिप और भाषा क: ं उपलEधता। भाषा उपलEध होन े से हम अगली पीढ़ी को सा□िकतक उपलिEधया ह□तात/रत कर सकते ह।ै ृ ं ं ं यिद भाषा नहz होती तो मानव म; शायद पशओ से अिधक स□□षण नहz होता। जब स□□षण का माVयम ु ं ं ं नहz तो □□न और अनभव के ह□तातरण क: क□पना नहz क: जा सकती थी। अतः िशSण, िव□□लय ु ं आिद आिद क: आव□यकता ही नहz पड़ती। इस □कार भाषा िशSण का उ□□□ य और माVयम दोन" ही बन जाती ह।ै भाषा िशSण क: □□□या और प/रणाम दोन" म; इस तरह से िमि5त ह ै िक हम अतर नहz कर ं सकते ह □ यिद हम िशSण से भाषा त2व को िनकाल द;, तो यह श□ दध म; से दध और पानी अलग अलग ु ू ू िनकालने जैसा होगा अथाlत अनाव□यक िवघटन कह सकते ह।□ हम एक दसरे पहल से भी भाषा के िशSण से सबध का अVययन करते ह।□ एक □H पर Vयान ू ं ं ू दीिजए और अपने उ□र को नीचे िदए हए /र □थान पर िलिखए। c िशSण □य"? अथवा िशSण क: आव□यकता □य"? िविभ□न शEद" म; आपके पास इस □H के िजतन े भी उ□र ह"गे उनको हम सार □प म; एक उ□र म; समेट सकते ह।□ वह यह ह ै िक िशSण ब□च" को अिधगम कराने य िसखान े के िलए िकया जाता ह।ै अब अिधगम □या ह?ै यहाँ आपके मि□तqक पर दबाव डाले िबना बताना चाहगँ ा िक जब ब□चा अपने पयाlवरण से अित□। या □ ं करते हए अपने अनभव" का अथl समझ लेता ह ै या एक िवशेष अथl को गढ़ लेता ह ै तब हम उसे सीखना c ु कह सकते ह।□ साधारण अथl म; सीखना एक अथl िन□पण क: □□□या (Meaning Making Process) ह,ै जो िक भाषा क: □□□या से अलग नहz ह ै (Halliday, 1993)। हले ीडे के अनसार जो भाषा क: ु सारो2पि□(Ontogenesis) क: □□□या ह ै वही समान □□□या सीखन े क: भी ह।ै जब कोई ब□चा भाषा सीखता ह ै तो सीखने क: जड़ या िबनयाद को सीखता ह(ै Learning to Learn)। िव□□लय म; िशSक ु और िव□□□थाlय" के मVय सवाद के माVयम से िशS ा क: □□□या भाषा के आदान □दान(िशSण) क: ं □□□या हो जाती ह ै ह।ै भाषा का □योग एक ऐसी □□□या ह ै िजससे हमारे अनभव □□न म; प/रवितlत होते ु ह।□ अतः हम भाषा और अिधगम को अलग-अलग करते हए नहz समझ सकते ह।□ दसरी ओर हम जानते c ू ह ै िक अिधगम और िशSण दोनो एक □□□या के दो पहल ह।ै अतः अिधगम और िशSण; िशSण और ू उ□राख□ड म िव□□व□□लय 24 ु CPS -1 भाषा एक दसरे से स$िबधत हो जाते ह।□ िव□□लयी सदभl म; अिधगम का आधार िशSण होता ह ैऔर ं ं ू िशSण का आधार भाषा। जब हम िकसी भी िवषय को पढ़ाते ह □ तब हम उसम; □या पढ़ाते ह?□ उदाहरण हते िव□□न म; बल, ु ऊजाl आिद और िवाण¾य म; कराधान, लेखा आिद। ये बल, ऊजाl, कराधान, लेखा, आिद सभी शEद िवशेष ही ह।□ जब कोई ब□चा िकसी िवषय के सदभ l िवशेष म; □य तकनीक: शEद" का अथl समझने ु ं लगता ह,ै तब वह उस िवषय को समझने लगता ह।ै हमेशा से अमतl स□2यय" (Concepts) और िवशेष ू ं अवधारणाओ को X2पि□शा□□य (Etymological) आधार पर िवEेिषत और □प□ करने क: परपरा ु ं ं रही ह,ै जोिक भाषा शा□ का एक अग ही ह।ै जब भी कोई िशSक भाषाशा□□य तकनीक" का □योग ं करते हए िशSण करता ह ै तब उसका िशSण अिधक साथlक और □भावी होता ह।ै हम अ□सर सनते ह ै c ु िक अमख िशSक/िव□□थ□ म; स$□2ययी समझ (Conceptual Understanding) अ□छी ह ै या इसका ु अभाव ह।ै इस समझ का आधार स$□2यय" का X2पि□शा□□य िवEेषण करने का गण होता ह।ै हम दखे ु ु सकते ह □ िक भाषा इस □कार एक िशSण क: तकनीक भी बन कर उभरती ह।ै िशSण क: □□□या को जो प/रणाम ह,ै िजसे हम □□न कहते ह,□ वह कोई भी सचना/□□न नहz ू होता ह ै बि□क समाज िवशेष #ारा □वीकत वैधता □□□ □□न ही िव□□लय" म; ह□तात/रत िकया जाता ह।ै ृ ं और इसका माVयम िसफl और िसफl भाषा (िलिप) ही हो सकती ह।ै भाषा #ारा □□□ □□न क: पहचान क: जा सकता ह ै

और उसका पनः परीSण िकया जा सकता ह(ै Akinanaso, 1992)। अत म; एक बात और ु ं Vयान दने े वाली ह ै िक िशSण अिधगम □□□या □मख □प से एक स□□ना2मक(Cognitive) □□□या ह।ै ु ं ब□चा सीखता तभी ह ै जब वह स□□ना2मक □प से सि□य अिधगमकता। होता ह;ै अथा।त जब वह ं िचतन(Thinking) करता ह।ै हम जानते ह □ िक भाषा िचतन □□□या का आधार ही नहz बि□क उसका ं ं िह□सा भी होती ह।ै अतः भाषा के अभाव म; िचतन और िचतन के अभाव म; िशSण-अिधगम □□□या क: ं ं क□पना करना भी क□पना से परे ह।□ अतः हम कह सकते ह □ िक भाषा-म वातावरण म; या भाषा िवहीन ु वातावरण म; िशSण क: सभावना नहz ह।ै भाषा िशSण-अिधगम क: आव□यक शत। ह।ै इस िलए िशSण ं वि□ (Teaching Profession) को अपनाने वाले Xयि भाषा □वीण होने ज□री ह।ै भाषा-□वीणता के ृ स$□2यय क: चचा। हम इसी इकाई म; आगे कर;गे। अ&यास □(1. अिधगम से □या ता2पय। ह?ै 2. भाषा और अिधगम िकस □कार स$बिधत ह?ै ं 3. स$□2ययी समझ (Conceptual Understanding) का □या आधार ह?ै उ□राख□ड म िव□□व□□लय 25 ु CPS -1 2.4 □□□□ □□"□□□ S□ □□" □]k#□ # □!u □□□□ □□"□□□ #" b□ □□□e□□ (Proficiency in A Language/Languages as An Imperative for all Teachers) 2.4.1 भाषा □वीणता अभी तक आप भाषा के स□2य को अ□छी तरह से समझ ही चके ह"गे। यिद आप □वीणता शEद के अथ। ु ं को जानते ह □ तो आसानी से भाषा □वीणता के स□2यय और मह2व को समझ सकते ह।□ ं □वीणता से ता2पय। िकसी काय। को कशलता पवाक करने क: Sमता से ह।ै इस □कार हम भाषा ु ू □वीणता को िकसी Xयि के अ□दर िकसी भाषा को कशलता पवाक □योग करने क: Sमता कह सकते ह।□ ु ू अब बात यह आती ह ै िक भाषा को तो हम सभी □योग करते ह,□ जो पढ़े िलखे नहz ह □ वे लोग भी सािमाजक अित□। या के िलए भाषा का □योग करत; ही ह।□ िफर यह कशलतापवाक भाषा □योग से □या ु ू ं ता2पय। ह?ै इस □H का एक िनिहताथ। यह ह ै िक भाषा के □योग म; कछ कौशल (Skill) तो िनिहत ज□र ु ह,ै जो Xयि को सीखने पड़ते ह"गे। यिद आप िविभ□न राजनीित□", वक:ल", धािमाक उपदेशको के भाषण" व □वचन" पर Vयान द ; तो आप कशलतापवाक और अकशलतापवाक भाषा □योग के अतर को ु ू ु ू ं समझ सकते ह।□ िशSण-वि□ (Teaching Profession) भी एक ऐसा काय। ह ै िजसम; भाषा के कौशल" ृ को सीखना और अGयास करना अिनवाय। शत। होती ह।ै वे कौन से भाषा कौशल ह ै जो एक िशSक को अGयास के साथ सीखने चािहए? आप यि

Plagiarism detected: **0.05%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ id: **33**

द भाषा के अवयव" पर Vयान दग; े तो आसानी से उ□र □□□ कर स े ह ै िकसी भी भाषा म; चार मलभत कौशल होते ह □ िज

□ह ; भाषा के □योगकता। को सीखना होता है। यह ू ू चार" कौशल अतसा।$बिधत और अिधXयािपत भी ह।ै िसफ। अVययन सिवधा के िलए हम अतर करके ु ं ं ं समझने क: कोिशश कर रह े ह।ै i. सनना अथवा 5वण (Listening) ु ii. बोलना (Speaking) iii. पढ़ना (Reading) iv. िलखना (Writing) भाषा के सीखन े म; हम इ□ही चार मलभत कौशल" को अिजात करते ह।□ अजान क: िविधयाँ व □□िवधयाँ ू ू इस इकाई के िवषय S े□ म; नही आती ह,ै अतः भाषा अजान कै से करते ह ै इसक: चचा। नही कर;गे। इन चार □मख तथा मलभत कौशल" के अलावा सिहि2यक-स□िकतक कौशल भी होते ह।ै आगे बात यह आती ह ै ृ ु ू ू ं िक कोई भी सामा□य Xयि भाषा को सनना और बोलना जानता ही ह ै और यिद वह साSर भी ह ै तो ु पढ़ना और िलखना भी जानता ह,ै तो □या हम उसे भाषा □वीण नहz कह सकते ह?□ इस □H के उ□र के पहले हम जान ल; िक □वीणता के स□2यय म; दो त2व अिनवाय। □प से होते ह:□ ं i. श□ता (Clarity) और ु ii. □वाह (Fluency) उ□राख□ड म िव□□व□□लय 26 ु CPS -1 अतः जो Xयि िकसी भाषा का श□ता के साथ □वाहमय तरीके से □योग करता ह,ै तो उसे हम भाषा- ु □वीण कहते ह।□ भाषा □वीणता को हम भाषा □योग के िविभ□न आयाम" या चारो कौशल" के आधार पर परख सकते ह।□ यह चार भाषा कौशल □थम□□या तो सामा□य सी बात लगते ह □ परत इनम; कशलता □□□ ु ु ं करना एक लबी साधना का काय। ह।ै एक भाषा □वीण Xयि के िलए भाषा

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.notesinhindi.com/blog/स्पर्श व्यंजन क व… + 2 resources! id: **34**

को िविभ□न पS" का □□न ं होना □थम शत। होती ह ै और भाषा के य े पS भाषा के िविभ□न

कौशल" और उनके िवकास से अिभ□न □प से जड़े हए ह।ै इ□ह े भाषाश□ के उपिवषय" के □प म; जाते ह ै जो िक इस □कार ह;□ c ु ं i. Vविन िव□□न (Phonology) ii. शEद िव□□न (Morphology) iii. Xयाकरण/सरचना (Syntax) ं iv. अथा।िव□□न (Semantics) भाषा के इन पS" को सीखना ही भाषा सीखना होता ह।ै अब भाषा के इन पS" का □□न हमारे भाषा □योग को कै से □भािवत करता ह?ै इसको भी समझ लेते ह।ै इन पS" का □□न िकसी भाषा क: Vविन को ¢िमत हए िबना सनने, श□ व □प□ उ□चारण करने/बोलने, िलखे हए शEद" को पढ़ने और उनका अथ। समझने c c ु ु तथा □प□ता व श□तापवाक िलखन े क: कशलता □दान करता ह।□ अथा।त सभी कौशल" का िवकास ू ू ु करता ह।ै साथ ही भाषा के चार" कौशल" पर □वाहमयता का स□2यय भी लाग होता ह।ै □वाहमय ू ं बोलना, पढ़ना, और िलखना तो हम आसानी से समझते ह □ परत □भावपण। सनना थोड़ा अनोखा लगेगा। ु ू ु ं आपन े अनभव िकया होगा िक हम(सभी सामा□य Xयि) िकसी भी व Xय को सि□यता के साथ ु Vयानपवाक अथ। समझते हए लबे समय तक नहz सन सकते ह।□ बशत° िक हमारी उस िवषय म; िवशेष □□च c ू ु ं हो या हम िविश□ व कशल 5ोता हो। कशल 5ोता वह होता ह ै जो अपन े स□□ना2मक □□□याओ पर ु ु ं ं िनय□ण □थािपत कर लेता ह।ै अथा।त कशल 5ोता उ□च-स□□ना2मक(Metacognitive) रणनीितय" साथ ु ं ं सनता ह।ै यह कौशल सनन े के

अGयास से िवकिसत हो पाता ह।ै □थम भाषा □□न तो अचेतन अव□था म ; ृ ृ भी होता रहता ह ै लेिकन यिद आप ि#तीय भाषा को उदाहरण के □प म; लेते ह □ तो आप समझ सकते ह □ िक ि#तीय भाषा अJजे ी(उदाहरणाथ।) के भाषण", Xया□यान", गीत" को समझन े के िलए हम; सनन े म; भी ृ ं कशलता □□□ करनी होती ह।ै समझते हए या अथ।सिहत शEद" को सनने के िलए भाषा के 5वण कौशल c ृ ृ म; भी श□ता और □वाह क: आव□यकता होती ह।ै ृ 2.4.2 िश6क के िलए भाषा □वीण/िनपण होना |यf आव}यक है? ृ भाषा सचना, त□य" और सामान अथ□ म; □□न क: वाहक होती ह।ै यिद आप िशSक-िव□ से सबिधत ृ ू ं ं काय□ पर थोड़ा सा भी Vयान दग; े तो आप □वय ही समझ जाएगे िक भाषा-िनपणता एक िशSक होने के ृ ं ं िलए अिनवाय। शत। ह।ै हम इस िवषय पर िबदवार चचा। कर;गे। ं ृ 1. जो □□न एक िशSक □□□ करता ह ै वह भाषा के माVयम से ही □□□ करता ह ै और भाषा के माVयम से ही अपने िव□□□थाय" को सौप दते ◌ा ह।ै यिद आप □□न को सामा□य अथ। से अलग उ□राख□ड म िव□□व□□लय 27 ृ CPS -1 रचना2मकतावादी(Constructivist) सदभ। म; ही समझना चाहते ह □ तब भी भाषा के िबना □□न ं सभव नहz ह।ै □य"िक भाषा हमारी िचतन □□□या क: िह□सा होती ह।ै हम एक भाषाई समदाय ृ ं ं के सद□य होने के नाते एक िवशेष □कार से सोच रखने लगते ह(□ Borodotsky, 2001)। अतः यह कहना □2येक तरह से वैध ही होगा िक एक िशSक िशSण से पव। जो □□न और कौशल ू अिज।त करता ह ै वह भाषा के माVयम से ही करता ह ै और जो □□न वह अगली पीढ़ी म; स□□□षत ं करता ह ै वह भी भाषा के माVयम से ही करता ह।ै 2. यिद आप कS◌ाकS स□□षण के स□2य को समझ रह े ह □ तो आपको यह समझन े म; किठनाई नहz ं ं होगी िक भाषा ही स□□षण का म□य माVयम होती ह।ै भाषा के िबना स□□षण पानी के िबना नाव ृ ं ं चलान े जैसा ही होगा। स□□षण (Communication) क: □□□या म; भाषा एक अिनवाय। त2व ह।ै ं यहाँ साके ितक भाषा को भी शािमल करते हए कह सकते ह □ िक भाषा नहz स□□षण नहz (No c ं ं language, No Communication)। स□□षण क: सामा□य □□□या म; कछ बाधक त2व होते भी ह।□ इन बाधक त2व" म; एक बड़ा वग। ृ ं भाषायी बाधक त2व" का होता ह।ै कS◌ाकS म; □भावी और प□के (insured) स□□षण के िलए ं िशSक" म; शैिSक-भाषािव□□न का □□न होना परम आव□यक हो जाता ह।ै िवषय कोई भी हो पर भाषा के िबना सवाद □थािपत करना और उसको िनयि□त और िनिद॰ शत करना सभव नहz ह।ै ं ं ं ं अतः सभी िशSक" को अिनवाय।□प से भाषा िनपण होना चािहए ह।ै ृ 3. भाषा क: □कित क: अ□छी समझ होने से िशSक अपन े व Xय" और Xया□यान" को ृ कशलतापव।क सरिचत कर सकते ह।□ वह अपने □H" को इस □कार से सरिचत कर सकते ह □ िक ृ ू ं ं िव□□□थाय" का मि□तqक-उ#ले न (Brain-Storming) स$भव हो सके । 4. भाषा िनपण िशSक भाषा िवषय नहz भी पढ़ाते हो तब भी अपने सामा□य Xयवहार से िव□□□थाय" ृ म; भाषा □□न का सचार करते रहते ह।□ अथा।त भाषा का ि□या2मक □□न भिमका-□□तमान (Role ू ं Modelling) प□□त से चलता रहता ह।ै 5. भाषा िनपण िशSक ब□च" के उ□र" के पण। न होन े पर भी उनको समझ लेते ह,□ ब□च" के उ□र" ृ ू क: पित। करके उ□ह ; □□2सािहत कर सकत े ह।□ इस पित। करने के उदाहरण से आप सहमत नहz भी ू ू हो सकते ह।□ लेिकन यिद आप □मरण कर सके तो आपके बोलने और िलखने म; आपक: माता, □थम िशिSका/िशSक और घर म; बड़े लोग" #◌ारा शEद/Vविन/ अSर पित। और सशोधन का ू ं िवशेष योगदान रहा ह।ै िशSक" क" भz ब□च" के अपण। वा□य" को □वीकार करते हए पण। करना c ू ू होता ह।ै 6. भाषा िनपण िशSक ब□च" क: बात" क: अ□छी समझ रखते ह।□ िजससे उ□ह ; ब□च" क: समझ ृ और पव।-□◌ान का पण।-□◌ान होता ह।ै िशSक ब□च" के मVय

Plagiarism detected: **0.09%** https://www.learncbse.in/class-8-hindi-chapter-9… + 2 resources! id: **35**

होन े वाले सवाद के □□□प को ू ू ं भलीभाित समझते ह।ै और इन सब बात" के िवĖेषण से वे िशSण क: िदशा पहचानने और ं िनधा।रत करन े म; िनपण हो जाते ह।□ इस □कार भाषा-िनपणता िशSण-िनपणता क: आधार ही ृ ृ ृ नही अिपत आव□यक शत। हो जाती ह

।ै ृ उ□राख□ड म िव□□व□□लय 28 ृ CPS -1 7. भाषा िनपण िशSक ब□च" म ; भाषा-िवकास के चरण" को अ□छे से समझते ह □और तदन□प ृ ृ िवकास क: □□□या को पोिषत और सविधा।त करते ह।□ वे ब□च" क: भाषायी गलितय" को ं अवसरनकल सभालते, िनयि□त करते और सधारते ह।ै भाषा िनपण िशSक ब□च" के जीवन म; ृ ू ृ ृ ं ं □थम-भाषा और उनक: घर क: भाषा के मह2व को समझते हए उसको ख2म नहz करते ह,□ बि□क c उसका ब□च" म; □□न के सवधान हते □योग करते ह।□ वे अपनी भाषा या िव□□लयी भाषा ब□च" ृ ं पर थोपते नहz ह।ै अथा।त □कल क: भाषा(अकािदमक भाषा) को गह भाषा क: क:मत पर नहz ृ ू िसखाते ह।□ फलतः शैिSक भाषाशा□ का □□नी िशSक सभी वग। और स□कितय" के ब□च" का ृ ं िवकास करन े म; सSम होता ह।ै ऐसे िशSक बहभाषायी कS◌ा म; भाषायी अ□पस□यक ब□च" c ं का उिचत Vयान रख पाते ह।□ 8. िव□□लय पव। ब□च" म; अलग-अलग भाषाओ का िविभ□न □तर पर िवकास होता ह।ै हो सकता ू ं ह ै िक अपनी मातभाषा म; ब□चा बहत उ2क□ □गित िकया हो पर देखा गया ह ै िक भाषाशा□ c ृ ृ और भाषा-िवकास के उिचत □□न के अभाव म; िशSक उस भाषा िवकास को नकार दते े ह।□ दखे ◌ा गया ह ै िक अJ;जी माVयम िव□□लय" म; ब□चे #◌ारा िहदी या अपनी मातभाषा के □योग पर ृ ं अथा।द□ड भी िलया जाता ह।ै शैिSक भाषािव□□न का स2य □□नी िशSक इस तरह के द□ड िनधा।रण तो दर बि□क अपनी उपि□थित म; इस तरह कई िनयम □वीकार नही कर सकता ह।ै ू 9. □□ढ़ □तर के Xयि य" के िलए तय मानक" का □योग करते हए ब□च" क: भाषा □गित का c म□याकन खतरनाक हो सकता ह।ै यह मानक ब□चे के अदर हीन भावना उ2प□न करते हए ब□चे c ू ं ं को हमेशा हमेशा के िलए कS◌ा म; चप रहन े वाला बना सकता ह।ै एक भाषा िनपण ृ ृ िशिSका/िशSक एक अ□छे म□याकनकता। भी सािबत होते ह,□ □य"िक उ□ह े भाषा क: □कित ृ ू ं और िवकास के चरण" का सही □□न होता ह।ै िकसी भी िवषय का िशSक हो उसको अपने िवषय के िशSण

और म□याकन हते भाषा के ृ ु ं मलभत कौशल" का □योग करना और छा□" से करवाना पड़ता ह।ै िशSक ब□च" #ारा िलखे ृ ू उ□र" का भाषाशा□□य िवEेषण करते हए उसके सही होने या सही के िनकट होने का िनणIय कर c सकने म; सSम होते ह।□ 10. िशSक" को समाज के िशिSत सद□य होन े के नाते उस समाज क: भाषा क: □कित, Xयाकरण, ृ शEद सरचना आिद क: जानकारी होना अिनवाय। होता ह।ै वे अपने समदाय क: भाषा को ु ं सिवधाIत करते रहते ह।ै भाषा का काय। □या ह?ै और यह अपना कायI कै से करती ह?ै इसक: ं जानकारी होने से वे सािमाजक अित□I या को एक उिचत िदशा □दान कर सकते ह।ै साथ ही ं िशSक □वय अ□छे पाठक और लेखक भी हो सकते ह।□ ं 11. आप जानते ही ह ै िक भाषा एक स□कितक त2व और समाजीकरण क: □□□या क: □मख आधार ृ ु ं और घटक होती ह।ै जब ब□चा 5 से 6 वषI क: आय म; िव□□लय आता ह ै तब उसक: मातभाषा ृ ु के माVयम से सामाजीकरण क: □□□या काफ: हद तक हो चक: होती ह।ै यिद इस समय हम गह- ृ ु भाषा को िव□□लय प/रसर म; □□तबिधत कर दते े ह □ और िव□□लयी भाषा को अिनवायI कर दते े ह □ ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 29 ु CPS -1 (जैसा िक तथाकिथत अJेजी माVयम क: िव□□लय" म; हो रहा ह)ै , तो हम अबतक हए c ं सामाजीकरण के □□तफल को बबाIद कर दते े ह।□ भाषा के सािमाजक सदभI को समझन े वाला ं भाषा िनपण िशSक समाजीकरण क: □□□या के मह2व को समझता ह।ै वह □2येक ब□चे क: ु मातभाषा तो नहz सीख सकता ह ै पर कS◌ाकS म; एक उदारता पणI माहौल बनाकर ब□च" क: ृ ू िव□□लयी भाषा सीखन े तक उनक: पवI अिजIत Sमताओ को Sय होन े से बचा सकता ह।ै ू ं िव□□लय और घर क: भाषा अलग अलग होने पर भी िव□□लय को सािमाजक िवकास क: □□□ से िहनकारक नहz होना चािहए। यह तभी सभव ह ै जब िशSक भाषा और स□कित के स$ब□ध ृ ं ं क: समझ रखता हो और बालक के िवकास म; इसके □भाव को अदाजा लगान े म; सSम हो। ं उपरो िवEेषण और चचाI से यह नहz समझना चािहए िक सभी िशSक भाषा-िशSक का □□शSण □□□ कर; , या सभी िशSक भाषा िशSण का काय। ही कर;। बि□क इसका ता2पयI यह ह ै िक िशSक भाषा □योग के □□त सवेदनशील हो तथा भाषा क: सरचना और काय। क: समझ रखते हो। िकसी Xयि के जीवन म;, ं ं िकसी प/रवार म;, िकसी समाज म; भाषा/मातभाषा/सामदियक भाषा का □या मह2व होता ह ै इसक: समझ ृ ु रखते हो। िशSक को शैिSक-भािषव□□न क: जानकारी होना आव□यक ह ै □य"िक वह एक स□□षक ह,ै ं िशSक ह,ै म□याकन करता ह,ै □य"िक वह समाज का एक िशिSत Xयि है, □य"िक वह समाजीकरण ू ं क: □□□या का □□ितिनिध ह ै (Fillmore and snow, 2000). 2.5 □□□□ □]k□ # □□w□□ # x' □ (Language as a Medium of m Teaching) जैसा िक पवI म; भी चचाI क: जा चक: ह ै िक भाषा का S◌े□ अ2यिधक वहद ह।ै इसका S◌े□ िव□तार Xयि ृ ू ु के सम□त कायI-Xयापार और िवषय" तक ह।ै यही कारण ह ै क: भाषा के िवषय म; िव□□न, मानिवक:, सािमाजक िवषय", तकनीक: िवषय" आिद सभी S◌े□" म; िकसी न िकसी □प म; अVययन िकया जाता ह।ै □□स□ समाज-भाषाशा□□(Socio-Linguist) हलै ीडे महोदय ने भाषा क: तीन प/र□□0य बताए ह।□ ं 1. भाषा सीखना (एक िवषय के □प म;): िह□दी, अJजे ी, स□कत, तिमल आिद भाषाओ का ृ ं ं ं अVययन करना। 2. भाषा #ारा सीखना (माVयम के □प म;): िहदी माVयम से िव□□न, गिणत, इितहास िवषय" का ं अVययन करना। 3. ततीय भाषा के िवषय म; सीखना (िकसी भाषा के िवषय म; भाषाशा□□य िववेचना): अJेजी ृ ं भाषा क: □कित, Vविनशा□, शEदशा□, सरचना आिद क: िववेचना2मक और िवEेषणा2मक ृ ं अVययन करना। यहा हम ि#तीय सदभ।

Quotes detected: **0.01%** id: **36**

‘भाषा िशS◌ा के माVयम के □प म’

; का अVययन कर;गे। जब हम भाषा एक ं ं माVयम क: चचा। करते ह □ तो इसका सीधा सबध उस भाषा से होता ह ै जो िव□□लय म; पाठयचयाI के ् ं ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 30 ु CPS -1 िनqपादन हते □योग क: जाती ह।ै भाषा का यह काय। अपने आप म; गहन िनिहताथI रखता ह।□ भाषा का ु स$□□षण के माVयम के □प म; कायI करना एक ऐसी िवशेषता ह ै जो हम; मानव सGयता क: जड़ क: ओर सोचन े के िलए बाVय करती ह।ै हम; लगता ह ै िक भाषा म; Xयि के िवचार, सचना, □□न आिद को दसरे ू ू Xयि तक पहचँ ान े क: Sमता ने ही समाज क: प□भिम रखी होगी। □य"िक कोई भी समाज □थायी िनयम" c ृ ू और परपराओ से सगिठत

Plagiarism detected: **0.06%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala id: **37**

होता ह,ै जो िक एक □प□ स$□□षण के माVयम के अभाव म; स$भव नही हो ं ं ं सकता ह।ै िव□□लय क: सक□पना भी यहz से उ¿त होती हई □तीत होती ह

।ै जब एक पीढ़ी अपनी सिचत c ं ं ू □□न व उपलिEधया दसरी पीढ़ी को ह□तात/रत करने का □यास करती ह ै और भाषा जैसे उपकरण के #ारा ं ं ू ह□तात/रत करने म; सSम भी होती ह,ै तब िव□□लय जैसी स□था का उदय होता ह।ै □□स□ □सी ं ं मनोवै□□□नक वायगो2□क: (Vygotsky, 1962) ने भी इसी सदभ। म; भाषा के दो काय। बताये ह।□ □थम ं भाषा एक मनोवै□□□नक उपकरण ह ै जो हमारी िचतन और तकI क: □□□या म; सहायता करती ह ै और ं दसरा भाषा एक सा□कितक उपकरण के □प म; काय। करती ह।ै वायगो2□क: के दोनो ही सदभ। भाषा को ृ ं ं ू िशSण क: □□□या से जोड़ते ह।ै □थम □□न रचना □□□या (िचतन) और दसरा सिरचत □□न(स□कित) क: ृ ं ं ं ू ओर इसारा करता ह।ै उ□ह"न े सािमहक □□न को ही स□कित कहा ह।ै अतः सािमहक □□न या स□कित के ृ ृ ू ू ं ं आदान-□दान-□सार हते भाषा एक □मख माVयम ह।ै इस सा□कितक □सार क: □□□या के िलए जो एक ृ ु ु ं □थान िनियत हो जाता ह ै उसे हम िव□□लय कहते ह।ै जब

इ□ही स□कितक उपलिEधय" को िलिखत भाषा ृ ं के माVयम से □थािय2व और वै□ता □दान करके एक सरिचत □प □दान कर िदया जाता ह ै तब हम इसे ं पाठयचया। कह सकते ह □ और इस पाठयचया। के िनqपादन को िशSण कहा जाता ह ै जो िकसी न िकसी ृ ृ भाषा के माVयम से ही सभव ह।ै यहाँ हम देख सकते ह ै क: िशSण ही नही अिपत स$पण। िशS◌ा Xयव□था ु ू ं के उ¿व और सचालन म; भाषा क: म□य भिमका ह।ै ु ू ं जब हम भाषा एक िशSण माVयम क: बात करते ह ै तब िकसी एक भाषा िवशेष क: बात नहz कह सकते ह।ै िशSण का माVयम एकभाषी, ि#भाषी और बहभाषी भी हो सकता ह।ै यह कोई मानक:कत c ृ भाषा जैसे िक िहदी अJेजी आिद हो सकती ह ै और कोई उप-भाषा या बोली भी हो सकती ह ै जैसे िक ं ं गढ़वाली, कमाऊनी आिद। ु □□यः सभी िव□□लय" म; िशSण के एक □मख भाषा होती ह ै जो िक एक िव□□लय □बध सिमित या ु ं सरकार #◌ारा िनधा।/रत क: जाती ह।ै शासक:य □□वधान" के अलावा िशSक और ब□च" क: भाषा भी िशSण अिधगम के िनधा।रण का काय। करती ह।ै उदाहरण के िलए सरकार ने िहदी भाषा को िशSण ं माVयम के □प म; □वीकार िकया ह ै और िशSक व छा□ कछ िव□□लय" म; गढ़वाली य कमाऊनी ु ु उपभाषाओ म; सवाद करत; ह।ै इस उदाहरण क" नकारा2मक □प से नही लेना चािहए। िशSण-अिधगम ं ं क: सगमता हते िशSण के माVयम म; प/रवत।न िकया जा सकता ह।ै इसका कारण आप जानते ही ह ै िक ु ु िशSण का ल0य ब□च" के Xयवहार प/रवत।न(अिधगम) करना और उनम; सझ िविकसित करना होता ह।ै ू साथ ही आप यह भी जानते ही ह ै िक कोई भी Xयि अपनी □थम भाषा म; शीÉता से समझता ह।ै अतएव □भावशाली और भाषा □वीण िशSक िकसी एक भाषा पर आि5त नहz रहता ह।□ आज का समय उ□राख□ड म िव□□व□□लय 31 ु CPS -1 बहआयामी, बहभाषायी व बहतकनीक: सलभ ह।ै हम; भाषा एक िवषय से अलग भाषा एक माVयम के c c c ु स□2यय को भी अ□छे से समझना होगा। हम जान रह े ह □□क भाषा सभी िवषय" क: आधारिशला ह ै और ं कहz ना कहz िकसी न िकसी □2येक िवषय का िशSण भाषा िशSण ही होता ह।ै अतः भाषा एक माVयम के □प म; □2यके िवषय के □□न म; क; ®◌ीय भिमका अदा करती ह।ै ब□चे िजस भाषा को समझते हो, समझने ू के साथ उस म; िचतन करन े क: Sमता रखते हो, वही भाषा एक उिचत िशSण माVयम हो सकती ह।ै ं िशSण का माVयम होना भाषा के बहआयामी काय□ का एक पS मा□ ह।ै भाषा िसफ। स□□षण का c ं माVयम नहz ह ै लिकन स□□षण भाषा का एक □मख काय। ह।ै हम □प□, □2यS व मत। काय। कह सकते ह।□ ु ू ं इसके अलावा भाषा का िचतन □□□या का िह□सा होना, स□कित का िह□सा होना, समाजीकरण क: ृ ं ं □□□या का माVयम होना आिद सभी अमत। व अ□2यS काय। कह े जा सकते ह।□ आप जब अपनी कS◌ा ू (Classroom) म; ब□च" के सामने हो तब ब□च" से एक □H कर सकते ह ै िक आप कहाँ ह?ै उ□र होगा िक कS◌ा म;/□लास म;। तब आप ब□च" से पिछए िक □लास कहाँ ह?ै यहाँ उपि□थित और □□□गोचर ू व□तओ म; आप िकसे कS◌ा कहते ह?ै अनेक उ□र ब□च" क: तरफ से आपको □□□ हो सकते ह।ै जैसे कोई ु ं कमरे को कS◌ा कहगे ◌ा, कमरे म; मेज, कस□, □यामपट आिद क: उपि□थित को कS◌ा कहगे ◌ा। लेकिन यह ु सब व□तए िकसी अ□य कS म; भी हो सकती ह ै जो िकसी वाता। या िकसी स$मेलन या प/रचचा। के िलए ु ं □योग िकया जाता हो। कS◌ा-कS(Classroom) के स□2यय को िनधा।/रत करन े वाला कारक िशSक ं और िव□□□था।य" के बीच म; अति□। या और सवाद होता ह।ै इस सवाद का आधार भाषा ही होती ह।ै इस ं ं ं □कार हम कह सकते ह □ भाषा िसफ। िशSण का माVयम नहz ह ै बि□क िशSण का पया।य व सारत2व ह ै जो कS◌ा-कS के स□2य को सही □प से प/रभािषत करती ह।ै भाषा के िबना िशSण क: □□□या क: क□पना ं नहz क: जा सकती ह।ै आप जरा सोिचए िक आप एक िशSक ह □ और आप भाषा का □योग िकए िबना िशSण काय। कर रह े ह,□ शायद क□पनातीत होगा।अत म; यही कह सकते ह ै िक िशSक #◌ारा भाषा का ं □योग ही िशSण ह।ै अ&यास □(4. भाषा □वीणता म; कौन से दो त2व शािमल ह?ै 5. भाषा के िक□ही दो पS" के नाम िलिखए। 6. िशSक को शैिSक-भािषिव□□न क: जानकारी □य" होनी चािहए? 7. हलै ◌ीडे महोदय ने भाषा के िकतने प/र□□0य बताय; ह?ै 2.6]_`□□!" 1. अतस 1बिधत (Interrelated)- एक दसरे से स$बिधत या जड़ा हआ होना c ु ं ं ं ु 2. अिध□यािपत (Overlapping) - एक दसरे पर अ□छािदत होना। ू उ□राख□ड म िव□□व□□लय 32 ु CPS -1 3. बहभािषकता (Multilingualism) -दो य दो से अिधक भाषाओ का अतसा।$बध और k ं ं ं अति□। या ं 4. बहभाषी (Polyglot or Multiglot) - एक से अिधक भाषाओ का □□योग करन े वाला k ं 5. स□□षण (Communication) - सचना, सदेश या त□य" का आदान □दान ू ं ं 6. शैि6क-भािषिवn◌ान (Educational Linguistics) - भाषा क: िशS◌ा म; भिमका का ू अVययन करने वाले िवषय 7. □य□पि□शा ◌ीय (Etymological) - शEद" क: उ2पि□ और अथ। िनqपि□ से स$बिधत ु ं िवषय 8. सn◌ाना□मक (Cognitive) - □□न और समझ □□□ करने क: मानिसक □□□या से स$बिधत ं ं 9. मिwत□क-उq◌ेलन (Brain-Storming) - एक िशSण □□विध िजससे ब□च" म; सम□या समाधान क: Sमता िविकसित होती ह।ै 10. भिमका-□□तमान (Role Modelling) - एक िशSण अिधगम क: िविध िजसम; ब□च े ू अनकरण से सीखते ह।ै ु 11. घटक (Factor) - एक वहद त2व या Xयव□था का िह□सा होना ृ 2.7 bc□□□ □d□ # M□ 1. अिधगम/सीखना एक अथ। िन□पण क: □□□या 2. जो भाषा क: सारो2पि□)Ontogenesis) क: □□□या ह ै वही समान □□□या सीखन े क: भी होती ह।ै 3. स$□2ययी समझ का आधार स$□2यय" का Xय2पि□शा□□य िवÉ◌ेषण करने का गण होता ह।ै ु ु 4. भाषा □वीणता के दो त2व: a. श□ता ु b. □वाह 5. भाषा के पS: a. Vविन िव□□न (Phonology) b. शEद िव□□न (Morphology) 6. िशSक को शैिSक-भािषव□□न क: जानकारी होनी चािहए □य"िक वह एक स□□षक ह,ै िशSक ं ह,ै म□याकन करता ह,ै □य"िक वह समाज का एक िशिSत Xयि ह,ै □य"िक वह समाजीकरण ू ं क: □□□या का □□तिनिध ह।ै 7. हलै ◌ीडे महोदय ने भाषा के तीन प/र□□0य बताय; ह।ै उ□राख□ड म िव□□व□□लय 33 ु CPS -1 2.8 □N`□ efNg □h" □ '□ $" '□i□□□f" □ 1. Akkinaso, f. N. (1992). Schooling,

language and Knowledge in literate and non-literate societies. Comparative Studies in Society and History, 34, 1, 68-109. 2. Borodotsky, L. (

Plagiarism detected: **0.03%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… id: **38**

2001). Does Language Shape Thought?: Mandarin and English Speakers' Conceptions of Time. Cognitive Psychology 43, 1

–22 3.

Plagiarism detected: **0.02%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… + 7 resources! id: **39**

Brown, R. (1973). A first language. Cambridge, MA: Harvard University Press.

4. Dua, H. R. (

Plagiarism detected: **0.02%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… id: **40**

2008). Ecology of multilingualism: language, culture and society. Mysore: yashoda

publication. 5. Dwivedi, K. D. (2010) Bhasha-Vigyan evam Bhasha-Shastra (12th ed. Hindi). Varanasi: Vishwavidyalay Prakashan. 6.

Plagiarism detected: **0.03%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… id: **41**

Fillmore, L. W. and Snow, C. E. (2000). What teacher need to know about language. Washington DC:

Centre for Applied Linguistics. st 7.

Plagiarism detected: **0.02%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… + 5 resources! id: **42**

Garcia, O. (2009). Bilingual education in 21 century: global perspective. West Sussex(UK

): Wiley-Blackwell. 8.

Plagiarism detected: **0.13%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… + 2 resources! id: **43**

Halliday, M. A. K.(1975). Halliday's Functions of Language. Retrieved from www.communityinclusion.org/elm/Professionals/.../Halliday- handout.d 9. Halliday, M.A. K. (1993). Towards a Language-Based Theory of Learning. Linguistics and Education 5, 93- 116. Retrieved from lchc.ucsd.edu/mca/Paper/JuneJuly05/HallidayLang Based.pdf. 10. Halliday, M.A.K. (2004). Three Aspects of Children's Language Development: Learning Language, Learning through Language, Learning about Language. In J.J. Webster (ed.), The Language of Early Childhood: M.A.K. Halliday, pp 308-326,

Ch. 14. New York: Continuum. 11.

Plagiarism detected: **0.03%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… id: **44**

Kristeva, J. (1989). Language the Unknown: An initiation into linguistics. New York: Columbia University Press.

12. Kumaravadivelu, B. (2006). Understanding language teaching: from method to post method. New York: Routledge. 13. Larson, R. K.,

Plagiarism detected: **0.02%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… + 3 resources! id: **45**

Deprez, V., Yamakido, H. (2010). The evolution of human language: Biolinguistic

perspective. Delhi: Cambridge University press. उ□राख□ड म िव□□व□□लय 34 ़ CPS -1 14. Linguistics Society of America (n.d.). http://www.linguisticsociety.org/content/how-many-languages-are-there- world. 15. NCERT (2005). National Curriculum Framework, 2005. 16. Richards, J. C., & Renandya, W. A. (2002). Methodology in language teaching: anthropology of current practice. New Delhi: Cambridge University Press. th 17. Sharma, R. (2010). Bhasha aur samaaj(7 ed. Hindi). New Delhi: Rajkamal Publication. 18. Williams, R. (1977). Marxism and Literature.

Plagiarism detected: **0.02%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… id: **46**

Oxford: Oxford University Press. rd 19. Yule, G. (2006). The study of language

(3 ed.). New Delhi: Cambridge University Press. 2.9 □ □O□L□# □d N 1. भाषा और िशS◌ा के स$बध पर िसS□ िटÊपणी िलिखए। ◌ं ◌ं 2. िशSण म; भाषा क: भिमका कz िववेचना िकिजए। ◌ू 3. भाषा □वीणता से आप □या समझते ह ◌ै और िशSक" के िलए भाषा □वीण होना □य" आव□यक ह?◌ै 4.

Quotes detected: **0.01%** id: **47**

'भाषा नहz स□□षण नहz'

(No language, No Communication)। इस व Xय पर अपनी ं सहमित या असहमित तक। सिहत □□तत कर;। ु उ□राख□ड म िव□□व□□लय 35 ु CPS -1 □□□□ 3 - ह□□ □□□□ Multilingualism □ 3.1 □□तावना 3.2 उ□□□ य 3.3 बहभािषकता c 3.4 कS◌ा- कS म; भाषायी िविभ□नता 3.5 भाषाई पा/रि□थितक: 3.6 बहभािषकता एक ससाधन के □प म; c ं 3.7 िव□□□थाय" क: भाषाई प□िभम ृ ू 3.8 साराश ं 3.9 शEदावली 3.10 अGयास □H" के उ□र 3.11 सदभ। Jथ सची व उपयोगी पाठयसामJी ◌् ू ं ं 3.12 िनबधा2मक □H ं 3.1 □□□□□ □ िपछली इकाइय" के अVययन से आप यह समझ सकते ह िक भाषा क: अवधारणा सरल के साथ-साथ अ2यिधक जिटल भी ह।ै □य"िक भाषा के सदभ । म; पण।□पेण से कहना अ2यत ही किठन काय । ह।ै अलग- ू ं ं अलग िवषय" के □□□कोण से भाषा को कई तरह से प/रभािषत िकया जा सकता ह।ै िपछली इकाई म; हमने भाषा को म□य □प से एक मौिखक और िलिखत □तीक" क: Xयव□था के □प म; समझा था। यह ु भाषा क: एक □□य व □थल अवधारणा ह।ै यिद हम थोड़ा अदर क: परत" क: ओर झाकने का □यास करते ू ं ं ह □ तो और भी त□य समझ म; आने लगते ह।ै समाज-भािषक(Sociolinguistic) □□□कोण से भाषा िसफ। □तीक िच□ह" क: Xयव□था मा□ नहz होती ह ै वरन भाषा िकसी समाज के िवचार", मा□यताओ, िव□□स", ं □तीक", सवाद व सामािजक रीित /रवाज" क: वाहक भी मानी जाती ह।ै िकसी भाषा के शEद" और ं Xयाकरण के िनयम" को सीख लेने मा□ से हम उस भाषा म; कशलता □□□ नहz कर सकते ह,□ बि□क हम; ु उस भाषा के □योग के स□िकतक िनयम" को भी सीखना पड़ता ह।ै इसे भाषा का □योगशा□ ृ ं (pragmatics) कहते ह।ै यहा चचा। का िवषय pragmatics नहz बि□क भाषा क: अवधारणा म; ं समािहत जिटल सदभ । य अदर कz परते ह□, िजनका □□न होना एक िशSक होन े के नाते ज□री हो जाता ह।ै ं ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 36 ु CPS -1 भाषा के िवषय म; यिद यह कहा जाए िक िजतने च□मे उतने □प, तो यह अितशयोि नहz कहा जा सकता ह।ै भाषा के िवषय म; तलसीदास जी क: एक पि सटीक लगती ह ै

Quotes detected: **0.01%** id: **48**

"जाक□ रही भावना ु ं जैसी......."

। व□ति□थित के िवEेषण से ऐसा □तीत होता ह ै िक भाषा-नीित और भाषा-िशSण के िवषय ु म; सरकार", िशSक-िशS◌ा स□थान", िशSक", िशSण स□थाओ आिद क: भावना ठीक नहz रही ह।ै भारत ं ं ं ही नहz वरन िव□ के अनेक बहभाषायी दशे " क: ि□थित समान ही ह।ै हमारी राजनीितक Xयव□था का c एकभाषी होना या ि#भाषी होना एक मजबरी य कमजोरी कही जा सकती ह।ै िजससे िक एक या दो ू भाषाओ को ही □शासक:य भाषा का दजा। □ा□ हो सकता ह।ै जबिक समाज म; तो बहत सी भाषाए c ं ं □चिलत होती ह।□ हमन े िपछली इकाई म; पढ़ा ही ह ै िक सपण। िव□ म; लगभग 7000 भाषाए बोली जाती ू ं ं ह।□ हमारे दशे म; ही लगभग 1000 मातभाषाए और बोिलया □योग क: जाती ह।ै अतः बहभािषकता इस c ृ ं ं धरा क: एक सामा□य िवशेषता ह।ै हमारा देश तो बहभाषी देश" का एक िविश□ मानक उदाहरण ह,ै जहाँ c □2यके िशिSत Xयि (□□थिमक □तर पर भी) ि#भाषी य ि□भाषी होता ह।ै लेिकन इस सदभ । म; िशिSत ं होना कोई शत। नहz ह ै Xयवसाियक व रोजगार स$बधी कारण" से भी लोग बहभाषी हो जाते ह।ै आप c ं Vयान दग; े तो पाय;गे िक बहभािषकता के कारण अनेक ह।ै c ि#भािषकता या बहभािषकता कोई िशS◌ा के #◌ारा पोिषत त2व ही नहz ह ै । यह एक नैसिग।क c सामािजक लSण ह।ै कक (Cook, 2002) महोदय के अनसार

Quotes detected: **0.03%** id: **49**

"दो भाषाओ का होना या योग ु ु ं उतना ही सामा□य त□य है िजतना िक दो फेफड़□ का होना"

। उनके अनसार तो िसफ। एक भाषा का ु □योग एक दल।भ घटना ह।ै िफर भी हमारी अ□□नता ने इस नैसिग।क Xयव□था को काफ: नकसान पहचाया c ु ु ह।ै य□□प राजनीितक, □शासिनक, शैिSक नीितय" के कारण बहत सी भाषाए िवल□ होने क: कगार पर ह □ c ु ं तथािप बहभािषकता समाज म; िव□मान ह ै और ऐसा □तीत होता ह ै िक भिवqय म; भी रहगे ◌ी । बड़े-बड़े c शहर" म; कई भाषाओ के बोलन े वाले िविभ□न भाषा Sे□" से लोग आते ह,□ और एक बड़े शहर का िनमा।ण ं करते ह।□ अतः बड़े शहर" क: िशS◌ा Xयव□था िकसी एक भाषा पर िनभ।र नहz कर सकती ह।□ हम िशSक" को िव□□□थाय" क: □थम भाषा के □□त थोड़ा सवेदनशील होन े क: आव□यकता होती ह ै िजससे िक जो ं □थम भाषा म; उनका □□न ह ै उसको हम सही तरीके से िशS◌ा म; □य कर सक; । जब हम जानते ह ै िक ु समझ(Understanding) का सबसे उ□म माVयम □थम भाषा ही होती ह ै तब िव□□लय पर बहभािषकता c के साथ अनकलन क: अपS◌े ◌ा और अिधक बढ़ जाती ह।ै बहभािषकता िसफ। कई भाषा के बोलने वाल" c ु ू के समह का लSण नहz ह ै बि□क एक Xयि भी बहभाषी होता ह।ै यह कोई आज का त□य नहz बि□क c ू एक ऐितहािसक स2य ह।ै हम बहत सी भाषाए पण। □प से और आिशक □प से □योग करते ह।□ जैसा िक c ू ं ं उदाहरण के िलए (1) हम घर क: बोलचाल म; और भावनाओ को Xय करने म; अपनी मातभाषा का ृ ं □योग करते ह □ जैसे कमाऊनी, गढवाली, नेपाली, भोजपरी, बदले खडी आिद िविभ□न सदभ□ म; अलग- ु ु ु ं ं अलग हो सकती ह।□ (2) जबिक □शासिनक और वािणि¾यक ि□याकलाप" म; हम अपनी दसरी भाषा का ू □योग करते ह □ वह अलग अलग रा¾य" के लोग" के िलए अलग अलग होती ह:ै – िहदी भी हो सकती ह,ै ं बगाली भी हो सकती ह।ै (3) हमारा जो Xयवहार Sे□ ह ै वह िसफ। दो भाषाओ के आधार पर ही पण। नहz ू ं ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 37 ु CPS -1 हो रहा ह ैइसके अलावा भी हम अतरा।q°ीय Xयवहार" के िलए, िशS◌ा के िलए, शोध के Sे□ म; अJेजी ं ं का, जापानी का, चीनी भाषा का, ½◌ासीसी या जम।नी भाषा का □योग भी करते ह।□ यह तो रही तीन ं भाषाओ क: आव□यकता का एक उदाहरण लेिकन

य े तीन भाषाएँ हमारे जीवन म; भाषा क: आव□यकता ं को पण। नहz कर पा रही ह।□ (4) हम िव□ के सभी धम□ म; दखे सकते ह □ िक धिमाक सिह2य और ू स□िकतक सिह2य □□चीन शा□□य भाषाओ म; ही □□□ ह।ै बौ□ धम। के मानने वाल" के िलए पाली और ृ ं ं □□कत भाषाओ के □□न क: ज□रत होती ह;ै इसाई लोग ह·े , J◌ीक, लिटन भाषाओ पर आज भी िनभर। ृ ू ं ं करते ह;□ और िहद लोग अपने धिमाक और सा□िकतक ि□याकलाप" के िलए स□कत भाषा, तिमल भाषा ृ ृ ं ं ं ू अिाद पर िनभार करते ह।□ इस □कार हम दखे सकते ह □ िक हम िकसी न िकसी तरह से ि#भाषी ही नहz अिपत बहभाषी ही ह □ । c ु 3.2 □ □ इस इकाई के अVययन के पyात आप- 1. बहभािषकता के स$□2यय को समझ सक; गे; c 2. बहभािषकता के िव□तार व □िकत का िच□ण कर सक; गे; c ृ 3. बहभािषकता क: एक ससाधन के □प म; Xया□या कर सक; गे; c ं 4. कS◌ा व िव□□लय म; भाषाई िविभ□नता क: ि□थित को समझ सक; गे; 5. भाषाई पा/रि□थितक: के स$□2यय को समझते हए अपन े आस-पास उसका सरSण कर सक; गे; c ं 6. िव□□□थाय" क: भाषाई प□भिम को समझ सके ग;; ृ ू 7. िव□□□थाय" क: भाषाई प□भिम को Vयान म; रखते हए अपने िशSण क: योजना बना सके ग;। c ृ ू 3.3 □ह□□□□#□□ #" b□O□□□□ (Concept of Multilingualism) □ इकाई के □□रभ म; ही हमने भाषा के िजटल □व□प क: चचा। क: ह।ै □य"िक एक िजटलतम स$□2यय ं बहभािषकता को समझने के िलए भाषा के इस िजटल पS क: ओर Vयान आिकषत। करना ज□री था। c यहाँ िजटल का अथ। किठन य द□ह ही िसफ। नहz समझना ह।ै साधारण अथ□ म ; आप उलझा हआ भी c ु समझ सकते ह े पर यह याद रह े िक उलझा हआ हमेशा बेतरतीब ही नहz होता ह।ै बहभािषकता के ताने- c c बान े क: तलना एक बहरगी व बहततनमा (multicolored & multi- fabric) व□ से क: जा सकती ह।ै c c ु ु ु ं ं एक िमि5त रग" व िमि5त ततओ क: बारीक बनावट जैसे िजटल वह उलझी हई सी होती ह े वैसे ही c ं ं ु ं बहभािषकता का प/र□□य ह।ै बहभािषकता हमारे दशे का एक □□चीनतम यथाथ। ह।ै एक कहावत भी c c आपन े सनी ही होगी

Quotes detected: **0.02%** id: **50**

"कोस कोस पर बदले पानी और चार कोस पर बानी"

कहने का भाव यह ह े ु िक हमारे देश म; □2येक 1 कोस (लगभग 3 िकमी) पर पानी बदल जाता ह े और □2यके चार कोस पर उ□राख□ड म िव□□व□□लय 38 ु CPS -1 बानी या बोली बदल जाती ह े । बचपन म; म□ने यह कहावत जब सनी थी तब मेरा बाल-मन इस कहावत ु का मन ही मन िवरोध कर बैठा था। इसका कारण सीधा सा था िक मेरे गाव से मा□ एक िकलोमीटर क: ं दरी पर छोटे से गाव म; बोली जान े वाली बोली और मेरे गाव क: बोली म; काफ: अतर था। िशS◌ा ं ं ं ू Xयव□था #◌ारा मानक खड़ीबोली-िहदी को बढ़ावा देने के बावजद आज लगभग दो दशक" के बाद भी ू ं दोन" गाव क: बोली म; अतर दखे ◌ा जा सकता ह।ै इस उदाहरण का िनिहताथ। परानी कहावत को अ□वीकार ु ं ं करना नहz ह े अिपत बहभािषकता क: Xयापकता को सामने लाने क: एक कोिशश मा□ ह।ै हम िशSक" c ु को ऐसे बहभाषी समदाय क: सेवा

Plagiarism detected: **0.06%** https://sabsastaa.com/english-barakhadi/ id: **51**

करनी होती ह े और जब हम िव□□लय #◌ारा िनधा।/रत भाषा का ही c ु □योग करते ह □ तो कहz ना कहz भाषाई अ□पस□यक लोग" के □□त अ□याय हो ही जाता ह

।□ यह दोन" ं गाव", िजनका उदाहरण यहाँ िदया गया ह,ै के िलए आज भी एक ही िव□□लय ह े और उस समय भी इसी ं िव□□लय म; सभी ब□चे पढ़ने जाते थे। जब कभी वह ब□चे अपने गाव क: बोली म; जवाब दते े थे तो ं िशSक उनको डाटते भी थे और अ□य छा□ उनके िवशेष तरीके से बात करन े पर हसते भी थे जबिक ं ं शEद" का अतर नहz था िसफ। शEद-□व□प, और लहजे (Tone) का अतर था। एक ल$बे समय तक उस ं ं गाँव क: िशS◌ा का □तर सतोषजनक नहz रहा ह।ै िजसके अनके कारण" म; से भाषा-भदे , और भाषा के ं आधार पर भेद-भाव व पवा।Jह रह े ह।ै लेिकन आज हम सभी भाषाओ और बोिलय" के □□त सिहqण होने ू ु ं लगे ह।ै उ□राखड और उ□र □देश को खासतौर पर िहदी भाषी रा¾य

Plagiarism detected: **0.03%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ + 3 resources! id: **52**

माना जाता ह।ै िहदी भाषी रा¾य" म; ं ं ं भी िवश□ िहदी भाषी कहा जाता ह।ै यह

स2य अ□य रा¾य", िवशेष □प से दिSण भारतीय व उ□र पव□ ु ू ं रा¾य" के लोग", का स2य कहा जा सकता ह।ै बाहर से ऐसा ही िदखाई दते ◌ा ह।ै हम भी तो िमज़ो, नागा, ि□परी, मिणपरी अिाद Xयि य" म; ही अतर नहz कर पाते ह,ै तो भाषा तो बहत दर क: बात ह।ै लेिकन c ु ु ं ू उ□राखड के वासी होने के नाते आप यहाँ क: भाषा तथा भाषाई पा/रि□थितक: (Language Ecology) ं को अ□छे से समझ सकते ह।□ मोटे तौर पर कहा जा सकता ह े िक गढ़वाली और कमाऊनी को िमलाकर ु ं उ□राखड म; लगभग 15 भाषाए (Dialects) □योग क: जाती ह े (Dialects of Uttarakhand, n.d.)। ं ं जबिक □शासक:य भाषा का दजा। िहदी व स□कत को □□□ ह।ै यही ि□थित उ□र □देश क: भी ह।ै ृ ं ं □शासक:य भाषा (official Language) का दजा। उद । व िहदी को □□□ ह े जबिक बहत बड़े पव□ भाग पर c ू ं ू भोजपरी का बोलबाला ह।ै जो भारत म; िहदी का िह□सा मानी जाती ह े परत िसफ। मानक िहदी को सनने ु ु ु ं ं ं क: आदत वाले कान" के िलए लगभग समझ के बाहर क: बात ह।ै भोजपरी, बदले खडी, अवधी, ·ज, ु ु ं सभी को िहदी क: उपभाषाओ के □प म; मा□यता □□□ ह।ै यिद भाषाओ

Plagiarism detected: **0.07%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ + 6 resources! id: **53**

के आधार पर रा¾य" के गठन क: ◌ं ◌ं ◌ं □थापना जारी रही तो भिवqय म; य ◌े भाषायी S◌े□ अलग रा¾य भी हो सकते ह।◌ै सीतापर, कानपर, लखनऊ, ◌ु ◌ु क□नौज आिद अनेक िजल" क: भाषा के आधार पर

कोई अलग पहचान नहz ह ◌ै िफर बहभािषकता के c लSण िव□मान ह।◌ै एक उदाहरण से हम समझने क: कोिशश करते ह ◌ै जो िक एक स2य घटना पर आधा/रत ह।◌ै सन 2015 म; कानपर िजले के रहन ◌े वाले एक िशSक सीतापर िजले के □□थिमक िव□□लय ◌ु ◌ु ◌ु म; िनियि □□□ करते ह।□ एक िदन िशSक न ◌े िव□□थ□ से पछा िक त$हारी प□तक कहाँ ह?◌ै िव□□थ□ ने उ□र ◌ु ◌ू ◌ु ◌ु िदया

Quotes detected: **0%** id: **54**

'बह गयी'

। िशSक न ◌े आIyयािचकत होकर पछा िक □या त$हारे गाव म; बा/रश के समय पर बाढ़ ◌ू ◌ु ◌ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 39 ◌ु CPS -1 आई थी? िशSक न ◌े यह □H बड़ा उ2सक होकर िकया और उस पर कछ ब□चे हसन ◌े भी लगे □य"िक उस ◌ु ◌ु ◌ं गाव म; बाढ़ क: कोई सभावना नहz थी। बात इतनी सी ह ◌ै िक उस S◌े□ म;

Quotes detected: **0%** id: **55**

'बहने'

का अथ।

Quotes detected: **0%** id: **56**

'खोने'

से होता ◌ं ◌ं ह।◌ै ब□चे का जवाब था िक प□तक खो गई ह।◌ै जो िक थोड़ी दरी पर बैठे □थानीय िशSक ने सवाद को ◌ु ◌ं ◌ू बीच म; रोकते हए बताया था। कहने का ता2पय। ह ◌ै िक एक ही भाषा S◌े□ म; िसफ। बोलन ◌े क: शैली व लहजे c का ही अतर नहz ह ◌ै बि□क शEद" के अथ। भी अलग-अलग ह।□ इसे अतःभाषाई(intra-lingual) ◌ं ◌ं िविभ□नता कहते ह।□ अतः हम दखे सकते ह □ क: अतर-भाषाई (Inter-lingual) िविभ□नता के साथ-साथ ◌ं अतःभाषाई िविभ□नता भी Xया□ ह।◌ै यह एक स0मतर □तर का अतर ह,◌ै जो िक िशSक से सवेदनशीलता ◌ू ◌ं ◌ं ◌ं क: माग करता ह।◌ै यहाँ िशSक" से िव□□□थाय" क: सभी िविभ□न भाषाओ को सीखने क: अपेS◌ा नहz ◌ं ◌ं रखी जा रही ह ◌ै पर िशSक सभी भाषाओ को उिचत महËव दते ◌े हए बहभािषकता के िलए एक सही c c ◌ं माहौल बना ही सकते ह।◌ै िव□□लय म; िशSक अित□। या के िलए हम िसफ। एक भाषा के ऊपर िनभर। नहz ◌ं रह सकते ह।◌ै नवीनतम िवचारधारा के अनसार िशSक" के □H क: भाषा और िव□□□थाय" के उ□र क: ◌ु भाषा म; भी अ□तर हो सकता ह।◌ै इस भाषा प/रवत।न के उपागम य प□□त को पराभािषक-िशSणशा□ (Translanguaging Pedagogy) क: उपािध दी गई ह।◌ै यह एक नया तरीका ह ◌ै िजसम; िशSक िव□□थ□ को वह भाषा □योग करने दते ◌ा ह ◌ै िजसे वह सबसे अिधक और अ□छे से जानता ह।◌ै कोई एकभाषी िशSक भी पराभािषक □णाली का अनगमन कर सकता ह ◌ै (Grosjean, 2016). यह िवचाधारा कS◌ा िशSण म; ◌ु भाषा उदारता और िकसी एक माVयम-भाषा पर िनभर। ता से मि म; िव□□स करती ह।◌ै ◌ु हम िशSक सा□िकतक सरSण क: बात तो करते ह ◌ै पर भाषाई सरSण पर तिनक भी Vयान नहz ◌ृ ◌ं ◌ं ◌ं रखते। इसके िवपरीत दखे ने को िमलता ह ◌ै िक कछ तथाकिथत अJ◌ेजी माVयम के िव□□लय" म; िव□□□थाय" ◌ु ◌ं #◌ारा मातभाषा के □योग िकए जाने पर अथ।द□ड भी िदया जाता ह।◌ै कही न कही यह ब□च" के □□त, उनक: ◌ृ मातभाषाओ के □□त समाज के □□त एक अपराध ही कहा जायगे ◌ा। यिद कोई िशSक थोड़ा भी िचतनशील ◌ृ ◌ं ◌ं □□णी ह ◌ै तो वह जान सकता ह ◌ै िक सा□िकतक सरSण भाषायी सरSण से ही □□र$भ होता ह।◌ै जब हमारा ◌ृ ◌ं ◌ं ◌ं दशे बहसा□िकतक देश ह ◌ै तब भाषाई िविभ□नता तो होगी ही। िकसी एक के होने से दसरा □वािभावक ह।◌ै c ◌ृ ◌ं ◌ू ि#भािषकता और बहभािषकता अपने आप म; बहसा□िकतकता को आिल□ करती ह ◌ै अथा।त बहभाषावाद c c c ◌ृ ◌ं म; बहस□िकतवाद िनिहत ह।◌ै पनः आप यह बात च□:य स$बध #◌ारा समझ सकते ह □ (िच□ 1) िक एक c ◌ृ ◌ु ◌ं ◌ं स□िकत िकसी भाषा को ज□म दते ◌ी है, प□िलवत करती ह ◌ै और □□तफल □व□प वही भाषा स□िकत को ◌ृ ◌ृ ◌ं ◌ं पहचान दते ◌ी ह,◌ै सवधान और उसका वध।न करती ह।◌ै अतः भाषा और स□िकत एक दसरे पर अ□यो□यािI5त ◌ृ ◌ं ◌ं ◌ू ह।◌ै और यह च□ सतत□प से गितशील रहता ह।◌ै उ□राख□ड म िव□□व□□लय 40 ◌ु CPS -1 ज□म दते ◌ी है भाषा स□िकत ◌ृ ◌ं सरSण व सवध।न करती ह ◌ै ◌ं ◌ं िच2 4: भाषा और सwिकत क5 अVयोVयि ता ◌ृ ◌ं इस □कार यिद हम बहभाषावाद क: बात करते ह □ तो बहस□िकतवाद से हम अलग नहz हो सकते ह।□ c c ◌ृ ◌ं िकसी भी स□िकत को समझने के िलए उस स□िकत िवशेष क: भाषा को समझना ही पड़ेगा □य"िक भाषा ◌ृ ◌ृ ◌ं ◌ं िकसी भी स□िकत का एक िवशेष और अिनवाय। अग ह।◌ै ब□चे बहत सी अलग अलग तरह क: भाषाओ c ◌ृ ◌ं ◌ं ◌ं के साथ िव□□लय म; आते ह □ और उनक: इन भाषाओ से जड़ी अलग-अलग स□िकतया भी होती ह।◌ै और ◌ृ ◌ु ◌ं ◌ं ◌ं हम यह भी जानते ह ◌ै िक ब□चा (Xयि) अपनी स□िकत िवशेष का ही उ2पाद होता ह।◌ै उसको समझने के ◌ृ ◌ं िलए उसक: स□िकत को समझना अिनवाय। ह ◌ै और स□िकत समझन ◌े क: □थम शत। भाषा को समझना ह।◌ै ◌ृ ◌ृ ◌ं ◌ं इसको समझने क: िविधय" क: चचा। हम इस इकाई के अितम भाग म; कर;गे। अभी हम भाषाई िविभ□नता ◌ं क: मौजदगी पर चचा। करते ह।◌ै ◌ू 3.4 #k□-#k □ □□□□□" □□□□□□□ (Language Diversity in the m Classroom) भाषायी और सा□िकतक िविभ□नता हमारे दशे क: िविश□ पिहचान और िश ह।◌ै िकसी समाज म; ◌ृ ◌ं भाषायी िविभ□नता होने पर ही उस समाज को बहभािषक समाज कहा जाता ह।◌ै अतः बहभािषकता और c c भाषाई िविभ□नता

दोनो स$□2यय एक ही व□ति□थित को िचि□त करते ह।ै जैसा क: आप जानते ह ै िक ु िव□□लय समाज का ही लघ□प होता ह ै अतेव बहभिाषक समाज म; िव□□लय" म; आने वाले ब□च" क: c ु भाषाएँ भी िविभ□न ही ह"गी। यह िसफ। बड़े-बड़े शहर" क: ि□थित ही नहz ह ै अिपत छोटे-छोटे से गाव" म; ु ं िविभ□न प□भिम के ब□चे □कल म; पहचते ह □ लेकिन आyयाजनक और द:खद ि□थित ह ै िक िशSक c ृ ू ू ृ ु भाषाई िविवधता के िलए एकदम तैयार नहz होते ह □ (Edward, 2010)। जबिक एडवडा के अनसार सभी ु गणव□□पणा िशSा जो गणा2मक िशSा य अ□छी िशSा कहलान े के यो»य ह ै वह बह-सा□कितक ही होती c ृ ु ू ु ं ह।ै इस बात को समझने के िलए आप अपन े पवा-अनभव" का □योग कर सकते ह।ै आप अपने समदाय ू ु ु िवशेष (गाँव/शहर) क: भाषा को समाज के अदर रहते हए आ2मसात कर ही लेते ह।□ यह एक □वाभािवक c ं □□□या ह ै िव□□लय म; जाने क: □या आव□यकता ह?ै ऐसा सोचन े और ऐसा करन े से आपक: गितिविधय" उ□राख□ड म िव□□व□□लय 41 ु CPS -1 का S े□ काफ: सीिमत हो जाता ह।ै हम एक □थान पर रहकर जीवन पार करन े वाले और उसी वातवरण के अनभव रखन े वाले लोग" को नकारा2मक शEद" म;

Quotes detected: **0%** id: **57**

'कप-मडक'

भी कहते रह े ह।ै अथाात अतर-सा□कितक ृ ु ू ू ं ं ं समझ कहz ना कहz □ान का □तीक ह ै व □□न से सबिधत ह।ै आज से एक य दो दशक पीछे के समाज पर ं ं अगर Vयान द; तो जनसचार के माVयम का इस □तर तक िवकास नहz हआ था। समाज म; िवशेष □प से c ं Jामीण समाज म; जो दो चार तरह के लोग □□नी होते थे या माने जाते थे उनम; से हम कह सकते ह □ िक िशSक हआ करते थे। िशSक" के अलावा साधसत, Xयापारी और रोजगार के िलए दसरे □दशे " म; काम c ु ं ू करने वाले िमक हआ करते थे। यह सभी Xयि गितशील थे और अतसाां□कितक व अतदशº ीय समझ c ृ ं ं रखते थे। हमारे दशे क: सबसे अिधक भाग म; बोली और समझी जाने वाली आिधनक िहदी भाषा के ु ं िवकास म; साधसत" और Xयापा/रय" का िवशेष योगदान रहा ह।ै अJजे ी के िवकास म; भी Xयापा/रय" व ु ं ं ईसाई िमशन/रय" का ऐितहािसक योगदान ह।ै अतः साराश यह ह ै िक भाषा के िवकास म;, सा□कितक- ृ ं ं आिथाक सिम□ म ; और राजनै तक समझ म; अतर-भाषाई और अतर-सा□कितक अनभव" का िवशेष ृ ृ ु ं ं ं योगदान ह।ै इस समझ का िवकास करना िशSा का एक उ□□□ य भी ह।ै □□न(िशSा) का एक □प अतसाां□कितक समझ ह।ै शायद इस त□य को जानने पर हमने □□न क: सव□□च पीठ को िव□□व□□लय ृ ं कहा होगा। जहाँ सम□त िव□ का □□न (स□कित, भाषा, िव□□न) अVययन के िलए उपलEध हो। स□कितक ृ ृ ं ं (भाषाई सिहत) िविभ□नता एक □कार से िशSा का आधार और पाठयव□त भी ह।ै अतः हम िशSक" का ु ु िद□कोण समिकत होना चिहए। िकसी एक भाषा और स□कित के □□त िविश□ लगाव और िकसी दसरे के ृ ं ु ू □□त पवााJह य दराव कही न कही िशSा क: मल अवधारणा के िव□□ ही □तीत होता ह।ै ू ू ु उपरो चचाा से अभी तक दो बात; □प□ हो चक: ह □ िक भाषाई िविभ□नता एक सावाभौिमक स2य ु ह ै और एक से अिधक भाषाओ का □□न रखना एक शि व यो»यता के अतगात आता ह।ै कछ िव#ान" ु ं ं का मत ह ै िक जो िशSक अपने िव□□□थाय" के #ारा िविभ□न भाषाओ के □योग के िवषय म; उदार, खले ु ं िदमाग के और पवााJह से रिहत होते ह □ वे िव□□थ□य" म; भाषाई □□च और िवकास के सवधान म; अिधक ू ं सफलता □□□ करते ह □ (Lars and Trudgill, 1990)। अथाात भाषाई िविभ□नता के □□त सवेदनशील ं िशSक अपने िवषय" म; सामा□य □प से सभी Sमताओ को िवकिसत करन े म; सफल होने क: अिधक ं सभावना रखते ह।□ िशSक" म; इस तरह क: अिभवि□ का िवकास तभी होता ह ै जब वे अपन े िव□□लय ृ ं S े□ क: भाषाई प!रिwथतक5 से भलीभाँि त प/रिचत हो। अब भाषा

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.notesinhindi.com/blog/स्पर्श व्यंजन क व… id: **58**

ई प/रि□थितक: से □या ता2पय । ह?ै आइये इस अवधारणा पर भी चचाा कर लेते ह।ै 3.5 □□□□z '□□□{□g□□#" (Language Ecology) भाषाई प/रि□थ

ितक: एक ऐसा िवषय ह ै जो भाषाओ, लोग", और पयाावरण(िव□) के आपसी सबध" का ं ं ं अVययन करता ह ै (Dua, 2008)। एक पा/रि□थितक त□ म; शािमल भाषाए सह-अि□त2व रखती ह।□ कई ं ं भाषाए साथ-साथ उ¿त और िवकिसत होती ह,□ एक दसरे को □भािवत भी करते ह।□ भाषाओ का आपसी ं ं ू ू सबध शि , दबाव, आकषाण, □भ2व व आदान-□दान आिद लSण" #ारा िचि□हत होता ह।ै सह अि□त2व ु ं ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 42 ु CPS -1 और सह-उ¿व का सबसे अ□छा उदाहरण िहदी खड़ी बोली और उद । भाषा के िवकास का ह।ै दोन" के ं ू िवकास के इितहास पर यिद आप नजर डाल;गे तो आप समझ सकते ह □□क भाषा क: प/रि□थितक: त□ म; ं राजनीितक त□ क: बहत बड़ी भिमका होती ह।ै आप यह भी समझ सकते ह ै िक राजनीितक और c ू ं सामािजक त□ म; िकसी भी □कार के बदलाव से भाषाई प/रि□थितक: म; भाषाओ का □थान िकस □कार ं ं अदल-बदल होता रहता ह।ै आप भारत म; अJेजी के आगमन, □सार व वचा□व के स0म अवलोकन से ू ं जान सकते ह □ िक बाजार (आिथाक ताकत") का तथा राजनीितक स□□ का भाषा-नीित और □योग पर □या □भाव पड़ता ह।ै िहदी के िवकास म; भी भारतीय Xयापा/रय" का िवशेष योगदान माना जाता ह।ै भाषा क: ं ि□थित के सदभ । म; हम राजनीितक, सामािजक और आिथाक कारक" क: अ□सर बात करते ह।□ लेकिन एक ं और सश कारक व S े□ ह ै िजसे धमा कहते ह।□ जाने-अनजाने, चाह े अनचाह े धमा और भाषा का भी अनबधन हो ही जाता ह।ै सबसे बड़ा उदाहरण धमा के आधार पर बना िम□लम दशे पािक□तान ह ै जो ु ु ं अपनी भौगोिलक S े□ म; Xया□ भाषाओ को छोड़ते हए भारतीय भभाग पर ज□मी और

िवकिसत हई उद I c c ू ं ू भाषा को अपनी राq°ीय भाषा के □प म; □वीकार करता ह।ै जहाँ िसफ। 8% आबादी उद I भाषा का □योग ू करती ह ै (BBC, 2015); लेिकन उद I का स$बध □लाम से जड़ने से वह पिक□तान क: एकलौती ु ं ू □शासिनक भाषा का दजा। □ा□ कर लेती ह।ै भारत म; ईसाई बहल Sे□" म; कछ हद तक अJेजी का □तर c ु ं तलना2मक □प से बेहतर देखा जा सकता ह,ै □य"िक अJेजी और इसाईयत अनौपचा/रक □प से जड़ ु ु ं चके ह।ै य□□प अJेजी क: भारत म; राजनीतक और शैिSक पहचान अिधक ह।ै स□कत भाषा का भी ृ ु ं ं सनातन धम। (िहद धम।) से अटट सबध रहा ह।ै इस □कार हम दखे सकते ह □ िक भाषा समाज म; ू ं ं ं ू सा□िकतक, अािथ।क, राजनै तक व धािम।क Xयव□थाओ से िजटल □प से आब□ रहती ह।ै िकसी एक ृ ं ं Xयव□था म; प/रवता।न सामािजक प/िर□थितक: म; भाषा/भाषाओ क: ि□थित को □भािवत करती ह;ै और ं भाषा

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.notesinhindi.com/blog/स्पर्श व्यंजन क व… id: **59**

ई प/िर□थितक: म; प/रवता।न लाती ह।ै प/रणामतः भाषाई □व□प, िलिप, □तीक, िच□ह, सरचना आिद ं म; प/रवता।न का कारण बनती ह।ै राजनीतक सगठन और रा¾य क: काय।□णाली भाषाई प/िर□थ

ितक: के ं □व□प, प/रवता।न, सरSण, और िवकास म; अJणी भिमका अदा करती ह।ै रा¾य #ारा भाषानीित, भाषा- ू ं िशSा, साSरता, िशSण-माVयम आिद का चयन िविभ□न भाषाओ के आपसी सबध" का िनधा।रण करता ं ं ं ह ै साथ ही भाषा त□ म; भाषा के □थान को □भािवत व सिनिyत करता ह।ै □थानीय प/िर□थितक: म; हम ु ं िशSक" क: मह2वपण। भिमका रहती ह।ै इसक: स0म समझ से हम अपनी भिमका सकारा2मक □प से ू ू ू ू अदा कर सकते ह।ै िजससे क: भाषाओ का सरSण ही नहz वरन भाषाई िविभ□नता(बहभािषकता) से हम c ं ं ससाधन के □प म; लाभ □□□ कर सक; । ं अ&यास □(1. समाभािषक □□□कोण से भाषा क: अवधारणा □या ह?ै 2. भारत म; लगभग िकतनी भाषाए ँ य बोिलया □योग क: जाती ह?ै ं 3. समझ का सबसे अ□छा माVयम कौन सी भाषा होती ह?ै 4. उ□र □देश क: □□शासिनक भाषाएँ कौन सी ह?ै उ□राख□ड म िव□□व□□लय 43 ु CPS -1 5. पराभािषक-िशSणशा□ (Trans-languaging Pedagogy) िकसे कहते ह?ै 3.6 □ह□□□□#□□ u# □N□□O # x' □ (Multilingualism as a m □ Resource) बहभािषकता एक शा□त स2य ह।ै िशSक" को बहभािषकता के □□त सवेदनशील होना चािहए। यह c c ं लगभग □2यके देश व समाज का सामा□य स2य ह।ै परत इस □□िकतक-सामािजक िवशेषता को ृ ु ं अ□□नतावश हमेशा से दबाने या न□ करन े क: कोिशश क: जाती रही ह।ै इसका सबसे बड़ा उदाहरण सन ् 1971 से पहले पािक□तान #ारा बगलादेश (त2कालीन पव□-पिक□तान) म; बगाली भाषा पर □हार ह,ै और ू ं ं दसरा उदाहरण तलसीदास जी #ारा रामच/रत मानस को लोकभाषा अवधी म; िलखने पर त2कालीन ु ू काशी के पि□डत" का िवरोध, िजससे िक उनको काशी छोड़कर अ□य□ जाना पड़ा था। कई □कार क: शि याँ इस नशसता म; शािमल रही ह।ै आज हमारे दशे म; बहभािषकता को सवैधािनक □प से □वीकार c ृ ं ं िकया गया ह,ै िफर भी यथाथ। के धरातल पर इसके पqपन के िलए उपय वातावरण नहz बन पाया ह।ै ु ु कहz ना कहz एक भाषा िवशेष से हमारा लगाव होना इसका □मख कारण रहा ह।ै □वत□ता के बाद भी ु ं हम कहz िहदी का और कहz अJेजी का िवरोध दखे सकते ह।□ मातभाषा य राq°भाषा के □□त □□म होना ृ ं ं उसके □□त स$मान होना कोई गलत बात नहz ह।ै बि□क यह कई मायन" म; लाभकारी लSण ह।ै मातभाषा ृ य राq°भाषा से □□म िकसी दसरी भाषा य िवदेशी भाषा के □□त घणा का कारण नहz होना चािहए। भाषाएँ ृ ू निदय" के समान ह ै जो आसपास क: जमीन को आद।ता □दान करती ह,□ और ह/रयाली लाती ह।□ यह वह जमीन ह ै जहाँ हम िवचार" क: खेती करते ह।□ आज भाषा-िव□□□नय", राजनीित-िस□□तशा□य", समा- ं भाषाशा□य", भाषा-नीित िनमा।ताओ आिद सभी न े बहभािषकता को ससाधन माना माना ह।ै अब हम c ं ं िबदवार ढँग से बहभािषकता के लाभ" पर चचा। करते ह।ै c ं ु • यह आप िपछली इकाई म; भी पढ़ चके ह ै िक कोई भाषा िचतन क: □□□या म; बाधक नहz बि□क ु ं उसक: वाहक होती ह।ै िजतनी अिधक भाषाओ का □□न आपको होता ह ै आप उतने अिधक ं तरीके से िकसी िबद, िवषय, घटना के बारे म; सोच सकते ह □ और अिधक □□न □□□ कर सकते ं ु ह(ै NCERT, 2005)। • सामािजक □□□ से भी बहभिषकता िवकास के िलए सकारा2मक आधार उपलEध कराती ह।ै हम c पहले भी चचा। कर चके ह ै िक बहभािषकता सतही □तर पर सरल और आत/रक िजटलता िलए c ु ं हए एक िवशेष सा□िकतक ि□थित होती ह।□ यह एक ऐसी िजटल ि□थित ह ै जहाँ दो या दो से c ृ ं अिधक भाषाओ क: अित□। या भाषाई, सािहि2यक, सा□िकतक िवकास और □□न क: रचना को ृ ं ं ं ं □भािवत और प□ करती ह।□ ु उ□राख□ड म िव□□व□□लय 44 ु CPS -1 • बहभािषकता क: ि□थित भाषा के िवकास, सामािजक-सा□िकतक िव□, सामािजक-राजनीतक c ृ ृ ं गितशीलता म; मह2वपण। भिमका अदा करती ह।ै इसका अ□पस□यक भाषाओ के सरSण और ू ू ं ं ं □योग पर िवशेष Vयान रहता ह ै िजससे िक सामािजक भाषाई ससाधन" को बनाए रखा जा सके ं और उनका दोहन िकया जा सके । • बहभािषक-वैचा/रक: एक तरह से सामािजक-सा□िकतक सरSक का काय। करती ह।ै इस c ृ ं ं िवचाधारा से समाज म; कई भाषाएँ साथ साथ िव□मान रहती ह।ै इस त□य का िवशद समा- भािषक मह2व ह।ै यह भाषाओ को िवल□ होने से बचाता ह।ै कोई भाषा का िवल□ होना एक ु ु ं साधारण नकसान नहz होता ह।ै भाषा

Plagiarism detected: **0.14%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ + 4 resources! id: **60**

के साथ साथ स□िकत का नकसान होता ह।ै ल□□□य भाषा ृ ु ु ु ं के बोलने वाले लोग (भाषायी अ□पस□यक) एक नई भाषा सीख सकते ह,ै जो िक अ□सर ं बहस□यक भाषा होती ह।ै लेिकन कछ बात" क: भरपाई कभी नहz हो सकती। जैसे हर भाषा

म; c ु ं कछ शEद होते ह ै जो थानीय वतओ, /रत", कितक-जीव- जतओ-घटनाओ का बोध करात े ृ ु ु ु ं ं ं ं ह ै उन सबका नकसान होता ह

।ै आप िवचार कर सकते ह ै िक अJेजी भाषा, िजसे आज क: ु ं िथित म; िवदेशी भाषा नहz कहा जा सकता ह,ै म; बआ, मौसी, मामी, चाची आदी /रत" के ु िलए अलग अलग शEद नहz ह ै फलवप अJजे ी सिकत म; इन /रत" का िवशेष महËव भी ृ ं ं नहz । • हमने िपछली इकाई म; पढ़ा था िक हम एक भाषाई समदाय के सदय होन े के नाते एक िवशेष ु कार से सोच रखने लगते ह(Borodotsky, 2001)। बोरोदो2क: के शोध" से पता चला ह ै एक भाषा िवशेष हमारे सना2मक या का िहसा होती ह ै और हमे िवशेष Sमताएँ दान करती ं ह।ै उहोने योग #ारा िस िकया िक अJजे ी भाषा म; गहरे नीले और हके नीले रगो को डाक। ं ं Eल और लाइट Eल (Dark Blue & Light Blue) कहकर काम चलाया जाता ह ै जबक: सी ू ू भाषा म ; इसके िलए अलग अलग शEद होते ह।ै सी लोग गहरे नीले रग को

Quotes detected: **0%** id: **61**

'िसनी'

(Siniy) ं कहते ह ै और हलके नीले रग को गोलबाय (Goluboy) कहते ह।ै इस साधारण स; शEद" के ू ं अतर का बहत बड़ा अतर उनके 2यSण और समझ पर पड़ता ह।ै उह"ने ने पाया िक िविभन c ं ं कार के नीले रगो को िदखाने से सी लोग जदी से अतर कर पाते ह।ै ऐसे ही एक शोध म ; ं ं पाया गया िक उरी आिलया क: एक जनजातीय(Kuuk Thaayorre) के लोगो म; हम लोगो से अछा िदशा बोध होता ह।ै योिक उनक: भाषा म; दाँया- बाँया शEद नहz होता ह ै वे हमेशा मय-दिशाओ के सदभ। म; ही बात करते ह ै जैसे(उदाहरणाथ।) यिद उनको बताना होगा ु ं ं िक आपके दिहने हाथ िक बटन(Cuff-Button) खली ह ै तो वे उस समय आपक: खड़े होने क: ु िथित को समझ कर बोलेग; िक आपके उरी-पव। हाथ क: बटन खली ह(ै Borodotsky, ू ु 2009)। कहने का त2पय। िविभन भाषाओ से के साथ िविभन सना2मक और सकितक ृ ं ं ं उपलिEधयाँ जड़ी हई ह।ै िकसी भाषा को बोलने वाले जब उस भाषा का योग करना छोड़ दते े ह ै c ु या ख़2म हो जाते ह(ै भाषा प/रवत।न आिद कारण" से) तो वह भाषा मत-भाषा क: किोट म; आती ृ उराखड म िवववलय 45 ु CPS -1 ह।ै िकसी भी भाषा के मत होने से उस भाषा से जड़ा िवशेष न भी न हो जाता ह।ै एक जगक ृ ु न समाज म; िशSक क: भिमका यही ह ै िक वह सभी भाषाओ व बोिलय" के त उदार रह े ू ं िजससे िक भाषाई प/रिथितक: म; सतलन बना रह े और बच" को मातभाषा म; सीखन े के ृ ु ं अवसर भी िमलते रह।े • भाषा एक उनत व जिटल सना2मक Xयवथा भी ह,ै जो (Xयि क: Sमता के आधार पर) ं सन के िलए सश उ2रक और परावत।क मानी जाती ह ै (Bowerman & Levinson, ं 2001)। बहभािषकता हमारे मितqक को एक िवशेष कार के लोचनीयता दान करती ह।ै c • शोध योजना कोई भी रही हो पर सभी तरह के शोध" से यह िस हो चका ह ै िक िवशेष ु सामािजक-भाषायी प/रिथितय" म; ि#भािषकता का सना2मक भाव सकारा2मक होता ह।ै ं यिद धना2मक ि#भािषकत ह ै तो बचे िनियत प से सना2मक लाभ करते ह ै ं (Cummins,1981) । ि#भाषी बचे कई सना2मक Sमताओ के आधार पर लाभ क: िथित ं ं म; होते ह। उदाहरणाथ। Êयाजे के सरSण-काय। (Piagetian conservation task), स2यय ं ं िनमा।ण, सजना2मकता, साय तक। ना, वगकरण कौशल, ताक। क Sमता, उच-सना2मक ृ ं Sमताए आिद म; ि#भाषी बचे अिधक सSम होते ह। ं • भाषा अजा।न म; भी ि#भािषक या बहभािषक जागकता आनषिगक हो

Plagiarism detected: **0.04%** https://saralhindivyakaran.in/swar-and-vyanjan-… id: **62**

ती ह।ै दो भाषाओ का c ु ं ं न रखने वाला तीसरी भाषा को तलना2मक प से जदी सीखने के साथ साथ

उसम; ु काया।2मक दSता हािसल कर सकता है। • बहभाषी बच" म; एक प/रqकत भाषा जागकता होती ह ै और वे अपन े भाषा Xयवहार पर c ृ िवशेष िनयण रखते ह। जो बदले म; उनको न के वल ि#तीय भाषा म; िनपणता हािसल करने म; ु ं सहायक होता ह ै बिक उनके सना2मक व मानिसक िवकास म; एक मह2वपण। िया2मक ू ं भिमका अदा करता ह।ै ू • वायगो2क: न े भी अपने भाषा िवकास िसत म; बहभािषक Sमताओ पर िवशेष जोर िदया c ं वायगो2क: के अनसार Xयि गत भाषा म; भाषा के योग के #ारा समझन े क: या को ु िविनयिमत करने और िवचार के उपकरण के प म; भाषा पर कायक। ारी िनयण बढ़ना बच" ं क: बि के िवकास के िलए लाभकारी होता ह।ै और बहभािषकता क: िथित भाषा- c ु मण(Language Processing) और भाषा िनयण को गित दान करती ह।ै ं • Bialystock (1991) के अनसार भाषा िनपणता उ, अनभव और अनदशे न से बढ़ती ह।ै ु ु ु ु उह"न े भाषा योग के तीन नSे बताय े ह ै –भाषा का मौिखक योग, साSरता व बहभािषक c काय। (Spoken, Literacy/Written & Multilingual Tasks)। उनके अनसार भाषा- ु सकरण (Language Processing) के दो त2व ह – िवËेषण और िनयण। भाषा ं ं सकरण के िवकास का जो म होता ह ै वह ि#/बहभाषी बच" म; अिनवाय। प से एकभाषी c ं उराखड म िवववलय 46 ु CPS -1 बच" से अलग होता ह।ै दो भाषाओ म; िनपणता का िवकास इही िवDेषण और िनयGण ु ं ं Sमताओ के उचतर िशखर" क: ओर बढ़ना होता ह।ै ि#भाषी बच" के पास दोन" याओ ं ं म; तेजी से िनपणता हािसल करने का अवसर रहता ह।ै यही दोन" याएँ िविभन Sे" (ु मौिखक, साSरता, और बहभािषकता) म; भाषा योग के आधार के प म; होती ह। िशSक" को c बच" म; भाषा-मण के इन त2व" के िवकास के िचह" व लSण" को पिहचानना होता ह।ै य"िक इही के आधार पर िशSण-िविध और सषण रणनीत का िनणा।य िकया जा सकता ह।ै ं • ि#भाषी बचे शEदावली पर

ि नय□ण म; आत/रक सिवधा का लाभ □□□ करते ह।□ ु ं ं • अनवाद या अनकित एक बहभिाषक कौशल ह।ै बहभाषी ब□चे □□रिभक अव□था से ही c c ृ ु ु ं □वाभािवक अनकित म; िनपणता □□□ कर लेते ह।□ ृ ु ु • भाषा और स□□न दोन" ही बड़ी पेचीदगी से सा□कितक Xयव□था के अिभ□न अग ह।ै इनक: समझ ृ ं ं ं ही िशSक" म; एक िवशेष िशSण-शा□□य (Pedagogical) समझ िवकिसत करती ह।ै िशSक" म; बहभिाषकता का लSण य बहभिाषक सवेदनशीलता उनके िशSण शैली और स□□षण c c ं ं कौशल को गितशीलता □दान करती ह।ै • बहभिाषकता शEद" के लाSिणक और Xयजना2मक अथ□ को Xय करन े के कौशल म; वि□ c ृ ं करती ह।ै • दो य दो अिधक भाषाए ँ सामािजक वयै क □तर पर एक दसरे के परक के □प म; काय । करती ह।ै ू ू ि#भाषी ब□चे सामािजक अतः िया म; भाषा कट प/रवता न (Code Switching) के माVयम से ू ं अिधक सफलता □□□ करते ह।ै • हम अतर और समानता खोज कर भी सीखते ह।ै ि#भाषी ब□चे दो भाषाओ के शEद" के अतर ं ं ं और िवÈेषण के #ारा िकसी व□त य स$□2यय क" □थायी □प से आ2मसात कर लेते ह।ै ु 3.7 □□}□~g□□ #" □□□□z '□□□□□□□ (Language Backgrounds of the Students) अभी तक क: चचा से हमने यह जाना क: बहभिाषकता एक सामा□य स2य ह।ै यह कोई सम□या नहz जैसा c क: कई िशSक सोचते ह ै बि□क यह एक ससाधन ह।ै आप जनते ह ै िक िशSक का काय । नैसिगक भाषाई- ं प/रि□थितक: को सरिSत करना ह ै व पोिषत करना ह ै ना िक उसको न□ करना। इस हते िशSक" को ं ु िविभ□न भाषाओ के □□त सम, सवेदनशील व Jहणशील होना चािहए। पनः हम Vयान द े िक हमारे ु ं ं िव□□लय म; िविभ□न भाषायी और सा□कितक प□भिम से िव□□थ□ आते ह।□ और जैसा िक हम जानते ह □ ृ ृ ू ं िक ब□च" क: भाषा और स□किित को समझे िबना हम उनके िलए उिचत िशS ा क: Xयव□था नहz कर ृ ं सकते ह ै □यिोक उनक: प/रि□थित म; वह िशS ा □□सिगक नहz हो सकती ह।ै कई कारण" म; िशS ा क: ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 47 ु CPS -1 अ□□सिगकता भी एक कारण ह ै िक □□रि$भक िशS ा का मÒत व अिनवाय । होते हए भी कई अिभवावक c ु ं अपन े ब□च" को िव□□लय नहz भेजते। जैसा िक हम िशSक जमीनी □तर पर काय । करते ह ै यह हमारी िज$मेदारी बनती ह ै िक हम िव□□लय #ारा □द□ िशS ा क: साथकता बनाये रखे। और यह तभी स$भव ह ै जब हम अपने िव□□□था य" क: भाषायी और स□कितक प□भिम से अ□छी तरह से वािकफ हो। हम ृ ृ ू ं िपÓली इकाइय" म; चचा । कर चके ह ै िक भाषा िशS ा का माVयम व िशS ा का अग ह;ै और ब□च" क: ु ं □थम भाषा उनक: समझ के िलए सबसे उ□म माVयम ह ै तो कहz न कहz यह बात तिाक क ह ै िक िशSक" को ब□च" के भाषाई प□भिम य □थम भाषा को समझना ज□री ह।ै दसरी एक बात और मह2वपण ह ै िक ृ ू ू ू िसफ हम उदारता और दया भाव से ब□च" क: मातभाषा म े कS ाकS-अित□ या को बढ़ावा द े तो ऐसा ृ ं सोचना मा□ ही गलत ह।ै यिद आप िशS ा म; समता क: बात करते ह।□ यिद आप एक समिकत िशS ा Xयव□था म; िव□□स करते ह □ तो सबको समान िशS ा के अवसर □दान करन े के िलए हमको उनक: भाषाई अिधकार" का Vयान रखना ही पड़ेगा। कS ा म; भाषाई िविभ□नता को Vयान रखन े फायदा िसफ िव□□□था य" को ही नहz होता ह ै बि□क हम िशSक" को भी होता ह।ै िशSक अपने ब□च" के प□भिम के बारे म; िजतना ृ ू अिधक जानते ह □ उतना उनका काम आसान हो जाता ह।ै कई दशक" से होते आ रह े शैिSक शोध" से यह बात □वय िस□ सी हो चक: ह ै िक ब□च" क: शैिSक उपलिEध पर उनक: भाषाई, सा□कितक, पा/रवा/रक ृ ु ं ं प□भिम का असर पढ़ता ह।ै तब हम ब□च" क: प□भिम के िवषय म; ग$भीरता से अVययन □य" नहz ृ ृ ू ू करते? आपन े िशS ा-िसाह2य म; पढ़ा होगा िक उ□म िशSक वह होता ह ै जो ब□च" को अिभ□□/रत करता ह।ै आपन े अिभ□□णा और अिधगम के अ□यो□यािि5तता का भी अVययन िकया ही होगा। जब हम जानते ह □ िक अिभ□□रणा के िबना अिधगम सभव नहz ह ै तो िशSक का म□य काय िव□□□था य" को □□/रत करना हो ु ं जाता ह।ै अपने िव□□□था य" को पढ़ान े के िलए और अपने िवषय को □□चपण ढग से □□तत करने के िलए ू ु ं आपको पता होना चािहए िक वे कौन सी बात; ह ै जो िव□□□था य" को □□/रत करती ह?ै इस □H के उ□र के िलए आपको इसके आधार □H का उ□र भी खोजना होगा। वह यह िक िव□□□था य" के िव□□लय म; आने को □या और कौन सी बात □□/रत करती ह?ै इस □H के उ□र से न के वल िशSक" का िशSण □□चपण ू होता ह ै अिपत िव□□लय #ारा □दान क: जाने वाली िशS ा □□सिगक भी होती ह।ै ऐसा इसिलए □य"िक ु ं ब□च" के िव□□लय आन े क: अिभ□□रणा म; अिभभावक" #ारा िव□□लय भेजने क: अिभ□□रणा व उनक: अपेS ाए भी सिल□ रहती ह।ै इनका □□न िशSक" को होना अिनवाय ह।ै आप सोच रह े ह"गे िक िशSक ं ं अिभभावक" क: अपेS ाओ क: जानने के काय । को कै से कर सकते ह?□ इसके िलए सवाद सबसे उिचत ं ं माVयम ह।ै अिभभावक" से सवाद □थािपत करके आप न के वल उनक: अपेS ाओ को जानने लगते ह □ ं ं बि□क आप अपने िव□□□था य" के भाषाई प□भिम भी समझ जाते ह;□ जो कS ाकS अित□ या को □भावी ृ ू ं बनाने के िलए ज□री ह।ै हमारे आसपास अ□□िशिSत िशSक" क: कमी नहz ह ै कई िव□□लय" म; □थम िडJ ी (B.A./B.Sc) □□□ लोग पढ़ा रह े ह।□ िज□ह"ने िशS ा म; कोई उपािध (जैसे B.Ed.) □□□ नहz क: ह।ै इस त2व से एक बात सामने आती ह ै िक कोई भी Xयि िकसी भी कS ा म; कोई भी िवषय पढ़ा सकता ह।ै पर□त िशS ा का ु उ□राख□ड म िव□□व□□लय 48 ु CPS -1 उ□□□ य परा होने क: गारटी तब होती ह ै जब आप ब□च" के सवा गीण िवकास को □□2सािहत करते ह।□ यह ू ं तभी सभव ह ै जब आप ब□च" क: प□भिम को समझते हो। िव□□□था य" के पा/रवा/रक, सामािजक- ृ ू ं सा□कितक मानिसक आिद प/र□□0य" को समझन े क: पहली शत िव□□□था य" क: भाषाई प□भिम को ृ ृ ू ं ं समझना ह।ै िव□□□था य" क: प□भिम क: समझ ही आपको सपण (Complete) िशSक बनाती ह।ै ब□च" ृ ू ू ं क: भाषाई व अ□य □कार प□भिमय" को समझने के िलए कौन-कौन सी िविधया, □□िविधया और ृ ू ं ं रणनीितया अपनाई जा सकती ह ै अब हम इसक: चचा करते ह।ै ं • □थम रणनीित ह ै सवाद । ब□च" के साथ अनौपचा/रक सवाद □थािपत करके िशSक ब□च" के ं ं भाषाई प□भिम को समझ सकते ह।□ साथ ही साथ उनम; भाषा के िवकास के □तर को भी समझ ृ ू सकते

ह। □ तदन□प वे अपनी कSाकS अति□। या क: योजना तैयार कर सकते ह। □ ु ं • ि#तीय प□□त अवलोकन य िनरीSण ह। ै अवलोकन और परीSण के #ारा िशSक ब□च" के ना के वल भाषाई प□भिम को समझ सकते ह □ बि□क उनके सामािजक सबध, समह गितशीलता ृ ू ू ं ं आिद का भी पता लगा सकते ह। □ • आपन े दखे ा होगा िक कछ ब□चे अतमाखी □कार के होते ह □ और कछ बिहमाखी □कार के होते ह। □ ु ु ु ु ं अतमाखी □कार के ब□चे हमेशा शात रहना पसद करते ह। □ ऐसे म; सवाद □थािपत करन े क: ु ं ं ं ं सम□या उतप□न हो जाती ह ै और भाषाई प□भिम के समझना किठन हो जाता ह। ै िशSक को ृ ू सवाद पर जमी हई बफ। क: परत को तोड़ना होता ह। ै इसके िलए एक रणनीत अपनाई जा सकती c ं ह ै िक हम खेल" का आयोजन कर;। िवशेष □प से हम □थानीय खेल" का आयोजन कर; और उन खेल" म; ब□च" क: समह अतरि□या का अवलोकन कर;। □य"िक □थानीय खेल" म; ब□चे बड़ा ू ं ही सहज और □□कितक □प से Xयवहार करते ह। □ अगर हम कछ मानक खेल" का आयोजन ृ ु करते ह, □ जो िक िजला य रा¾य के □तर पर खेले जाते ह □ तो अ□छा होगा िक िशSक भी उन खेल" म; सहभागी बने; और इस □कार सहभागी अवलोकन करन े से िशSक ब□च" क: भाषाई प□भिम के बारे म; अिधक जानकारी □□□ कर सकते ह। □ ृ ू • भाषा परीSण एक ऐसी िविध ह ै िजससे ब□च" क: भाषाई प□भिम को िव□वसनीय तरीके से ृ ू समझा जा सकता ह। ै यिद ब□च" क: □थम भाषा िव□□लय भाषा स े अलग ह ै और ब□च" क: □थम भाषा िलिखत भाषा भी ह ै तो िशSक मानक परीSण" का भी □योग कर सकते ह। □ दोन" (□थम और िव□□लयी) भाषाओ के िलए इन परीSण" का □योग िकया जा सकता ह। ै ं • आपके िव□□लय म; कSा 6, 9 व 11 कई □तर" पर कछ िव□□थ□ सीधे नामाकन □□□ करते ह"गे। ु ं इस □कार वे पव। क: कSाए कहz दसरी जगह से उ□□ण। करके आय े ह"गे। ऐसे म; िव□□□थाय" क: ू ं ू भाषा व शैिSक प□भिम जानने के िलए आप ब□च" के िव□□लयी द□तावेज" का िवÈेषण कर ृ ू सकते ह। □ इसके अलावा उनाके पव। के िव□□लय क: साख और □□फाइल के आधार पर भी आप ू कछ अदाजा लगा सकते ह। □ ु ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 49 ु CPS -1 • ब□च" क: □□चय" को जानने के िलए हम एक सवºSण भी कर सकते ह □ िजसम; ब□चे कछ □H" ु के िलिखत जवाब द।; जैसे िक

Quotes detected: **0.01%** id: **63**

'मझे ि□के ट खेलना पसद ह'

ै । यह परीSण ु ं आिवqकारणी(Inventory) के □कार का हो सकता ह, ै जो िशSक सदभ। िवशेष को Vयान म; ं रखते हए □वय तैयार कर सकते ह। □ इससे मनोिभाषक प□भिम के अलावा अ□य Xयि 2व से c ृ ू ं सबिधत जानका/रया भी □□□ क: जा सकती ह। □ ं ं ं अ&यास □(6. बहभािषकता के कोई दो स□□ना2मक लाभ बताइए। c ं 7. उद। भाषा का ज□म िकस देश म; हआ? c ू 8. भाषा □□मण म; कौन कौन से दो त2व ह? ै 9. अनवाद िकस तरह का कौशल माना जाता ह? ै ु 10. िव□□□थाय" क: प□भिम क: समझ □य" आव□यक ह? ै ृ ू 3.8 □□□□N] आज हमारे सामने दो पर□पर िवरोधी ि□थितयाँ उ2प□न हो चक: ह। ै एक तो बढ़ते िशSा के □तर, ु Xयापा/रक गितिविधय", शहरीकरण आिद कारण" से समाज म ; बहभािषकता म; बढ़ो□री हई ह, ै वही दसरी c c ू ओर अ□पस□यक भाषा-भाषी लोग शैिSक, सामािजक आिथाक आिद कारण" से मानक भाषाओ को ं ं सीख रह े ह ै और आिथाक शैिSक मह2व क: □भ2वशाली भाषाओ से आक□ होकर भाषा प/रवता न तेजी ृ ु ं से कर रह े ह। ै आगे चलकर उनक: नई पीढ़ी अपनी मलभाषा (Native Language) का □योग पण। □प से ू ू बद कर द े रही ह। ै इससे िवरोधाभास यह हो रहा ह ै िक बहभाषी लोगो म; वि□ हई ह ै और भाषाएँ कम हो c c ृ ं रही ह। ै एक अनमान के िहसाब से □2यके चौदह िदन" म; एक भाषा मर जाती ह। ै यिद यह □म जारी रहता ु ह ै तो अगली शताEदी तक िव□ म; उपलEध लगभग 7000 भाषाओ मे से िसफ। आधी ही रह जाय;गी ं (Rymer, 2012) । हम जानते ह ै िक भाषा क: हािन जैिविविवधता क: हािन से कम घातक नहz ह े (Muhlhausler, 1996)। अतः भाषाई पा/रि□थितक: म; सतलन बना रह े इस हते िशSक" को िवशेष□प ु ु ं से बहभािषकता क: समझ होनी चािहए और िव□□लय म; िव□□□थाय" #ारा िकसी भी भाषा के □योग के c □ित उदार होना चिहए। िशSक" म; यह जाग□कता होना अित अिनवाय। ह ै िक ि#भािषकता य बहभािषकता हािनकारक नहz , बि□क िशSा म; तो यह एक ससाधन ह। ै लेिकन दसरी भाषा का □□न c ं ू □थम भाषा क: क:मत पर नहz होना चिहए। िशSक" व िव□□लय" को धना2मक ि#भािषकता को □□2सािहत करना चािहए न िक ऋणा2मक ि#भािषकता को। धना2मक ि#भािषकता से ता2पय। यह ह ै िक उ□राख□ड म िव□□व□□लय 50 ु CPS -1 िव□□थ□ दसरी भाषा को सीखते हए अपनी □थम भाषा को बनाय े रखते ह ै य उसम; भी िवकास करते ह ै c ू (Lambert, 1975). 3.9]_`□□!" 1. भाषाई पा!रिwथितक5 (Language Ecology)- एक िवषय जो िविभ□न भाषाओ क: उनके ं पया।वरण म; उनक: ि□थित का अVययन करता ह। ै 2. समा-िभाषक (Sociolinguistic)- भाषा के सामािजक पS से स$बिधत। ं 3. □शासक5य भाषा (official Language)- जो भाषा □शासन के काम काज क: भाषा हो। 4. बह-सािwकितक (Multicultural)- कई स□कितय" क: िवशेषताओ को समािहत िकए हए। c ृ ृ k ं ं ं 5. अिभवि□ (Attitude)- िकसी व□त और Xयि के िवषय म; सोचने और िव□□स कारेन क ृ ु □□□कोण। 6. प□पन: अनकल मौसम पाकर िवकिसत होना ु ु ू 7. मलभाषा (Native Language)- जौ भाषा Xयि िकसी □थान िवशेष का वासी होने के ू कारण ब□पन से □योग कता। ह। ै 8. धना□मक िqभािषकता (Additive Bilingualism)-दसरी भाषा म; □□नाजा।न □थम भाषा ू को भी बनाय े रखे। 9. □योगशा (Pragmatics)-भाषाशा□ क: एक शाखा जो भाषा का िकसी सदभ। िवशेष म; ं □योग के तरीक" का अVययन करती ह। ै 3.10 bc□□□ □d□ # M□ 1. समा-िभाषक (Sociolinguistic) □□□कोण से भाषा िकसी समाज के िवचार", मा□यताओ, ं िव□□स", □तीक", सवाद व सामािजक रीत /रवाज" क: वाहक मानी जाती ह। ै ं 2. भारत म; लगभग 1000 भाषाएँ व बोिलया □योग क: जाती ह? ै ं 3. □थम भाषा य मातभाषा ही समझ का सबसे अ□छा माVयम होती ह? ै ृ 4. िहदी

व उद । उ□र □दशे क: □□शासिनक भाषाएँ ह?ै ं ृ 5. पराभिाषकि-शिSणशा□ (Translanguaging Pedagogy) उस ि□थित को कहग; े जब िशिSक िव□□थ□ को वह भाषा □योग करने द े िजसे िव□□थ□ सबसे अिधक और अ□छे से जानता ह।ै यह िवचाधारा कS◌ा िशSण म; भाषा उदारता और िकसी एक माVयम भाषा पर िनभारता से मि म; ु िव□□स करती ह।ै 6. बहभिाषकता के दो स□□ना2मक लाभ: c ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 51 ु CPS -1 a. तािका◌क Sमता का िवकास b. उ□च-स□□ना2मक Sमताए म; बढो□री। ं ं 7. उद । भाषा का ज□म भारत देश म; हआ? c ृ 8. भाषा □□मण म; िवÈेषण और िनय□ण। से दो त2व ह?ै ं 9. अनवाद या अनकित एक बहभिाषक कौशल ह।ै c ृ ु ु 10. िव□□□थाय" क: प□भिम क: समझ ही आपको सपणा(Complete) िशिSक बनाती ह।ै ृ ृ ृ ं 3.11 □N`□ efNg □h" □ '□ $" '□i□□□f" □ 1. BBC (2015). Uncommon tongue: Pakistan's confusing move to Urdu. Dated 12 September 2015, available on http://www.bbc.com/news/world- asia-34215293. 2. Bialystock, E. (1991).

Plagiarism detected: **0.02%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… id: **64**

Language processing in bilingual children. Cambridge: Cambridge University Press.

3. Borodotsky, L. (

Plagiarism detected: **0.03%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… id: **65**

2001). Does Language Shape Thought?: Mandarin and English Speakers' Conceptions of Time. Cognitive Psychology 43, 1

–22 4. Borodotsky, L. (2009). How does our language shape the way we think? (Conversation dated 06/11/2009) available on https://www.edge.org/conversation/lera_boroditsky-how-does-our- language-shape-the-way-we-think 5. Bowerman, M. & Levinson, S. C. (2001). Introduction. In M. Bowerman and

Plagiarism detected: **0.04%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… + 4 resources! id: **66**

S. C. Levinson (Eds.). Language acquisition and conceptual development. Cambridge: Cambridge University press. 6. Cook, V. J. (2002). Portraits of the L2 User.

Clevedon: Multilingual Matters.

Plagiarism detected: **0.07%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… + 2 resources! id: **67**

7. Cummins, J. (1981). The role of primary language development in promoting educational success for language minority students. In California State Department of Education (Ed.), Schooling and language minority students: A theoretical framework (pp. 3-49). Los Angeles: Evaluation, Dissemination and Assessment Center,

California State University. उ□राख□ड म िव□□व□□लय 52 ु CPS -1 8. Dialects of Uttarakhand. Retrieved from http://www.uttaranchal.org.uk/dialects.php 9. Dua, H. R. (

Plagiarism detected: **0.02%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… id: **68**

2008). Ecology of multilingualism: language, culture and society. Mysore: yashoda

publication. 10. Edward, J. (2010). Language diversity in the classroom. Bristol (UK): Multilingual Matters. st 11.

Plagiarism detected: **0.05%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… + 6 resources! id: **69**

Garcia, O. (2009). Bilingual education in 21 century: global perspective. West Sussex(UK): Wiley-Blackwell. 12. Garcia, O., and Wei, L. (2014). Translanguaging: Language, Bilingualism and Education. New York:

Palgrave Macmillan. 13. Grosjean, F. (2016). What is translanguaging?: An interview with Ofelia García (March, 02 2016). Psychology Today. Retrieved from https://www.psychologytoday.com/blog/life-bilingual/201603/what-is-translanguaging 14. Lambert, W. E. (

Plagiarism detected: **0.03%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… id: **70**

1975). Culture and language as factors in learning and education. In A. Wolfgang (Ed.). Education of Immigrant Students

Toronto: O.I.S.E 15. Lars, A. and Trudgill, P. (1990). Bad Language. Oxford: Blackwell. 16. Muhlhausler,

Plagiarism detected: **0.03%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… id: **71**

P. (1996). Linguistic ecology: language change and linguistic imperialism in the pacific region. London: Routledge.

17. NCERT (2005). National Curriculum Framework, 2005. New Delhi: NCERT. 18. Rymer, R. (2012). Vanishing Voices, National Geographic (July). Available on http://ngm.nationalgeographic.com/2012/07/vanishing-languages/rymer-text 3.12 □ □O□L□# □d N 1. बहभिाषकता □या ह?ै और यह िकस □कार से एक ससाधन हो सकती ह?ै c ं 2. कS◌ा म; भाषाई िविभ□नता का वणान करते हए, ब□च" क: भाषाई प□भिम को समझन े क: c ृ ू िविधय" क:

िववेचना िकिजए। उ□राख□ड म िव□□व□□लय 53 ृ CPS -1 □□□□ 4 - घ□ □□ □□□□ □□ (□□) □□ □□□□ ((□□) □□ □□□□ +□, घ□ □□ □□□□)□ □□□ Home Language vs School Language (School Language vs Home Language or

Quotes detected: **0%**

id: **72**

‘Dialects’

4.1 □□तावना 4.2 घर क: भाषा 4.3 घर क: भाषा (मातभाषा) का मह2व ृ 4.4 घर क: भाषा बनाम िव□□लय क: भाषा 4.5 िशS ा के माVयम के □प म; मातभाषा का मह2व ृ 4.6 साराश ं 4.7 सदभ। Jथ सची ू ं ं 4.8 िनबधा2मक □H ं 4.1 □□□□□ □ िपछले इकाई म; आपने बहभिाषकता (Multilingualism) और कSा-कS म; बहभिाषक प/िर□थितयाँ c c होने के बावजद कै से िव□□□थाय" को िशिSत िकया जाय के बारे म; अVययन िकया । इस अVयाय म; आप ू घर क: भाषा या मातभाषा और िव□□लय म; इ□तेमाल क: जाने वाली भाषा के बारे म; अVययन कर;गे। ृ िश Sा और िशS ण □□□ या िब ना सचनाओ (Information) तथा िवच ार" (Thoughts) के ू ं आदान □दान के सभव नहz ह।ै िशS क या िव□ ाथ□ होने के नाते आप अपने □धानाचाय । से अथवा छा□" ं से कछ न कछ कहते ह □ या िव□□थ□ आपसे कछ पछते ह □ या □धानाचाय। बलाकर आपको आदशे दते ेह,□ ु ु ु ू ु □शसा या आलोचना करते ह,□ उपरो□ त सभी ि□ याओ म; िकस ी न िकसी माVय म क: आव□ यकता होती ं ं ह।ै जैसे - िलख कर, सके त #ारा, बोलकर या अ□य िकसी माVयम #ारा। इन सब के िलए आप िकस ी न ं िकसी भाषा का □योग आव□ यक □प से कर;गे। िवच ार" के आदान □दान के िलए िकस ी भाषा का □□न अ2य□त आव□यक ह।ै सामा□यतः यह दखे ने म; आया ह ै िक एक छोटा ब□चा अपने घर म ; िजस तरह क: भाषा म; समवाद □थािपत करन ेका अGय□त होता ह ै उस तरह क: भाषा का □योग िव□□लय" म; एव ं कशाओ म; होता ही नहz ह ै । जब वह इस तरह क: प/िर□थित से दो- चार होता ह ै तो उसका आ2मिव□□स ं डगमगा जाता ह ै और वह िव□□लयी ि□याकलाप" से क□नी काटन ेलगता ह ै । यिद िशSक िव□□थ□ के उ□राख□ड म िव□□व□□लय 54 ृ CPS -1 इस तरह क: सम□या को Vयान म; रखे तो काफ: हद तक सम□या का समाधान िकया जा सकता ह।ै िक□त ु दभा।»य से हमारे यहाँ के िशSा Xयव□था म; इस पर Vयान न देन ेक: पर$परा ही िवकिसत हो गई ह।ै कई ु मामल" म; तो मातभाषा या घर क: भाषा म; सवाद करने क: ि□थित म; िव□□□थाय" को दि□डत करने के ृ ं मामले भी □काश म; आय ; ह ै । □□ तत इकाई म; आप घर क: भाषा (मातभाषा) का अथ।, मह2 व और िव □□लय क: भाषा का ृ ु अिभ□□य तथा िव□□लय भाषा बनाम घर क: भाषा का िव□ तार से अV ययन कर;गे । 4.2 घ□ #" □□□□ (The language of Home) घर क: भाषा से ता2पय। उस भाषा से ह ै जो ब□चा अपने घर पर बोलता ह ै । यिद दसरी भाषा म; कहा जाय ू तो यह िक ब□चा िजस भाषा म; अपने भाई , बहन और माता –िपता के साथ सवाद □थािपत करता ह।ै ं मातभाषा ब□च ा अपनी मा से सीखता ह ै । पर मा क: भाषा को मातभाषा नहz कहते ह।ै ब□च ा ज□म के ृ ृ ं ं बाद अपने प/रवेश से जो भाषा सीखता ह,ै उसे मातभाषा कहते ह।ै मातभाषा ब□च ेको उपहार □व □प ृ ृ िमल ती ह।ै माता, िपत ा, भाई, बहन या घर के अ□य बड़े लोग ब□च ेको भाषा का स□क ार दते ेह।ै ं भािषिव□□□नय" के अनसार ब□च" को ऐसी भाषा म; पढ़ाने के िवचार का समथन करते ह □ जो ु ब□चे आसानी से समझते ह"। वे मानते ह □ िक ब□चा जब िव□□लय म; आता ह ै तो अपने सािमािजक- सा□िकतक प/रवेश से काफ: कछ सीखकर आता ह।ै इस सीखन ेम; उसके घर क: भाषा भी शािमल होती ृ ु ं ह।ै इसिलए ब□च" को श□आती कSाओ म; उनक: भाषा म; ही पढ़ाना चािहए। इससे ब□च" का िशSण ु ं एक ऐसी भाषा म; होना सिनियत िकया जा सके गा िजसके साथ वे सहज ह"गे। यिान सनकर समझने वाले ु ु □तर तक उनका प/रचय इस भाषा से होगा। घर क: भाषा के साथ खास बात यह होती ह ै िक ब□चा इस भाषा को सहज़ता (Effortlessly) के साथ आस पास के माहौल (Environment) से सीखता ह।ै दसरे ू शEद" म; यिद कहा जाय तो ब□चा घर क: भाषा को इस तरह से सीखता ह ै िक इसम; सीखने जैसी कोई बात ही नहz रह जाती ह ै । इस बात म; कहz दो राय नहz ह ै िक छा□ अपना अिधकाश समय घर और ं समदाय म; अनौपचा/रक (Informal) □प से सीखने म; लगाते ह।□ हािलाक, पाठयप□तक को ही िनद८श" ृ ु ु ं का म□य मानन ेक: □वि□ का अथ। यह ह ै िक छा□ िजस कौशल, □□न और अनभव" के साथ कSा म ; ृ ु ु आते ह,□ िशSक उ□ह ; अनदखे ा कर सकते ह।□ ब□चे जब पहली बार िव□□लय आते ह,□ तो िजन अप/िरचत लोग", िदनचया। और भाषा से उनका सामना होता ह,ै उससे वे अिचभत हो जाते ह □ । िव□□लय के िशSक ं िव□□□थाय" के □□त सा□िकतक अGयास" और भाषाओ क: िविवधता को मह2व दके र, उ□ह ; इस नए ृ ं ं माहौल म; ¾यादा सिरSत महसस करा सकते ह।□ ब□च" को हर िदन घर-आधा/रत िशSा और िव□□लय- ु ू आधा/रत िशSा के बीच एक पल पार करना पड़ता ह।ै ु उ□राख□ड म िव□□व□□लय 55 ु CPS -1 अ&य ास □(1. घर क: भाषा से आप □या समझते ह □ ? 2. आप अपन ेिव□□थ□ के उसके घर के भाषा एव मानक भाषा म; सामज□य कै से □थािपत कर;गे ? ं ं 4.3 घ□ #" □□□□ (□□□□□□□□) #□ □हLL□(Importance of home language (Mother tongue) भाषा समाज क: स□क ित का आव□ यक त2 व ह।ै वा□ तव म; भाषा सामािजक सगठन (Social ृ ं ं Organisation) क: सभी ि□ याओ(activities) का आधार ह।ै Xय ि□ त क: □2 यके ि□य ा पर भाषा का ं □भाव पड़ता ह ै और वह जो भी ि□ या करता ह,ै उसम; मह2 वपण। भिमक ा िनभ ाती ह।ै यहा एक त□य पर ू ू ं Vयान दने ा ज□री ह ै िक ब□चा अपने लबे जीवनकाल म; अ□य भाषाओ और स□िकतय" (Cultures) के ृ ं ं ं सपक। म; भी आयेगा। इसिलए हम; उसे अ□य भाषाओ को सीखने के िलए तैयार करना ज□री ह।ै िजसक: ं ं ज□रत उ□ह ; भिवqय म; होगी। उदाहरण के तौर पर िहदी, अJजे ी इ2यािद। इसके अभाव म; ब□च" को कई ं ं तरह क: सम□याओ का सामना करना होता ह ै िक □य"िक उनके िशSक ब□च"

को Sि□□य भाषाओ म; ं ं समझाते ह □ और उनक: िकताब; िहदी या अJेजी म; होती ह।□ अJेजी पढ़ाने वाली ि□थित तो और भी ं ं ं ख़तरनाक होती ह ै ब□चे को हर शEद का िहदी म; अनवाद करके पढ़ना होता ह।ै मैनगो मतलब आम, ु ं वाटर मतलब पानी । ऐसी ि□थित म; एक ब□चे को कई तरह क: चनौती (Challenges) का सामना करना ु होता ह ै और वह उस भाषा म; अपनी □□च खो दते ा ह।ै ब□च" को सही तरीके से पढ़ना िसखाना भी ज□री ह।ै पढ़ने को समझ के साथ जोड़कर देखने के िलए □□2सािहत करन े क: ज□रत ह।ै उनको उदाहरण" के माVयम

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala id: **73**

से भाषा का इ□तेमाल करन े क: कला स े अवगत कराना चािहए। मसलन समझ का पढ़ने के साथ वेसा ही /र□ता ह ै जैस

ा सनने और समझने का ह।ै ु यानी दोन" साथ-साथ चलन े वाली □□□याए ह।□ िन$न िब□दओ के आधार पर मातभाषा िशS ा के महËव ृ ं ं ु को समझा जा सकता ह।ै 1. िश6 ा का आधार (Base of Education) – बालक क: मातभाषा िशS ा का आधार होती ृ ह।ै उसे एक □ वत□ िव षय के □प म; अV यापन के साथ-साथ िशS ा के मा×य म के □प म; भी ं □व ीकार करना चािह ए । बालक को िलख ना और पढ़ना िसख ाने के िलए भाषा िशS ण क: आव□य कता होती ह।ै भाषा िशS ा म; मातभाषा को ही □व ीकार करना अिध क उिच त होता ह।ै ृ 2. अिभ□ य ि|त म/ wव ािभावक ता (Naturality in Expression)– एक बालक के िलए अपन े िवच ार अिभX य□त करने हते मातभाषा सबसे उपय□ त भाषा होती ह।ै बालक अपन े िवच ार" ृ ु ु और भावनाओ को सरल और □प qट □प से मातभाषा म; □कट कर सकता ह।ै ऐसा वह अ□य ृ ं िकस ी भाषा म; नहz कर सकता ह।ै इसिलए मातभाषा से िवच ार अिभX यि□ त म; □व ािभावक ता ृ आती ह।ै उ□राख□ड म िव□□व□□लय 56 ु CPS -1 3. मातभाषा □भावो□प ादक (Effectivenes of Mothertongue) – बालक क: मातभाषा ृ ृ पर अ□छ ी पकड़ होती ह।ै मातभाषा म; बोलने के िलए बालक को िवच ार नहz करना पडता। ृ इससे अिभX यि□ त म; □व िभाव कता आती ह।ै जो दसर" पर □भाव डालने म; मह2व पणा िभमक ा ू ू ू िनभ ाती ह।ै इसिलए मातभाषा □भावो2 पादक होती ह।ै ृ 4. सरसता एव पण ता क5 अनिभत(The notion of simplicity and completeness) - ू ु ू ं Xय ि□त ज□म के बाद से ही मातभाषा का □योग करने लगता ह।ै Xय ि□ त चाह े िकत नी ही भाषाए ृ ं सीख जाए लेिकन उसे उसम; सरसता और पणाता क: अनिभत नहz होती ह।ै बालक को मातभाषा ृ ू ु ू के □□न से ही सरसता एव पणाता क: अनिभत होती ह।ै ू ु ू ं 5. सजना□म कता का िवक ास (Development of Creativity) – बालक क: सजना2म क ृ ृ शि□त का िवक ास मातभाषा म; ही अिधक होता ह।ै X यि□त चाह े िकत नी ही भाषाओ का □□न ृ ं □□Êत कर ले, लेिकन उनम; सािह2 य काय । करना बहत किठ न काया होता ह े । मातभाषा म; सािह2 य c ृ कायाकरना सरल होता ह े □ य"िक वह बचपन से ही उसके साहचय । म; होता ह।ै 6. □य ि|त के िवक ास म/ सहायक (Helpful in personality development) – प/रव ार और समाज Xय ि□त क: □थम पाठशाला होती ह।ै प/रव ार और समाज से ही वह अ□छ े स□क ार ं गहण करता ह।ै यह काया मातभाषा म; ही िक या जाता ह।ै माता-िपत ा और प/रव ार वाले मातभाषा ृ ृ ृ म; ही बालक को अ□ छे बरे म; अ□त र करना िसख ाते ह।ै यह उनके Xय ि□ त2 व के िवक ास म; ु सहायक होता ह।ै 7. मातभाषा हमारी

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.learncbse.in/class-8-hindi-chapter-9… id: **74**

स□क ित का अिभ□ न होती है। िकस ी भी मानव स□ कित को समझने और ृ ृ ृ ं ं आ2म सात करन े के िल ए

साw कितक एकता म/ सहायक (Helpful in Cultural Unity) ृ ं आव□ यक ह ै िक हम; पहले उनक: भाषा को समझे। मातभाषा #ारा ही मनqय एक दसरे को ृ ु ू समझते ह ै और एक दसरे से अपने िवच ार" व भावनाओ का आदान □दान करते ह।ै मातभाषा ृ ं ू #ारा ही हम अपने रीित /रव ाज" को एक पीढी से दसरी पीढी तक पहचाते ह।ै मातभाषा #ारा ही c ृ ं ू Xय ि□त एक दसरे से स$प का करते ह।ै मातभाषा ही मानव सG यता और स□क ित का आधार ह।ै ृ ृ ं ू मातभाषा के िब ना मानव स□क ित क: क□प ना भी नहz क: जा सकती ह।ै ृ ृ ं 8. सामािजक कशलता (Social Expertise)– सामािजक जीवनयापन के िलए X यि□त क: ु मातभाषा का □□न आव□य क ह े । मातभाषा #ारा ही Xय ि□ त का मािनसक और भावना2 मक ृ ृ िवक ा

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindialphabet.com/ id: **75**

स होता ह।ै इसके #ारा ही Xय ि□ त के Xय ि□ त2 व का गठन होता ह।ै मातभाषा #ारा ही Xय ि□त ृ का नै तक िवक ास होता ह

।ै समाज म ; मातभाषा ही Xय ि□ त के िवच ार" के आदान □दान का ृ माVय म होती ह।ै इससे सामािज क कशलता आती ह।ै ु 9. भािवभ□ य ि|त का साधन (Instrument of self expression) – X यि□त के िलए भािवभX यि□त का सव□तम साधन मातभाषा ह।ै X यि□ त मातभाषा से अपन े िवच ार" और ृ ृ भावनाओ को सरल और □ पq ट तरीके से Xय □त कर सकता ह।ै मातभाषा म; बोलने के िल ए उसे ृ ं िवच ार करने क: आव□य कता नहz होती ह।ै वह सहज भाव से िवच ार अिभX य □ त कर सकता ह।ै उ□राख□ड म िव□□व□□लय 57 ु CPS -1 Xय ि□त के शारी/रक और मािनसक िवक ास के साथ-साथ मातभाषा ही X यि□ त का िवच ार" और ृ भािवभX यि□त के □व ािभावक साधन के □प म; िवक िस त होती रहती ह।ै अ&यास □(3. घर क: भाषा के मह2व पर □काश डाल; ? 4.

Quotes detected: **0.02%** id: **76**

"भाषा समाज क: स□क ित का आव□ यक त2 व ह"

ै । इस कथन के सदभ । म; अपन े िवचार Xय ृ ं ं कर; । 4.4 घ□ #" □□□□ □ □□ □□}□!□ #" □□□□ (Home Language Vs School Language) इसम; कोई सदहे नहz िक □□थिमक िव□□लय म; पढ़न े वाले अिधकतम ब□चे अपन े घर-प/रवार, समदाय म; ु ं

Plagiarism detected: **0.05%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… id: **77**

बोली जाने वाली भाषा ही बोलते ह।□ यह भाषा िह□दी के □वीकत मानक खड़ी बोली से इतर होती ह।ै ृ हमारे □दशे म; बोली जाने वाली ऐसी भाषाओ म;

अवधी, ·ज, भोजपरी, ब□दले ी, कमाऊँ नी, गढ़वाली ु ु ु ं आिद □मख ह।□ □कल" म; श□आत से ही ब□च" को मानक भाषा सीखाने पर जोर िदया जाने लगता ह ै ु ू ु िजससे ब□चे भाषा सीखन े से कतराने लगते ह।□ ब□चे घर पर बोली जाने वाली भाषा के असर के कारण मानक भाषा के □योग म; "अिश□याँ " करते ह □ - "उसने कही", "हम लोग" ने जाना ह"ै आिद। इस पर ु उ□ह ; डाट पड़ती ह,ै जबिक श□ म; ही श□ता

Plagiarism detected: **0.05%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 3 resources! id: **78**

पर जोर देन े से भाषा सीखने म; एक बड़ी □कावट खड़ी हो ं ु ु जाती ह।ै इसका एक दqप/रणाम यह भी होता ह ै िक

अVयापक िव□□□थाय" को बार –बार टोकने लगते ह □ । ु िशSक" क: बार-बार टोका-टाक: और चप कराने से ब□च" म; घर क: भाषा के □□त हीनभावना भी पैदा ु हो जाती ह ै और वे आ2मिव□□स के साथ खलकर अपनी बात नहz कह पाते। कS ा म; साथाक / अथापणा ु ू बातचीत के पयाा□ अवसर नहz उपलEध ह।□ इस तरह का दबाव या अनशासन रहता ह ै िक ब□चे चपचाप ु ु काया कर;। भाषा सीखाने म; मौिखक पS क: अ□सर उपेS ा क: जाती ह।ै इससे ब□चे आगे क: कS ाओ म; ं अपनी बात कहने म; िहचकते ह।□ इससे मौिखक अिभXयि (oral expression) जैसे सश माVयम का □योग और िवकास नहz हो पाता। जबिक यह भाषा िशSण का ज□री पहल ह।ै ू ब□चे अपने घर-प/रवेश और समदाय (Community) म; हो रही बात" को Vयान से सनते रहते ु ु ह □ तथा उनके साथ हो रह े हाव-भाव" को दखे ते-समझते ह।□ हाव भाव के साथ □योग

Plagiarism detected: **0.03%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala id: **79**

होने वाले सके त" के ं साथ अथा समझते और िनकालते ह।□ श□ म; ब□चे सके त" के आधार पर

बात को पकड़ने का □यास करते ु ं ह।□ □वय भी वे हाव-भाव" एव सके त" का माVयम के □प म; □योग करते ह।□ धीरे -धीरे वे कहने क: कोिशश" ं ं ं और उनके प/रणाम" को जानने लगते ह।□ िफर वे अपने आस-पास □चिलत शEद" को पकड़ना श□ कर दते े ु ह।□ शEद गजते समय वे उस दौरान आस-पास हो रह े Xयवहार" को भी दखे ते ह।□ एक दौर ऐसा आता ह ै जब ू उ□राख□ड म िव□□व□□लय 58 ु CPS -1 वे सनना-समझना तेज कर दते े ह।□ इस □कार वे सनकर, समझने क: ओर बढ़ते ह।□ जब उ□ह ; यह समझ ु ु आती ह ैिक वे शEद" को बोलकर कछ हािसल कर सकते ह □ तो वे उनका उपयोग करन े लगते ह।□ □मश: ु उनका काम चलाऊ शEदभडार बढ़ता जाता ह।ै ब□चे अपन े कथन" और उनके □भाव से अपनी □वय क: ं ं एक अलग तरह भाषा िवकिसत करते ह।□ िव□□लय आने से पहले ब□चे काफ: कछ बोल सकते ह।□ Vयान ु देन े वाली बात यह ह ै िक ब□चा भाषा ऐसे समय स□दभ । से सीखता ह,ै जहा उसका Vयान भाषा क; िR®त नहz ं ह।ै भाषा सीखने म; सनने बोलने, पढ़ने-लिखने का □म तो ह,ै लेिकन दरअसल हमेशा ऐसा ही नहz होता ु ह।ै □या जब

Quotes detected: **0%** id: **80**

'सनना'

होता ह ै तो

Quotes detected: **0%** id: **81**

'बोलना'

□का रहता ह ै या

Quotes detected: **0%** id: **82**

'बोलने'

के समय

Quotes detected: **0%** id: **83**

'सनना'

□थिगत रहता ह ै ? ु ु यह सब साथ-साथ भी चलता रहता ह ै - सनना, बोलना, पढ़ना इ2यािद। ु □या िव□□लय म; ब□च" को श□ म; सनने-बोलन े (Listening-speaking) के पयाा□ अवसर िदये ु ु जाते ह?□ ब□चा जब िव□□लय म; पहली बार आता ह

े तो पर$परागत िशSण (Conventional teaching) म; िशSक उससे सीधे िलखने-पढ़ने का काय। कराने लगते ह।□ वह समझ ही नहz पाता िक □य" कछ आकितया जबरन उसे िदखाई पढ़ाई और िलखाई जा रही ह।□ कहने क: आव□यकता नहz ह ै िक यही ृ ु ं मल सम□या ह ै । वा□तव म; वह घर जैसा वातावरण चाहता ह।ै िव□□लय नामक इस जगह पर उसके अपने ू अनभव" को सनने वाला कोई नहz ह,ै उसक:

Quotes detected: **0%** id: **84**

'अपनी भाषा'

के िलय े कोई जगह नहz होती। अVयापक के ु ु िलये ज□री ह ै िक पहले वह ब□चे क: भाषा को □वीकार करे , तब उसे अपनी िव□□लय क: भाषा (मानक भाषा) क: ओर ले जाय।े िव□□लय म; ब□च" को िव□□लय क: भाषा (मानक भाषा) सनने, समझने, ु बोलन े के अिधक मौके देना चािहय।े लेिकन इसका मतलब यह नहz िक ब□च" क: घरेल भाषा (Home ू language) को छोटा माना जाय या उपेिSत िकया जाय। िश6क क5 भिमका (The Role of the Teacher) ू िशSक" #ारा यह □म अपनाने से ब□च" को शायद अिधक मजा आयेगा और भाषा सीखने क: गित तीÛ होगी। कS◌ा म; ऐसे वा□तिवक और रोचक स□दभ। बनाये जाय; िजनम; तरह-तरह से भाषा का उपयोग करना हो। ब□च" के अनभव सनना, उनम; आपस म;

Quotes detected: **0%** id: **85**

'गपशप'

करवाना, उ□ह ; कहािनया-किवताए सनाना, ु ु ु ं ं कहािनया-किवताए कहलवाना ऐसी ही गितिविधया ह।ै इनके ज/रये उ□ह ; मौिखक अिभXयि के िलये ं ं ं □□/रत िकया जा सकता ह।ै मौिखक अिभXयि के साथ उ□ह ; अिभनय या अग - सचालन के मौके देना भी ं ं ज□री ह।ै ब□च" के पसद के िवषय" पर छोटे-छोटे भाषण देने के मौके भी िमलने चािहये। जब उ□ह ; लगेगा ं िक िव□□लय भी घर जैसा ह,ै यहाँ बहत मजेदार बात; िसखाई / कराई जाती ह,□ तो हमारा िव□□स ह ै िक वे c □वाभािवक □प से बोल;गे। ब□च" को िव□□लय व कS◌ा म; बातचीत के पया।□ मौके िदये जाय;। यह काय। उनक: भाषा के िवकास म ; मददगार होगा। बातचीत भाषा िसखान े का जादई माVयम ह।ै मौिखक ु अिभXयि के पया।□ अGयास के बाद ही िलिखत काय। क: ओर कदम बढ़ाना ठीक रहगे ◌ा। भाषा-□□न के स□दभ। म; िगजभाई #◌ारा 1932 म; ही कही गई एक और बात आज भी □□सिगक ह ै – ु ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 59 ु CPS -1 "इधर बालक" को ज□दी से ज□दी अSR□□न और अक□□न िदलाने का मोह बढ़ता जा रहा ह,ै हम; उस ं मोह को तोड़ना ह।ै हर कोई शाला म; और बाहर एक ही □H पछता ह:ै

Quotes detected: **0.04%** id: **86**

'इस शाला का अGयास□म □या ू ह?ै इस शाला म; बालक □या पढ़ते ह?□ िकतना सीखे ह?□ '

लेिकन कहz भी इस बात को लेकर पछताछ ू नहz क: जाती िक बालक" का िकतना िवकास हआ ह।ै हम; इस बात पर Vयान देना ह ै िक बालक" का c स$मान कै सा ह,ै िकस उ म; वे अSR□□न और अक□□न ले सकते ह।□ बालक क: □वाभािवक □िव□ और ृ ं शि को जान कर ही और उसके अनकल रह कर ही हम उसे □□न □दान कर सकते ह।□ ...... बालक को ु ू अSR□□न कराते समय आँख और □पश। का एक साथ उपयोग होना चािहए...... उ□ह ; अSR" क: पहचान का अवसर िदया जाना चािहए।" {

Quotes detected: **0.01%** id: **87**

'□□थिमक शाला म; िशSक, िगजभाई-Jथमाला-10',

□काशक: ु ं माटेसरी-बाल-िशSण-सिमित, राजलदसे र (च□) प. 62, 69} ृ ु ं यिद िगजभाई के इस कथन को Vयान म; रखते हए बात क: जाय तो यह बात □प□ □प से कही c ु जा सकती ह ै िक ब□चा जब िव□□लय म; आना □□र$भ करता ह ै तो उस के पास अपनी □वय क: भाषा ं पहले से होती ह,ै िजसका □योग वह अपनी समझ के मतािबक़ करता ह ै । उसके पास अपनी शEदावली ु या शEदकोष होता ह ै । िजस का □योग वह □मख तौर पर बोलचाल म; करता ह ै (कहते चल; िक अगर हम ु इस बात से सहमत ह □ तो हम; यह भी मानना होगा िक ब□चे का िदमाग उस समय एक कोरी □लेट नहz होता ह ै – उस पर भाषा-□□न के स□दभ। म; बहत कछ अिकत हो चका होता ह ै)। भाषा क: कS◌ा म; यिद c ु ु ं हम इस बात का Vयान रखते हए चल; तो ब□चे के साथ आदान-□दान सहज होने क: अिधक स$भावना c रहगे ◌ी। ब□चे के पास पहले से मौजद शEदावली को हम आधार बनाते ह □ तो उसक: □□च और Vयान तो ू हम खzच ही सकते ह,□ उसका िव□□स भी जीत सकते ह □ – और उसका आ2मिव□□स बढ़ा सकते ह।□ अब असली सम□या यह ह ै िक घर क: भाषा और िव□□लय भाषा म; सामज□य कै से □थािपत िकया जाय। ं इसके िलए खेल, कहािनयाँ और पहे िलय" के माVयम ह ै िजसके रा□ते हम ब□च" क: □िव□ के अनकल ृ ु ू काय। करते हए उनके भाषा-□□न म; सामज□य और सिम□ ला सकते ह।□ जाने-मान े िशSािवद □□.कqण c ृ ृ ं कमार अपन े लेख

Quotes detected: **0.01%** id: **88**

'कहानी कहाँ खो गई?'

म; हमारा Vयान इस ओर िदलाते ह िक ु "ब च" को कहानी सनाने (Story- telling) क: एक ल$बी पर$परा भारत म; रही ह.ै ... कहानी ु पर$परागत प म; िजन प/रि थितय" म; सनाई जाती थी, वे आज के पा/रवा/रक और सामािजक जीवन म; ु उपलEध नहz ह. .....लेिकन प/रवार और समाज क: नई प/रि थितय" म; ब च" को कहानी सनाने क: ु उतनी ही ज़ रत ह ै िजतनी पहले थी........[य"िक] लोक कथाओ और परीकथाओ क: सरचना छोटे ं ं ं ब च" क: सोचने क: शैली से मेल खाती ह,ै और यही इन कहािनय" के त छोटे ब च" के आकषाण का ख़ास आधार ह.ै ..... इन कहािनय" को सनते हए छोटे ब चे अपनी मातभाषा क: बिनयादी लय" के c ृ ु ु स$पका म; आते ह। शEद और वा य रचना का एक परा भ डार उनके हाथ लगता ह।ै इस भ डार से विचत ू ं रह जान े वाले ब चे कछ बड़े होकर जब पढ़ना और िलखना सीखते ह, तब उनके िलए भाषा एक िया क ु ं चनौती बन जाती ह।ै वह सहज ज़ रत या इ छा नहz बन पाती। बाद म; वे Vयानपवाक सनने, सयत ढग से ु ू ु ं ं उ राख ड म िव व लय 60 ु CPS -1 बोलन े या सवाद म; िह सा लेन े जैसी Sमताओ का िवकास नहz कर पाते।" (

Quotes detected: **0.01%** id: **89**

'दीवार का इ तेमाल और ं ं अ य लेख',

एकलXय का काशन, प 18-19). ृ . कqण कमार #ारा कही गई बात म; कछ अिधक जोड़ने क: आव यकता नहz ह ै – वे जो कह रह े ह, ृ ु ु उसम; भाषा-िशSण के िलए कहानी का मह2व प ह।ै कहानी सनाना भी एक कला ह ै और इस कला का ु योग यिद एक िशSक कS ा म; कर पाता ह ै तो उस भाषा के अलग-अलग पहल वह ब च" के िलए ू उजागर कर रहा होगा – िवशेष तौर से उ चारण, बोलने म; उतार-चढ़ाव तथा भाषा का वा य-िव यास इ2यािद । िशSक क: ओर से थोड़ी सी मेहनत क: जाए और इस ओर Vयान देने क: वि हो तो यक:नन ृ इस   या से ब चे बहत कछ हािसल कर सकते ह। मह2वपणा यह भी ह ै िक इसके चलते िशSक और c ु ू ब च" म; आ2मीयता का स$ब ध बनेगा। वह चाह े खेल-खेल म; भाषा- योग क: बात हो या िफर कहािनय"-पिहे लय" के माVयम से ब चे क: भाषा को सम करने क: बात, ये   याए ँ इस बात का ृ उदाहरण ह िक ब चे क:

Quotes detected: **0%** id: **90**

'क ची'

भाषा को िकस कार िव लय के औपचा/रकता भरे वातावरण म; भी थान िदया जा सकता ह।ै साथ ही इस बात क: ओर भी इशारा करती ह िक िकस कार उनक: भाषा के

Quotes detected: **0%** id: **91**

'क चेपन'

को प/रप वता क: ओर ले जाया जा सकता ह।ै भाषा- न के स दभा म; दो बात; समझना बेहद ज़ री होने के साथ- साथ मह2वपणा भी ह। पहली बात यह ू िक , िजतना अिधक हम ब चे को भाषा के स$पका म; आने के मौके दग; े (भाषा सननेि- लखेने-बोलने-पढ़ने ु के मौके) उतना ही अिधक सम उसक: शEदावली (Vocabulary) होगी और उतनी ही भाषा के ृ इ तेमाल क: गहरी समझ िवकिसत होगी। दसरा, यह सही ह ै िक एक िशSक पर पाठय म परा करने का ृ ू ू दबाव लगातार रहता ह ै मगर इस दबाव म; आए िबना, हो सके तो पाठय म (Curriculum) म; ही ृ गजाइश िनकालते हए, नहz तो उसके बाहर जाते हए भी, कछ भाषा स$ब धी काम हम ब च" के साथ c c ु ु ं कर; तो यक:नन उनक: भाषा स$ब धी दSताएँ (Language related competetncies) बेहतर ह"गी। आम तौर पर िव लय म; भाषा- न क: औपचा/रक श आत वणामाला से क: जाती ह।ै इसके कारण हम ु ब च" के पास पहले से उपलEध भाषा- न जो िक वह अपने माहौल म; सीखता ह ै और शEद-भ डार क: ओर Vयान नहz द े पाते। पढ़ान े के अपन े तरीक" म; हम; इस बात का Vयान रखन े क: कोिशश क: ओर बढ़ना चािहए तािक ब चे के पास पहले से उपलEध खजाने का लाभ भाषा-िशSण के िलए िमल पाए। अ&यास (5. भाषा के स दभा म; गीज भाई के िवचार" के मह2व को तिपािदत कर; । ? ू 6. "घर क: भाषा बनाम िव लय क: भाषा स$बिधत िविभ न आयाम" को आप िकस तरह से ं दखे ते ह ? प कर; । 7. भाषा   न के सदभ । म; िशSक क: भिमका कै सी होनी चािहए ? ू ं उ राख ड म िव व लय 61 ु CPS -1 4.5] k # w # x'   # hL (The Importance of m Mother Tongue as the Medium of Education) मातभाषा म; अ य िवष य" क: तरह एक िवष य ही नहz ह ै बि क यह सम त िव षय" के अV ययन का ृ माV य म भी ह।ै X यि त म; भाषा से सबिधत   न िज तना अिधक गहरा और Xय ापक होता ह,ै उतनी ही ं ं तीÛता और सरलता से अ य िवष य" का   नाजान करता ह।ै यिद X यि त को मातभाषा के अित/ र िकस ी ृ अ य भाषा म; िशS ण काया करवाया जाता ह,ै तो वह उतना वािभावक और बोधग$ य नहz होता ह ै िजत ना मातभाषा म;। अत: मातभाषा म; िशS ण न के वल X यि त के भाषायी और सािह ि2य क   न म; वि ृ ृ ृ करता ह ै बि क उसके अ य िव षय" के   न का मागा भी श त करता ह।ै बालक बचपन से ही मातभाषा ृ के साहचय । (association) म; रहता

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 2 resources! id: **92**

ह,ै इसिल ए उसका भाषायी   न स$प न और सम होता ह ै और ृ उसक: अिभ X यि त भी कर पाता ह।ै जैस

े-जैसे Xय ि त मातभाषा के माV यम से िशS ा Jहण करता जाता ृ ह‒ै वैसे वैसे उसक: भाषा और भी समथı और स$प न होती

Plagiarism detected: **0.08%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ + 5 resources! id: **93**

जाती ह।ै मातभाषा और िशS ण क: भाषा एक ृ होने से िशS ण मे सबध थािपत हो जाता ह।ै X यि त को जो कछ भी पढाया जाता ह ै वह सहज ही Jहण ं ं ु कर लेता ह ै और यह न थायी होता ह

।ै गाधी जी ने मातभाषा को Xय ि त के िलए बहत ही आव य क c ृ ं माना ह ै उ ह "ने कहा ह ै िक "मनq य के मानिस क िवक ास के िल ए मातभाषा उतनी ही आव यक ह ै िज तना ृ ु िक ब च े के शारी/रक िवक ास के िलए मातभाषा माता का दध" । गाधीजी मातभाषा को िशS ा का ृ ृ ं ू माVय म बनान े के पS म; थे। उ च िशS ा का माVय म मातभाषा न होने से द:खी होकर गाधीजी कहा िक ृ ं ु "यिद म कछ िदन " के िलए तानाशाह हो जाउ तो मातभाषाओ को त2क ाल ही उ च िश S ा का माVय म ृ ु ं ं बना द। इसके िलए भले ही उन फे सर" को हटाना पडे जो अपने को मातभाषा म; पढाने मे असमथı कहने ृ ं ू म; गवı समझते ह ै । " अनेक यास" के बाद माV यिमक तर तक मातभाषाओ को िश S ा का माVय म ृ ं बनाया गया ह।ै लेिक न आज म; भी उ च िशS ा और िव व िव ालय िशS ा का माVय म अJेजी ही ह।ै ं इसक: वजह से भारत म; मातभाषाओ क: ि थि त दयनीय ह।ै भारत न-िव ान क: qट से आज भी ृ ं िपछड़ा हआ ह।ै जब तक मातभाषा को उ च िशS ा का माVय म नहz बना ि

Plagiarism detected: **0.08%** https://hindimatra.co.in/ka-se-shabd-hindi/ + 2 resources! id: **94**

द या जाता, तब तक न तो c ृ मातभाषा का िवक ास हो सकता ह ै ना ही देश क: उ न ित हो सकती ह।ै मातभाषा को उ च िशS ा का ृ ृ माVय म न बनाया जाने के पीछे यह तकı िद या जाता ह

ै िक भारत म; उ च त र क: पाठय प त क" का ु ु अभाव ह।ै मातभाषा को उ च िशS ा का माVय म बनाया जाने के बाद ही मातभाषा म; प तक; िल खी जा ृ ृ ु सकती ह।ै टैगोर न े इस सबध म; िलख ा ह ै िक "मातभाषा भाषा माVय म होने पर उसम; पाठय प त क; अपने ृ ृ ु ं ं आप िल खी जाएगी। जब वह माVय म नहz ह ै तो इसम; पाठय प त क; य " िलख ी जाएगी । पाठय प त क" ु ृ ु ु के अभाव म; मातभाषाओ को माVय म न बनाना वैसी ही बात ह ै जैसे वS उस समय तक न बढे जब तक ृ ृ ं पते पहले न िनक ल आये या स/रत ा अपना वाह रोक द ; जब तक उसके तट" का िनमाıण नहz हो जाये" अत: मातभाषा को उ च िशSा का माVयम बनाकर उसे अिधक स$प न और सम शाली बना सकते ह । ृ ृ उ राख ड म िव व लय 62 ु CPS -1 अ&यास (8. िशSा के माVयम के प म; मातभाषा के मह2व को तिपादत कर; । ? ृ 9. गाधी जी के मातभाषा के सदभı म; िवचार" को प कर; । ृ ं ं 4.6]N हमारे िशSा Xयव था के साथ गड़बड़ी यह ह ै िक हम पाठयप तक, कSाए और परीSा Xयव था क: ु ु ं ितकड़ी के दबाव के चलते हमारी िव लयी िशSा म; बहत कछ ह ै िजससे ब चे विचत रह जाते ह। c ु ं िव लय म; भाषा से स$ब बध- बधाए पाठय म के चलते ब चा अपनी वाभािवक, जीव त भाषा से ु ं ं दर होता चला जाता ह।ै िशSक होने के नाते यह भी हमारे िलए िवचारणीय म ह ै िक िव लयी िशSा ु ू के तहत इ तेमाल होने वाली भाषा क: औपचा/रकता का स$ब ध ब चे क: अनौपचा/रक भाषा क: जीव तता के साथ कै से थािपत िकया जाए । 4.7 N` e fNg h" 1. कमार, के . 2001, क ल क: िहदी, पटना: राजकमल। ु ू ं 2. कमार, . कqण , दीवार का इ तेमाल और अ य लेख, एकलXय का काशन, प 18-19 ृ ृ ु 3. चॉ$ क:, एन. 1959, /रXय ऑफ ि कनसı वबıल िबहेि वयर. ल »वेजेस 35.1.26-58 ू 4. चॉ$ क:, एन. 1996, पॉवसı एड पे टस: /रफले शस ऑन âमन नचे र एड द सोशल ु ं ं ं ू आडıर, िद ली: माVयम ब स। ु 5. चॉ$ क:, एन. 1965, आ पे टस ऑâफ द योरी ऑफ िसनटे स, क ि·ज: एम. आइ.। टी. ु स। 6. चॉ$ क:, एन. 1986, नॉलेज ऑफ ल »वेज, ययाकı : ागर। ू 7. दआ, एच. आर. 1985, ल »वेज Êलिनग इन इिडया, िद ली: हरनाम पिEलशसı। ं ं ु 8. हबे रमास, जे. 1998, ऑन द गमैिट स ऑफ क$यिनवेफशन, क ि·ज, मास: एम. आइ.। टी. ु स। 9. हबे रमास, जे. 1998, दी िफलॉि फकल िडसकोसı ऑफ मॉिडनाटी, क ि·ज, मास: एम. आइ.। टी. स। 10. िशSा म लय, िशSा आयोग कोठारी कमीशन 1964 -1966, िशSा एव राq° ीय िवकास, ं ं िशSा म लय, भारत सरकार 1966 ं उ राख ड म िव व लय 63 ु CPS -1 11. नेशनल पॉिलसी ऑन एजके शन, 1986, मानव ससाधन िवकास म लय, िशSा िवभाग, नयी ु ं ं िद ली। 12. पटनायक, डी. पी. 1981, म टीलगएिल¾म एड मदर-टग एजवेफशन, ऑ सपफोडı ु ु ं ं ं यिनविसıटी स। ू 13. पटनायक, डी. पी. 1986, टडी ऑफ ल »वेजेज, ए /रपोटı, नयी िद ली: एन.सी.इ.। आर.टी। 14. /रचäस, जे. सी. 1990, दी ल »वेज टीिचग मैि° स, कै ि·ज :कै ि·ज यिनविसıटी स। ू ं ृ 15. सायर, डी. 1924, दी इपैफ ट ऑâफ बिलगअिल¾म ऑन इटैिलज;स, ि·िटश जनıल ऑâफ ु ं ं साइकोलॉजी 14:25-38 16. 5ीधर, के .के . 1989, इि»लश इन इिडयन बाइिलिगल¾म ,नयी िद ली, मनोहर। ु ं ं ं 17. ितवारी, बी. एन., चतव°दी, एम. और िसह, बी. 1972 (सपादकगणद), भारतीय भाषा िव न ु ं ं ृ क: भिमका, िद ली : नेशनल पिEलिशग हाउस। ू ं 18. िसह, िनरजन कमार (2008).माQयिमक िवRालय MS िहदी िश'ण.जयपर: राज थान िहदी ु ु ं ं ं ं Jथ अकादमी ं 19. यने को, 2003, एजवेफशन इन ए म टीलगएल व डı, यने को एजके शन पोिजशन पेपर, ू ु ु ू ु ं पे/रस। 20. Xयोगो2सक:, एल. एस. 1978, माइड इन सोसायटी: दी डेवलपम;ट ऑâफ हायर ं साइकोलॉिजकल सेस, व फि·ज, मॉस: हावıड यिनविसıटी स। ू 21.

Quotes detected: **0.01%** id: **95**

'□□थिमक शाला म; िशSक, िगजभाई-Jथमाला-10',

□काशक: माटेसरी-बाल-िशSण- ृ ं ं सिमित, राजलदसे र (च□) ृ 22. इस वेबसाइट को ज□र देख; : http//www.languageindia.com 23.

Plagiarism detected: **0.02%** https://web-crawler.plagiarism-detector.com/ge… id: **96**

Kenner, C. (2000) Home Pages: Literacy Links for Bilingual Children. Stoke-on-Trent: Trentham Books.

24. Dubey, Pramila (2006). Teaching of English. Jaipur: Shiksha prakashan 25. Mukharjee, H.D. (2013). Education for fullness. Uk: Routledge 4.8 □ □O□L□# □d N 1. मातभाषा के महËव का उ□लेख क:िजए । ृ 2. मातभाषा िशSण के उ□□□ य" का वणान करो । ृ 3. "िशS◌ा का माVयम मातभाषा होनी चािहए । " इस कथन पर अपने िवचार का उ□लेख करो। ृ उ□राख□ड म िव□□व□□लय 64 ृ CPS -1 □□□□ 5 - ,□+□ □□□□ □: ;□ , (□□)□ □□□□ □: □ = □□ □□□ +□, घ□ □□ □□□□)□ □□□ □: □ = □□ □□□, @)A+□□)□ □,□ □□ B□□C , +□C□□□□)□ D□ +□C□□□□ □□ B□□C (Power dynamics of the 'Standard' Language as the School Language vs. Home Language or 'Dialects'; (Deficit Theory; Discontinuity Theory) 5.1 □□त ◌ावना 5.2 उ□□□ य 5.3 मानक भाषा के □प म; िव□□लयी भाषा क: शि -िगतक: बनाम घर क: भाषा 5.4 मानक भाषा एव घर के भाषा के मVय #□द को कम करने म; िशSक क: भिमका ू ं 5.5 िनरतरता एव गैर िनरतरता का िस□□त ं ं ं ं ं 5.6 □यनता या कमी का िस□□त ू ं 5.7 साराश ं 5.8 शEद ◌ावली 5.9 सदभा Jथ सची ू ं ं 5.10 िनबधा2म क □H ं 5.1 □□□ □□ □ भाषा एक साधन ह ै िजसके #◌ारा मनqय अपने भाव" या िवचार" को अिभXय करता ह ै । भाषा ज□मजात ृ नहz होती ह ै , इसका □योग कहने , िलखने या सके त के उ□□□ य से िकया जाता ह ै । यह सतत िवकास के ं □म #◌ारा □□□ िकया गया होता ह ै। दसरे शEद" म; यह कहा जा सकता ह िैक भाषा मानव क: सामािजकता ू एव बौि□कता के गभ । से उ2प□न होता ह ै । इसके #◌ारा मानव आज आिथाक, वै□□□नक , राq°ीय सामािजक ं एव अ□तराq°ीय सभी S◌े□" म; अपने िवचार के आदान- □दान म; समथा ह □ । भाषा मनqय के िलए एक Vविन ृ ं सके त क: तरह ह ै । इसका िवचार" के िलये भी □योग िकया जाता ह,ै इसी कारण मनqय सबको परख पाता ृ ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 65 ृ CPS -1 ह ै। अब यहा एक बहत मह2वपणा □H उठता ह ै िक □या िनरथाक शEद सके त भी भाषा ही ह ै । इस □H के c ू ं ं उ□र म; यह कहा जा सकता ह ै िक भाषा का □योग सापेS □तर म; िलया जाता ह ै । भाषा समाज सापेS होती ह ै एव मानव सापेS भी । समाज एव मानव से िवभ होकर इसका न कोई मह2व ह ै और न ही कोई ं ं अि□त2व ही। भाषा मानव #◌ारा अिजात एक अनठी उपलिEध ह ै । यह अिजात उपलिEध पीढ़ी दर पीढ़ी ू स□□□षत स$िवधात और प/रqकत होती रहती ह ै । भाषा के स□दभा म; एक उ□लेखनीय बात यह ह ै िक इसके ृ ं िवकास के िविभ□न िस□□त एव आयाम ह □ , □□तत इकाई म; हम गितशील मानक भाषा क: शि के ृ ं ं साथ- साथ भाषा िवकास के दो मह2वपणा िस□□त □यनता या कमी का िस□□त , िनरतरता या गैर ू ू ं ं ं िनरतरता का िस□□त का अVययन कर;गे । ं ं 5.2 □ □ इस इकाई का अVययन के पy◌ात आप- 1. िनरतरता एव गैर िनरतरता िस□□त के मह2व को समझ सक; गे । ं ं ं ं 2. िनरतरता के िस□□त को समझ सक; गे । ं ं 3. □यनता या कमी का िस□□त के मह2व को समझ सक; गे । ू ं 4. भाषा के शि - िगतक: को समझ पाय;गे । 5. मानक भाषा एव घर क: भाषा स$िबधत #□द को समझ सक; गे । ं ं 5.3 □□ # □□□□ # x' □ □#□! # □□□□ #"]□I- $□□#" □ □□ घ□ #" m □□□□ (Power Dynamics of Standard Languageas the School Language Vs Home Language) आइये, अब भाषा का मानक □प िकसे कहते ह □ इस पर िवचार िवमशा िकया जाय। िकसी भाषा S◌े□ के पढ़े िलखे और िश□ लोग िवचार- िविनमय, काया Xयापार , िशS◌ा, सािह2य, धमा , राजनीित आिद म; िजस भाषा का □योग करते ह □ वह उस S◌े□ क: मानक (standard) या आदशा भाषा

Plagiarism detected: **0.06%** https://mycoaching.in/barahkhadi + 5 resources! id: **97**

मानी जाती ह।ै यह भाषा Xयाकरण स$मत होती ह ै तथा इसम; एक□पता भी पायी जाती ह।ै यही भाषा िशS◌ा का माVयम होती ह।ै सामा□यतः इसी म; पा□ पि□काए भी □कािशत होती ह।ै इसक

◌ा S◌े□ िवकिसत होता ह।ै उस स$बि□धत ं भाषा S◌े□ के अ□य भाषा बोलन े वाले लोग भी इसी भाषा को बोलने और िलखन े का □य2न करते ह।□ मानक भाषा का िलिखत □प उसके मौिखक □प क: अपेS◌ा अिधक प/रqकत होता ह,ै पर□त उसका ृ ृ िलिखत □प □प उसके मौिखक □प क: अपेS◌ा अिधक □वाभािवक होता ह ै । उ□राख□ड म िव□□व□□लय 66 ृ CPS -1 जब बालक अपन िव□□लय के □□रि$भक वष□ म; दो या दो से अिधक भाषाओ को समझने क: यो»यता ं िवकिसत करता ह ै तो वह भाषा को िकसी न िकसी □कार से □योग करने क: गहन समझ िवकिसत कर लेता ह ै। वह भाषा को िनखारने के िलए और अिधक अGयास करता ह,ै िजसके िलए प/रि□थितयाँ उसके िशSक #◌ारा तैयार करके दी जाती ह □ । वह अपनी मातभाषा और अ□य भाषा म; तलना करता ह ै । शोध ृ ृ से पता चला ह ै िक दो भाषाओ को जानने वाले Xयि म; िवचारने क: Sमता अिधक होती ह ै । इसके ं प/रमाण □व□प वह सचनाओ के िविभ□न पहलओ पर िवचार कर सकता ह ै । ू ृ ं ं □□थिमक िशS◌ा का सबसे अिधक महËवपणा पहल ह ै ब□चे का भाषा सीख पाना। यह तो सभी ू ू मानते ह □ । यह सबसे अिधक महËवपणा पहल □य" ह?ै इसके जवाब म; बहत सारी बडी सची बनाई जा c ू ू ू ृ सकती ह।ै भाषा ही ब□चे के िलए µ◌ोत का काम करती ह ै और वह अिभXयि का भी औज़ार ह।ै इसी से होकर िशS◌ा के अ□य पहलओ तक बालक क: पहचँ हो पाती ह ै िव□□न (Science), गिणत (Maths), c ृ ं सामािजक अVययन (Social Studies) आिद भाषा म; ख़ासतौर पर औपचा/रक व

प□तक क: भाषा पर ु पया।□ Sमता हािसल िकए िबना समझ पाना सभव ही नहz ह।ै भाषा के माVयम से ही बालक िवचार का ं ताना-बाना बन पाता ह,ै िनणाय के िलए तक। गढ़ पाता ह।ै यह भिमका मा□ माVयम के □प म; नहz ह।ै ु ू अ□सर इस पर िवचार करते समय भाषा क: भिमका को समझने म; एक ख़ास तरह का एकागीपन भी आ ू ं जाता ह।ै जैसे यह समझा जा सकता ह ै िक भाषा एक साधन ह ै जो इन सब उ□□□ य" के िलए आव□यक ह ै ऐसा साधन जो हथौड़े क: तरह या िफर दीवार पर चढ़ने के िलए उसके साथ खड़ी एक सीढी क: तरह। ृ िजस □कार उ□□□ य छत पर चढ़ना ह ै व सीढ़ी साधन उसी □कार भाषा भी एक साधन ह,ै स□□षण ं (Communication) का, िवचार कर पाने का, िव□□न, गिणत आिद सीखने, िनणाय ले पाना, आिद का एक साधन ह ै जो हमसे इतर ह ै आरै सबके िलए एक सा ही ह।ै यह बात एक तरह से ठीक ह ै पर अधरी ह ै ू असल म; िजतनी ठीक ह ै उतनी ग़लत भी ह।ै भाषा साधन होने के साथ-साथ बहत कछ और भी ह ै यह c ु हमारे Xयि 2व व अहम का आधार ह,ै हमारी स□िकत व समझ का भडार भी ह।ै ृ ं ं इसान अपने आस-पास क: दिनया को के वल महसस ही नहz करता; वह उसे अपने िलए अथ। ू ं ु भी दते ा ह।ै मझे आसमान म; बादल िदखता ह ै इस दखे ने से म □ जो महसस करता ह,ँ मेरे िम□तqक पर जो □ ु ू □भाव पड़ता ह,ै मेरे काम पर जो □भाव पडæा ह,ै वह आसमान म; अलग-अलग आकार व रगवाली ं आकित मा□ देखन े का □भाव नहz ह ै वह मेरे और

Quotes detected: **0%** id: **98**

‘बादल’

के बीच और उस समय क: मेरी ि□थित के ृ बीच अतःि□या का □भाव ह।ै भमडलीकरण के दौर म; आज एक भाषा का □□न पया।□ नहz ह ै । ब□चे क: ू ं ं मातभाषा दसरी भाषा के िवकास म; महËवपण। भिमका िनभाती ह ै । जो बालक अपनी मातभाषा क: ृ ृ ू ू मजबत नzव के साथ िव□□लय जाता ह,ै उसम; िव□□लयी भाषा क: उ□च यो»यता िवकिसत होती ह ै । ू भारत म; आज भी उ□च िशSा मातभाषा म; □दान नहz क: जाती ह ै । इससे मातभाषा अJेजी क: तलना म; ृ ृ ु ं िपछड़ती जा रही ह ै । लेिकन अJजे ी के महËव को नाकारा नहz जा सकता ह ै । िव□ के दसरे दशे " के ं ू Xयि य" से सपक। करने के िलए अJेजी क: आव□यकता होती ह ै । अJेजी के िबना दसरे लोग" क: ं ं ं ू भावनाओ, िवचार" और अिभXयि को समझा नहz जा सकता ह ै । ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 67 ु CPS -1 एक और महËवपण। मसला ह ै भाषा व बोली का िजसे हम मानक भाषा बनाम घर क: भाषा का #□द का ू कह सकते ह।□ िजस भी मच पर भाषा िशSण या भाषा के मह2व क: बात होती ह ै यह मसला ज□र उठता ं ह।ै □□र$भ म; जब ब□चा अपने घर स े िव□□लय आता ह ै उस समय वह के वल घर क: भाषा ही बोल पाने म; सSम होता ह ै उस घर क: भाषा को बोली का दज़ा। भी □दान िकया गया ह ै । ब□चा तब हीन भावना से J□त

Plagiarism detected: **0.12%** https://www.notesinhindi.com/blog/स्पर्श व्यंजन क व… + 4 resources! id: **99**

हो जाता ह ै जब उसे यह बात समझ म ; आती ह ै िक उसक: बोली को दसरे दज° क: भाषा समझा जा ू रहा ह ै । ऐसी प/िर□थितय" म; वह ब□चा बोलना ही बद कर देता ह ै और कठा का िशकार हो जाता ह ै । ु ं ं इसके साथ ही साथ यह माना जाता ह ै िक भाषा तो वह होती ह

ै िजसका अपना सािह2य व Xयाकरण होता ह,ै उसक: िलिप होती ह,ै वह मानक:कत व श□ होती ह।ै ब□चा जो भाषा अपने घर से आता ह ै वह भाषा ृ ु नहz ह ै □य"िक वह तो एक Sे□ िवशेष के लोग" #ारा बोली जाती ह ै ,उसका न सािह2य ह,ै न Xयाकरण और न िलिप । अतः □कल के पहले िदन से ही ब□च" को मानक:कत और श□ भाषा िसखाने का □यास ृ ू ु िकया जाता ह ै और यिद ब□चे अपनी घरेल भाषा का □योग िव□□लय म; करता ह ै तो उ□ह ; डाँट िदया जाता ू ह।ै ब□चे यह समझ नही पाते िक उ□ह ; डाँटा □य" जा रहा ह?ै घर म; आस-पास प/रवेश म; हर तरफ वही भाषा

Plagiarism detected: **0.12%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ + 6 resources! id: **100**

बोली जाती ह ै पर □कल म; अVयापक के सामने जब वह बोलता ह ै तो उसे गलत कहा जाता ह ै । ू बात यहz समा□ नहz होती ह ै , जैसा िक हम यह जानते ह □ िक भाषा Xयि क: स□िकत व पहचान होती ृ ं ह।ै ब□चे को अपनी घरेल भाषा का उपयोग न करने देना उसक: पहचान व स□िकत पर सीधा □हार ृ ू ं हाता ह

।ै बार-बार डाँट खाने के कारण जो ब□चे इतनी बातचीत करते ह □ , वो धीरे - धीरे बात करना ही ब□द कर दते े ह □ । यिद भाषा िव□□न क: □□□ से दखे ा जाए तो भी भाषा व बोली म; कोई फक़। नहz होता । भाषा का भी Xयाकरण होता ह ै और बोली का भी। यह बात ज□□र ह ै िक बोली का Xयाकरण िलिखत □प म; उपलEध नहz होता, िक□त इसका ता2पय। यह नहz ह ै िक Xयाकरण हाते ा ही नहz । यही बात सािह2य पर ु भी लाग होती ह ै । हो सकता ह ै िक कई "बोिलय" (

Plagiarism detected: **0.1%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ + 4 resources! id: **101**

भाषाओ)" म; िलिखत सािह2य न हो लेिकन मौिखक ू ं सािह2य ज□□र होता ह।ै भोजपरी, अवधी , मैिथली-गढ़वाली , कमायनी िज□ह ; हम बोिलयाँ कहते ह □ उनम; ु ु ंू तो बहत सािह2य उपलEध ह।ै इसी तरह यह कहा जाता ह ै िक भाषा का Sे□ िव□तत होता ह ै और बोली c ृ एक सीिमत Sे□ म; बोली जाती ह

।ै अ&य ास □(1. भाषा के मानक □प से आप □या समझते ह □ ? 2. बोली एव भाषा के Xयाकरण म; □या अतर ह ै ? □प□ कर; । ं ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 68 ु CPS -1 5.4 □□ # □□□□ u□ N घ□ # □□□□ # □w□ □p` # #□ #□ □ □]k# #" m □□□□#□: (The Role of Teacher in Reducing the Conflict between Standard Language and Home Language) अब हम यह समझ;गे िक □कल क: भाषा एव घर क: भाषा म ; सामज□य कैसे □थािपत कर;गे और इसम; ू ं ं िशSक क: □या भिमका ह ै – ू 1. ब□चे के पव अिज त n◌ान का wवागतः(Acknowledge the previous knowledge of ू the child) - ब□चा िजस S े□ और भाषा से सबध रखता ह ै उससे सबिधत जानकारी भी अपने साथ ं ं ं ं ं लाता ह।ै िव□□लय म; आने पर िशSक के #◌ारा कछ भी पछे जाने पर वह अपने पवा अिजात □□न के ु ू ू आधार पर उ□र बहत हा□या□पद और कभी-कभी कछ सोचने और समझने के िलए बाVय करने c ु वाला होता ह।ै ऐसे म; िशSक को उसके पवा अिजात □□न का □वागत करने हए Vयानपवाक सनते और c ू ू ु समझते हए □नेह एव दलार के साथ उसे सीखने का अवसर दने ◌ा होगा। ऐसा करने ब□चे आपस म ; c ं ु एक-दसरे क: भाषा, स□कार, िवचार और मा□यताओ से अनजाने म; ही प/रिचत हो जाते ह।ै इस तरह ं ं ू सरलता से वह बहत सी बात; कब सीख जाते ह □ और भाषा क: जो दीवार □□न अजान म; अडचन बनी c हई थी कब िगर जाती ह,ै पता ही नहz चलता और भाषा सीखने क: Sमता िवकिसत होती जाती ह।ै c 2. ब□चे के घर और िव□□लय म/ बोली जाने वाली भाषा के बीच म/ जडाव:(The link ु between home language and the school language of the child) -ब□चा िव□□लय अपनी एक िवशेष भाषा (S े□□य िवशेषता) के साथ आता ह।ै ऐसे म; िशSक को उसक: भाषा और िव□□यलय क: भाषा (मानक भाषा) के बीच म; जड़ाव करते हए उसे धीरे -धीरे सहजता से लेते हए c c ु बोधग$यता और मानकता क: ओर ले जाना होता ह।ै ब□चे जो भाषा पहले बोलना श□ करत ह □ ु (मातभाषा या □□तीय भाषा) उसी म; उनक: समझ बनती ह ै और उसी म; वे अथा िनकलते ह।□ य े अथा ृ ं ब□च" के िलए □या मायन े रखते ह □ इस को समझना होगा। इसके िलए िशSक को कछ अित/र ु मेहनत और नयी तैयारी करनी पड़ सकती ह ै लेिकन ब□च" को भाषा िसखान े के िलए यह एक साथाक कदम हो सकता ह।ै इससे िशSक को ब□च" को उनक: घर क: बोली म; □वीकत करते हए उनको नयी c ृ चीज" को साथाक तरीके से समझाने म; मदद िमलेगी। कभी-कभी ऐसी ि□थित भी आती ह ै िक घर क: और िशSण क: भाषा एक ही होती ह ै परत भाषा एर S े□□य □भाव अ2यिधक होता ह।ै ऐसे म; पाठ के ु ं सदभ । म; Xयवहार और अGयास के िनयम" का आधारभत □□न कराकर अGयास से मानकता तक ू पहचँ ◌ा जा सकता ह।ै c 3. ब□चे क5 मातभाषा को □□□साहन (Encourage the mother tongue of the child) :- ृ मातभाषा को मह2व देन े से एक िवशेष लाभ यह होता ह ै िक ब□चे आपस म; एक-दसरे के S े□ ृ ू िवशेष से प/रिचत होते ह □ और खेल-ही-खेल म; सैकड" शEद सीख जाते ह ै □य"िक िव□□लय वह □थान ह ै जहाँ सभी S े□" के ब□चे आते ह।□ भारत के सिवधान क: आठवz अनसची म; विणात 22 ं ु ू भाषाएँ ह।□ िव□□लय आने वाला □2येक ब□चा इन 22 भाषाओ म; स े िकसी-न-िकसी एक भाषा को ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 69 ु CPS -1 समझने वाला होता ह।ै अब यिद दिै नक ज□रत क: व□तओ के नाम" का ही अGयास कराया जाए ु ं (उदाहरण के िलए-खाना,पहनावा ,2यौहार) तो इन भाषाओ के िकतने ही शEद ब□चे सीख जाएँगे जो ं अVययन म; सरलता का आधार तो बनेगा ही साथ ही इससे अ□2यS □प से अ□य भारतीय भाषाओ ं का िवकास भी होगा। ऐसा वै□□□नक तौर पर माना भी जाता ह ै िक ब□चे के पणा □◌ान, भािषक Sमता ू और मानिसक िवकास का सही □योग सामा□यतः मात भाषा म; ही सभव होता ह ै और ब□चा ¾यादा ृ ं अ□छी तरह समझ पाता ह।ै इससे भािषक और सा□कितक दरी को पाटने म; भी मदद िमलेगी। वैसे भी ृ ं ू अगर आप िकसी से कह ; िक आप दो-तीन भाषाएँ सीख लीिजए, तो सरलता से यह िबलकल सभव ु ं नहz होगा। पर□त उपरो िविध □योग का आधार बनाया जाए तो यह शायद उतना किठन नहz होगा ु िजतना □थम □तर पर होगा। हम; यह नहz भलना चािहये िक कोई भी भाषा अपनी सहयोगी भाषाओ ू ं के साथ ही िवकिसत होती ह।ै ब□चे िक मातभाषा को □□2साहन िमलन े पर उसे अपने म; □□तत करने ृ ु का मौका िमलेगा। हो सकता ह ै श□ म; वह गलत उ□चारण करे , उसको आप धीरे -धीरे सही कर;। ु उसको सजन शि का िवकास हो सके , वह अपने को सदभ । से क; ि®त कर सके और अपनी ृ ं सजना2मकता को िवकिसत कर सके । ृ 4. ब□चे क5 सहज अिभ□यि□ और शैली कf मह□व (The importance of simple expression and style ofthe child) – कई बार िशSक अिभXयि क: बजाय सही उ□चारण पर अिधक बल दते ◌ा ह,ै िजससे ब□चा बहत भयभीत हो जाता ह ै और जीवन भर के िलए उस c अिभXयि Sमता को खो दते ◌ा ह ै , जो उसक: अपनी थी साथ ही सहयोग के िबना अिजात क: गयी अिभXयि करन े म; कामयाब भी नहz हो पाता ह ै । यह ब□चे के िलए गभीर ि□थित होती ह ै । ऐसे म; ं गभीर ि□थित होती ह ै । ऐसे म; िशSक को धीरे -धीरे एक-एक करके सशोधन करना होगा, अGयास ं ं कराना होगा । जहाँ ब□चा अिभXयि ना कर पाए वहाँ उसे शEद" का सहारा दके र उसक: अिभXयि Sमता को िवकिसत करना होगा । जैसे (ष,स,S,5) कछ शEद" का उ□चारण जो S े□□य ु □भाव के कारण फका होता ह ै । 5. □यवहार और अ&यास के िनयमf का n◌ानः(To make aware withtherules of behaviour and exercise)- ब□चे को Xयाकरण के िनयम" के आधार पर भाषा को सही तरीके से िसखाने के □यास म; िशSक को चािहए िक वे ब□चे को Xयाकरण क: अवधारणा को िविवध □कार के पाठ" के सदभ । म; पहचानना और उसका उिचत □योग करना िसखाए।ँ ं 6. य2वत भाषा से बचावः(To save him from mechanical language) - भाषा को वण□ ् ं और कछ हद तक अथा के आधार पर तो सीखा जा सकता ह ै परत गहनता और पणाता से नहz सीखा ु ु ू ं जा सकता □यिोक य□वत तरीके से कई शEद" को उस अथा म; स□□□षत नहz िकया जा सकता िजस ् ं ं अथा म; उ□ह ; स□□□षत करना होता ह।ै यिद िनयम याद करान े को वा□य का आधार बनाएँगे तो सीखने ं म; अ2यिधक किठनाई होगी िजसम; भाषा को सहजता से नहz सीखा जा सके गा। यहाँ अिनवाया □प से याद रखना होगा िक Xयवहार और अGयास के आधारभत िनयम" के अGयास के िबना भाषा सीखना ू सभव नही हो पाएगा। ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 70 ु

CPS -1 इस तरह भाषा िसखान े क: □□□या म; िशSक #ारा सहजता को आधार बनाकर ब□चे को धीरे -धीरे बेहतर दिनया और □□न से जोड़न े के िलए □□रभ से ही िवचरण कराना होगा। यह काम उसके आ2मगौरव और ं ु आ2मिव□□स को ठेस पहचँ ाए िबना अिह□ता-अिह□ता करना होगा। इससे एक लाभ यह भी होगा िक c अपनी जड़" से िबना जड; रहने के कारण मन म; अपनी भाषा के □□त िकसी □कार क: हीन भावना महसस ु ू नहz होगी और ऐसे ब□चे का □□तीय भाषा, मातभाषा और िशSण क: भाषा पर पया॥□ अिधकार होगा। ृ ं अ&य ास □(3. मातभाषा के □□2साहन के िविभ□न तरीके कौन कौन से हो सकते ह □ ?□काश डाल; । ृ 4. ब□चे के घर क: भाषा एव िव□□लय के भाषा म; जडाव कै से □थािपत कर सकते ह □ ? ु ं 5. मानक भाषा एव □कल क: भाषा म; सामज□य □थािपत करने म; िशSक क: □या भिमका ह?ै □प□ ू ू ं ं कर; । 5.5 □ □N□□□□ u□N $n□ □ □N□□□□ #□ □□□□N□: (Theory of Continuity and Discontinuity) मानव □जित म; भाषा क: उ2पि□ कई सिदय" के िलए िव#ान" के िवचार िवमश॥ का िवषय रहा ह।ै इस के बावजद, मानव भाषा का परम मल या उ पर कोई आम सहमित नहz बन पायी ह।ै □2यS सा0य के ू ू अभाव म; इस सम□या का अ\/ययन एक किठन िवषय बन गया ह ै । प/रणाम□व□प , भाषा का मल ू अ\/ययन करने के इ□छक िव#ान" ऐसे जीवा□म /रकॉड॥, पराित2वक सा0य , समकालीन भाषा िविवधता, ु ु मानव भाषा और अ□य जानवर" के बीच मौजदा सचार क: □णािलय" के बीच भाषा के अिधJहण का ू ं अ\/ययन, और तलना के □प म; सबत के #ारा अ□य □कार से अनमान लगाने क: कोिशश करनी चािहए। ु ू ु कई महानभाव" का तक॥ ह ै िक भाषा का उ¿व शायद आधिनक मानव Xयवहार से सबिधत ह,□ लेिकन ु ु ं ं इस सबध के िनिहताथ॥ और िदशा2मकता के बारे म; थोड़ा सदहे भी ह।ै ं ं ं ं अनभवज□य सबत के इस कमी के कारण बहत से िव#ान" ने इसे गभीर शोध का िवषय नहz c ु ू ं माना ह ै । 1866 म; पे/रस के भाषाई सोसायटी (Linguistic Society) इस िवषय पर िकसी भी मौजदा ू या भिवqय क: बहस पर □□तबध लगा िदया। यह □□तब□ध बीसवz सदी क: आिखर तक पिूमी दिनया ं ु के बहत से देश" म; □भावशाली बना रहा ह ै । आज के इस यग भाषा का □□दभा॥व कै से हआ होगा क: c c ु ु बहत सी प/रक□पनाए ह □ ।इस के बावजद, चा□स॥ डािवन के िस□□त #ारा एक सौ साल पहले, □□कितक c ृ ू ं ं चयन #ारा भाषा के िवकास के िवषय पर कस□ अटकल" का भी दौर चला। इसके बाद से 1990 के दशक ु म;, भािषिवद" (Linguists), परात2विवद" (Archeologists), मनोवै□□□नक (Psychologists), ु मानविव□□□नय" ने नए तरीक" के साथ समाधान करने का □यास िकया ह ै । उ□राख□ड म िव□□व□□लय 71 ु CPS -1 मानवीय भाषा क: उ2पि□ (Orgin of human language) एव बात Xयवहार के मा\/यम के ं □प म; इसे ल;बग॥ #ारा दो भाग" म; िवभािजत िकया गया । पहले भाग के िस□□त को िनरतरता का िस□□त ं ं ं कहा गया जो िक मलतः डािवन के िस□□त से □भािवत िस□□त ह ै । दसरे भाग को गैर िनरतरता का ू ं ं ं ू िस□□त कहा गया जो इस बात का समथ॥न करता था िक मानवीय भाषा को दसरे जीव जतओ क: भाषा से ु ं ं ं ू तलना नहz क: जा सकती तथा इसे समझन े के िलए मानवीय भाषा का ही अ\/ययन करना पडेगा । गैर ु िनरतरता के िस□□त को समझन े के िलये के वल भाषा क: उ2पित को समझना ही पया॥□ नहz ह ै । हािलाक ं ं ं इस बात पर अभी चचा॥ एव िववाद दोन" ह ै िक भाषा Jहण करने क: Sमता अ□तिनि॥ हत ह ै या वातावरण ं क; िÆत। कछ िव#ान" का यह तक॥ ह ै िक इस तरह क: Sमता अ□तिनि॥ हत ह ै □य"िक िच$पा□जीय" को ु मानवीय प/रवेश म; रखे जान े के बाद भी उनम; भाषा क: यो»यता पैदा नहz हो पाती जबिक एक गगे एव ं ू ं बहरे ब□चे को जब हम मानवीय प/रवेश म; रखेते ह ै तो भी वह बोलने एव सनने क: एक जिटल सरचना ु ं ं बना लेता ह ै । भाषा क: उ2पि□ को िन$न मा□यताओ के आधार पर समझा जा सकता ह ै - ं 1. " िनरतरता िस□□त " ऐसे मा□यताओ पर बने हए ह ै िजसम; इस बात पर सहमित ह ै िक भाषा c ं ं ं एकाएक अि□त2व म; नहz आयी होगी □य"िक भाषा क: सरचना बहत ही जिटल होती ह ै । c ं िनरतरता िस□□त इस बात पर बल दते ा ह ै िक भाषा का □□दभा॥व अव□य ही हमारे पवा॥ज" के ू ं ं ु पहले □□- भाषाई िस□टम से िवकिसत हआ होगा । c 2. गैर िनरतरता िस□□त इसके िवपरीत होकर अपनी बात कहता ह ै । इस िस□□त क: मा□यता ह ै िक ं ं ं भाषा जैसी अनठी िवशेषता को हम गैर- मनqय" के साथ तलना नहz कर सकते । यह िस□□त इस ू ु ु ं बात पर भी बल दते ा ह ै िक अव□य ही इस तरह क: यो»यता का िवकास मानव िवकास के □म म; ही हआ होगा । c अ&य ास □(6. िनरतरता के िस□□त से आप □या समझते ह □ ? ं ं 7. गैर- िनरतरता के िस□□त से आप □या समझते ह □ ? ं ं 8. िनरतरता एव गैर- िनरतरता के िस□□त म; अतर □प□ कर; । ं ं ं ं ं ं 5.6 p□□ □□ □□ #□" #□ □□□□N□ (Deficit Theory) □यनता या कमी का िस□□त इस बात पर बल दते ा ह ै िक कोई भी भाषा का एक मानक □व□प (Standard ू ं Form) होता ह।ै इस मानक □व□प के िहसाब से ही िकसी लेख या भािषक टकड़े क: गणव□□ को जाचा ु ु ं या परखा जाता ह ै । जैसा िक भाषा का □वभाव होता ह ै िक उसका □वाह सवा॥दा किठनता से सरलता के उ□राख□ड म िव□□व□□लय 72 ु CPS -1 तरफ होता ह ै । इसी □वाह के कारण भाषा का □व□प मानक □व□प से दर

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.learncbse.in/class-8-hindi-chapter-9… + 2 resources! id: **102**

हो जाता ह ै । िजस भाषा म; इस ू □वाह का आभाव होता ह ै वह भाषा मत□□य हो जाती ह ै । कई

िव#ान" न े अपने - अपने तरफ से इस ृ □यनता को प/रभािषत करन े क: कोिशश क: ह ै । ू इसे यिद हम ज;डर और भाषा के #□द के □प म; दख; ; तो बात çयादा □प□ होगी। जैसा िक नाम से ही यह □□□गोचर ह ै िक □यनता या èास का िस□□त म; प□ष" क: भाषा मिहलाओ क: भाषा से इ□ देखन े क: ू ु ं ं सक□पना िनिहत ह।ै यह िस□□त इस मा□यता पर आधा/रत ह ै िक भाषा क: सरचना प□ष के िÆत ु ं ं ं (Male- Centred) ह ै और इसम; मिहलाओ के िलए अित □यन □थान □दान िकया गया ह ै । यह मा□यता ू ं इस बात पर बल देती ह ै िक प□ष" क: भाषा मिहलाओ क: भाषा से हर □कार से

बेहतर एव 5□ ह ै ु ं ं ।साइमन दी बआ क: प□तक द सेके □ड से□स (The Second Sex ,1949) □यनता/ è◌ास के िस□□त का ु ु ू ं सिाह2य के S◌□ म; एक 5□ नमना कहा जा सकता ह ै । ू आधिनक भाषा िव□□न के S◌□ म; □यनता या è◌ास के िस□□त का □थम नमना डेनमाक। के वैयाकरण ु ू ं ू जे□पसान (1922) के काय। म; □प□तः िदखाई दते ◌ा ह ै । जे□पसान महोदय के अनसार मिहलाओ क: ु ं बातचीत का पैटन । मिहलाओ के बातचीत के पैटन । से िब□कल इतर होता ह।ै अपन े अितमह2वपण। प□तक ु ू ु ं "द J◌ामर ऑफ इि»लश" (The grammar of English, 1922) के चौथे अVयाय िजसका शीषक। ं

Quotes detected: **0%**

id: **103**

"The Woman"

ह ै म; उसन े चार मह2वपण। भािषक िविभ□नता रेखािकत क:। ये चार" िन$निलिखत ह □ ू ं 1. The Verbal Taboo 2. Competing language 3. Conversastional Language 4. Conservative Language अपनी इसी प□तक म; आगे चलकर जे□पसान न े बताया िक प□ष भाषा के □योग म; मिहलाओ से बेहतर ु ु ं होते ह।□ उसने कहा िक मिहलाय ; बहत ही सीिमत शEद" (Limited Vocabulary)का □योग करती ह।□ c उनक: बातचीत के दौरान Pretty, Nice, Just, Very and Sweet जैसे ि□या िवशेषण" (Adverb) का □योग अिध□य म; होता ह।ै इसके िवपरीत वह यह भी बात कहता ह ै िक मिहलाय; नए शEद" का आिवqकार भी करती ह □ । आगे चल कर अपनी इसी प□तक म; उसने यह भी □□ितपािदत भी िकया िक ु मिहलाय ; अपने शEद □योग म; प□ष" क: अपेS◌ा अिधक □□ढ़वादी (Conservative) होती ह।□ अ□त म; ् ु जे□पसान ने मिहलाओ के भािषक □□□ से भािषक तीÛता के □थान पर भािषक मद होने क: मा□यता क: ं ं िप□ क: । ु उदाहरण के िलए – प□ष क: भाषा को मानक भाषा एव मिहला क: भाषा को गैर - मानक भाषा ु ं समझा जाता ह ै । जे□पसान के बाद एक अ□य भािषव□□नी िजसका नाम रिबन लैकाफ (Robin Lakoff) था ने 1975 म; Language and Woman's Place नामक प□तक म; अपनी इस बात को □□ितपािदत ु िकया ह।ै अपनी बात रखते हए लैकाफ महोदया ने यह बात □□ितपािदत िकया ह ै िक चँिक समाज म; c ू मिहलाओ का □थान प□ष" क: अपेS◌ा िन$नतर आकाँ गया ह ै इसिलए भाषा पर भी यही बात लाग होती ु ू ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 73 ु CPS -1 ह ै। भाषा का □वभाव भी िनरपS◌े न हो कर प□ष के ि□®त हो जाता ह।ै उसने उसी िपशमी धारणा को बल ु □दान िकया िजसक: श□आत जे□पसान ने िकया था । रिबन लैकाफ जो िक एक अमे/रक: भािषिवद था ु ने एक अितमह2वपण। द□तावेज़ सन 1973 म; Language and Woman's Place शीष।क लेख ू □किाशत हआ जो िक कालातर म; सन 1975 म; एक प□तक के □प म; भी □किाशत हआ। इस प□तक के c c ु ु ं □काशन को भाषा एव ज;डर के अVययन म; एक मील का प2थर तथा एक नयी सदी का □□र$भ माना जाता ं ह ै । इस प□तक का मह2व इसिलए भी çयादा ह ै □य"िक जे□पसान के काय। से इतर यह फे िमिन¾म क: दसरी ु ू धारा से □भािवत थी इसिलए यह फे िमिन□ट िल»वी□ट का बेहतरीन नमना भी माना जाता ह ै । वा□तिवकता ् ू ं म; मिहला मि क: □□□□त का आंé◌ान अमे/रका म; सन 1970 म; हो चका था। इसम; इसिलए भी लैकाफ ु ु के िवचार" का मह2व बढ़ जाता ह ै □य"िक प □य"िक पहले चल रह े आदोलन के िवचार" को और अिधक ं बेहतर बनाए जाने म; उपयोगी िस□ हआ। लैकाफ के अनसार िचक मिहलाय ; समाज म; हािशए पर रहz ह ै c ु ू इसिलए भािषक □प से उतनी मजबत नहz हो पायी िजतनी क: प□ष ह □ । ू ु लैकाफ के प□तक तीन म□य उ□□□य थे ु ु i. भाषा □या बता सकती ह ै , ल□□गक असमानता के बारे म; जो िक भाषा म; मौजद ह ै । ू ii. □या भािषिवद सामािजक असमानता को भाषा म; सधार करके ठीक कर सकते ह।□ ु iii. भाषा और ज;डर पर शोध काय। को बढ़ावा दने ◌ा । अ&य ◌ास □(9. □यनता या कमी के िस□□त से आप □या समझते ह □ ? ू ं 10. □यनता िस□□त को लेकर के लैकाफ महोदय के िवचार" को □प□ कर; । ू ं 5.7 □□□□N] भाषा, मानव क: सामािजकता एव बौिधकता के गभ। से उ2प□न होता ह ै । इसके #◌ारा मानव आज ं आिथ।क, वै□□□नक , राq°◌ीय, सामािजक एव अतरा।q°◌ीय सभी S◌□" म; अपन े िवचार के आदान- □दान म; ं ं समथ। ह □ । भाषा मनqय के िलए एक Vविन सके त क: तरह ह ै । इसका िवचार" के िलय े भी □योग िकया ु ं जाता ह ै इसी कारण मनqय सबको परख पाता ह ै । िनरतरता िस□□त ऐसे मा□यताओ पर बने हए ह ै िजसम; c ु ं ं ं इस बात पर सहिमत ह ै िक भाषा एका- एक अि□t2व म; नहz आयी होगी □य"िक भाषा क: सरचना बहत c ं ही िजटल होती ह ै । िनरतरता िस□□त इस बात पर बल दते ◌ा ह ै िक भाषा का □□दभा।व अव□य ही हमारे ं ं ु पवा।ज" के पहले □□- भाषाई िस□टम से िवकिसत हआ होगा । गैर िनरतरता िस□□त इसके िवपरीत होकर c ू ं ं अपनी बात कहता ह ै । इस िस□□त क: मा□यता ह ै िक भाषा जैसी अनठी िवशेषता को हम गैर- मनqय" के ू ु ं साथ तलना नहz कर सकते । यह िस□□त इस बात पर भी बल दते ◌ा ह ै िक अव□य ही इस तरह क: यो»यता ु ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 74 ु CPS -1 का िवकास मानव िवकास के □म म; ही हआ होगा । □यनता या कमी का िस□□त इस बात पर बल दते ◌ा ह ै c ू ं िक कोई भी भाषा का एक मानक □व□प होता ह ै । इस मानक □व□प के िहसाब से ही िकसी लेख या भािषक टकड़े क: गणव□□ को जाचा या परखा

Plagiarism detected: **0.07%** https://www.notesinhindi.com/blog/स्पर्श व्यंजन क व… + 2 resources!

id: **104**

जाता ह ै । जैसा िक भाषा का □वभाव होता ह ै िक उसका ु ु ं □वाह सवा।दा किठनता से सरलता के तरफ होता ह ै । इसी □वाह के कारण भाषा का □व□प मानक □व□प से दर हो जाता ह

ै । ू 5.8]_` □□!" 1. िनरतरता िस□□त : िनरतरता िस□□त ऐसे मा□यताओ पर बने हए ह ै िजसम; इस बात पर सहिमत ह ै c ं ं ं ं ं ं िक भाषा एकाएक अि□t2व म; नहz आयी होगी □य"िक भाषा क: सरचना बहत ही िजटल होती ह ै । c ं

िनरतरता िस□□त इस बात पर बल दते ◌ा ह ै िक भाषा का □□दभाव अव□य ही हमारे पवाज" के पहले ◌ू ◌ं ◌ं ◌ु □□- भाषाई िस□टम से िवकिसत हआ होगा । c 2. गैर िनरतरता िस□□त : गैर िनरतरता िस□□त इसके िवपरीत होकर अपनी बात कहता ह।ै इस िस□□त ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं क: मा□यता ह ै िक भाषा जैसी अनठी िवशेषता को हम गैर- मनqय" के साथ तलना नहz कर सकते । ◌ू ◌ु ◌ु यह िस□□त इस बात पर भी बल दते ◌ा ह ै िक अव□य ही इस तरह क: यो»यता का िवकास मानव ◌ं िवकास के □म म; ही हआ होगा । c 5.9 □N`□ e fNg □h" □ 1. अJवाल, पी. और सजय कमार 2000 (सपािदत), िहदी देशकाल म; ◌ु ◌ं ◌ं ◌ं 2. चॉ$□क:, एन. 1957, िसनटै□टक □°□चस।, दी हगे : मौटेन क.। ◌ं 3. चॉ$□क:, एन. 1959, /RXय ऑफ ि□कनस। वबाल िबहिे वयर. ल□»वेजेस 35.1.26-58 ◌ू 4. चॉ$□क:, एन. 1972, ल□»वेज एड माइड, □ययाक। : हारकोट। ·◌ास जोवानोिवच। ◌ू ◌ं ◌ं 5. चॉ$□क:, एन. 1996, पॉवस। एड □□□पे□टस: /रफले□शस ऑन âमन नचे र एड द सोशल ◌ृ ◌ं ◌ं ◌ं ◌ू आडार, िद□ली: माVयम ब□स। ◌ु 6. चॉ$□क:, एन. 1965, आ□पे□टस ऑäफ द □योरी ऑफ िसनटे□स, क□ ि·ज : एम. आइ.। टी. ◌ृ □□स। 7. चॉ$□क:, एन. 1986, नॉलेज ऑफ ल□»वेज, □ययाक। : □◌ागर। ◌ू 8. चॉ$□क:, एन. 1988, ल□»वेज एड □□Eल$स ऑäफ नॉलेज, व□फि·ज, मास: एम. आइ.। टी.। ◌ं 9. दआ, एच. आर. 1985, ल□»वेज Êिलानग इन इिडया, िद□ली: हरनाम पिEलशस।। ◌ं ◌ं ◌ु 10. हबै रमास, जे. 1998, ऑन द □□गमैट□स ऑफ क$यिनवेफशन, क□ ि·ज, मास: एम. आइ.। टी. ◌ु □□स। उ□राख□ड म िव□□व□□लय 75 ◌ु CPS -1 11. हबै रमास, जे. 1998, दी िफलिॉ□फकल िडसकोस। ऑफ मॉिडनाटी, क□ ि·ज, मास: एम. आइ.। टी. □□स। 12. कमार, के . 2001, □क ल क: िहदी, पटना: राजकमल। ◌ु ◌ू ◌ं 13. िशS◌ा म□□लय, िशS◌ा आयोग कोठारी कमीशन 1964 -1966, िशS◌ा एव राq° ◌ीय िवकास, ◌ं ◌ं िशS◌ा म□□लय, भारत सरकार 1966 ◌ं 14. नेशनल पॉिलसी ऑन एजके शन, 1986, मानव ससाधन िवकास म□□लय, िशS◌ा िवभाग, नयी ◌ु ◌ं ◌ं िद□ली। 15. पटनायक, डी. पी. 1981, म□टीलगएिल¾म एड मदर-टग एजवेफशन, ऑ□सपफोड। ◌ु ◌ु ◌ं ◌ं ◌ं यिनविस।टी □□स। ◌ू 16. पटनायक, डी. पी. 1986, □टडी ऑफ ल□»वेजेज, ए /रपोट।, नयी िद□ली: एन.सी.इ.। आर.टी। 17. /रचäस, जे. सी. 1990, दी ल□»वेज टीिचग मै°□स, कै ि·ज :कै ि·ज यिनविस।टी □□स। ◌ू ◌ं ◌ृ 18. सायर, डी. 1924, दी इपैफ□ट ऑäफ बिलगअिल¾म ऑन इटेिलज;स, ि·िटश जना।ल ऑäफ ◌ु ◌ं ◌ं साइकोलॉजी 14:25-38 19. 5ीधर, के .के . 1989, इि»लश इन इिडयन बाइिलगिल¾म ,नयी िद□ ली, मनोहर। ◌ु ◌ं ◌ं ◌ं 20. ितवारी, बी. एन., चतव'दी, एम. और िसह, बी. 1972 (सपादकगणद), भारतीय भाषा िव□□न ◌ु ◌ं ◌ं ◌ृ क: भिमका, िद□ली : नेशनल पिEलिशग हाउस। ◌ू ◌ं 21. यने□को, 2003, एजवेफशन इन ए म□टीलगएल व□डा, यने□को एजके शन पोिजशन पेपर, ◌ू ◌ु ◌ु ◌ू ◌ु ◌ं पे/रस। 22. वायगो2सक:, एल. एस. 1978, माइड इन सोसायटी: दी डेवलपम;ट ऑäफ हायर ◌ं साइकोलॉिजकल □□सेस, व□फि·ज, मॉस: हावा।ड यिनविस।टी □□स। ◌ू 23. जमील, वी. 1985, रे□प"िडग ट □टड;ट राइिटग, टी. इ.। एस. ओ. एल. □□मािसक, 19.1 ◌ू ◌ू ◌ं ◌ं 24. इस वेबसाइट को ज□र देख; : http//www.languageindia.com 5.10 □ □O□L □# □d N 1. मानक भाषा एव घर के भाषा के #□द को कै से कम िकया जा सकता ह?ै □प□ क:िजए । ◌ं 2. िनरतरता िस□□त एव गैर- िनरतरता िस□□त म; □या अतर ह ै □प□ क:िजए । ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं 3. गैर- िनरतरता िस□□त के स□2यय को □प□ क:िजए । ◌ं ◌ं ◌ं 4. कमी या □यनता के िस□□त से आप □या समझते ह □ ? □प□ क:िजए । ◌ू ◌ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 76 ◌ु CPS -1 ख□ड - 2 Block- 2 उ□राख□ड म िव□□व□□लय 77 ◌ु CPS -1 □□□□ 1- □□□ , C □O :PQ , S□□)R, □:□□□ T C PU)□ , R V C W□ □) □:X , P W , Y B □: □T ,Z [□ □□□□ S)□ □□+: □□ □\+□ □ The Discourse in Classroom: Meaning, functions, characteristics and practices; Development of strategies for using oral language in the classroom for promoting learning in the subject area. 1.1 □□त ◌ावना 1.2 उ□□□ य 1.3 कS◌ा म; सवाद क: □िकत ◌ृ ◌ं 1.4 मौिखक भाषा क: िवशषे ताए ◌ं 1.5 मौिखक भाषा के त2व 1.6 िवषय स$बिधत S□े म; अिधगम िव□ के िलए मौिखक भाषा □योग करने क: रणनीित ◌ृ ◌ं 1.7 साराश ◌ं 1.8 शEद ◌ावली 1.9 सदभ। Jथ सची ◌ू ◌ं ◌ं 1.10 िनबधा2म क □H ◌ं 1.1 □□□ □□ □ भाषा मानव समाज का सवा।िधक मह2वपण। आिवqकार ह ै । Vिन के िविवध □वर" और □□ततीकरण के ◌ू ◌ु अ□या□य □प" के माVयम से सि□ के सम□त □□णी पर□पर सचनाओ एव भावनाओ का स$□□षण करते ह □ । ◌ृ ◌ू ◌ं ◌ं ◌ं हमारे आज के आिधनक िशS◌ा Xयव□था म; हम ¾यादातर भाषा के िलिखत एव मौिखक □व□प पर िनभर। ◌ु ◌ं रहते ह □ । मौिखक भाषा

Plagiarism detected: **0.06%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ + 5 resources! id: **105**

क: सहायता से ही िव□□थ□ एव िशSक कS◌ा म; सवाद □थािपत कर पान े म; सफल ◌ं ◌ं होते ह □ जो िक उनके □□नाजा।न का मल आधार होता ह ै । िव

□□न हो या कला विाण¾य हो या सगीत सभी ◌ू ◌ं तरह के िवषय" का मल □□न सवाद एव मौिखक भाषा से ही □□□ िकया जाता ह ै । अतः िविभ□न िवषय" ◌ू ◌ं ◌ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 78 ◌ु CPS -1 के अिधगम म; भी मौिखक भाषा सवाद □थािपत करन े के िलए एव □□नाजा।न के िलए अित मह2वपण। ◌ू ◌ं ◌ं भिमका अदा करती ह ै। ◌ू 1.2 □ □ इस इकाई को पढ़न े के बाद आप- 1. कS◌ा म; सवाद क: □िकत को समझ सक; गे। ◌ृ ◌ं 2. मौिखक भाषा के मह2व को समझा सक; गे । 3. मौिखक भाषा के उ□□□ य " को बता सक; गे। 4. मौिखक भाषा म; दS होने क: रणनीितय" को समझा सक; गे । 5. मौिखक भाषा क: आव□यकता को बता सक; गे । 1.3 #k□ □ □N□□` #" □#□ □□ (Nature of Discourse in Classroom) m कS◌ा कS म; सवाद का अपना ही मह2व ह ै □य"िक कS◌ा म; सवाद के #◌ारा ही अिधकाँश अिधगम सप□न ◌ं ◌ं ◌ं होता ह।ै इसके अभाव म; अिधगम क: क□पना ही सभव नहz ह ै । बेहतर अिधगम के िलए बेहतर सवाद ◌ं ◌ं भी आव□यक ह ै । बेहतर सवाद से ता2पय। □व□थ सवाद से ह ै िजसम; िक िव□□थ□ एव िशSक दोन" क: ◌ं ◌ं ◌ं भरपर सहभािगता हो । एकागी बातचीत (One way

talk) का कS ा म; कोई िवशेष मह2व नहz होता ह ै ू ं य"िक यह कS ा कS को िशSक क; ि®त बना दता ह ै । यिद कS ा म; सवाद दोन" ही तरफ से (िव थ ं एव िशSक) के तरफ से आव यकतानसार ठीक ढग से हो रहा ह ै तो इस तरह का अिधगम सदवै बेहतर ु ं ं होता ह ै । कS ा म; सवाद क: कित को िन$न तरीके से समझा जा सकता ह ै । ृ ं 1. लोकति

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.notesinhindi.com/blog/स्पर्श व्यंजन क व… id: **106**

क सवाद प/रि थित (Democratic Discourse Situation) ं ं 2. अलोकति क सवाद प/रि थित (Non- Democratic Discourse Situation) ं ं लोकति2क सवाद प!रिwथित (Democratic Discourse Situation): लोकति क सवाद ं ं ं ं प /रि थितयाँ वो प/रि थितयाँ होतz ह िजनम; िव थ एव िशSक को सामान अिधकार   होते ह । इस ं तरह के सवाद म; िव थ अपनी सभी सम याओ का िनदान िबना िकसी डर एव िहचक के कर लेता ह ै । ं ं ं आधिनक िव थ क; ि®त िशS ा णाली इसी सवाद प/रि थित पर क; ि®

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.learncbse.in/class-8-hindi-chapter-9… id: **107**

त होती ह ै । इस तरह के सवाद ु ं ं प/रि थित म ; अिधगम   या बहत तेज एव प होती ह।ै यह

सवाद प/रि थित अिधगम   या को c ं ं बेहतर बनाने के साथ साथ नयी चीज़" को सीखन े के िलए भी एक बेहतर माहौल उपलEध कराता ह ै । अलोकति2क सवाद प!रिwथित (Non- Democratic Discourse Situation):अलोकति क ं ं ं सवाद कित िव थ क; ि®त न होकर िशSक क; ि®त होती ह ै । इसम; िव   थाय" के थान पर िशSक क: ृ ं धानता होती ह ै । इस तरह के सवाद म; िव थ के पास अिधगम होने क: सभावना बहत कम होती ह ै । c ं ं उ राख ड म िव व लय 79 ु CPS -1 इस िविध म; साम यतः िशSक भाषण िविध (lecture method) से पढाता ह ै िजससे िव थ को H पछने क: सभावना घट जाती ह ैएव वह अपने सम याओ का समाधान नहz कर पाता ह ै। उपरो दोन" ू ं ं ं ं िविधय" म; लोकति क सवाद िविध çयादा भावशाली एव लोकि य मानी जाती ह।ै मनोवै   नक" ने ं ं ं भी लोकति क सवाद िविध को ही मह2वपण। एव उपयोगी माना ह ै । ू ं ं ं अ&य ास (1. कS ा म; सवाद क: कित पर एक िटÊपणी िलिखए ? ृ ं 2. लोकति

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.notesinhindi.com/blog/स्पर्श व्यंजन क व… id: **108**

क सवाद प/रि थित से आप या समझते ह ? ं ं 3. अलोकति क सवाद प/रि थित से आप या समझते ह ? ं ं 4. लोकति क एव अलोकति क सवाद प

/रि थित म; अतर प कर; ? ं ं ं ं ं 1.5   #   #"]   u N (Characteristics of Oral Language) सामा यतया बालक अनकरण (Imitation) # ारा मौिखक भाषा का योग वतः ही करने लगता ह ै पर त ु ु िव लय म; औपचा/रक प से इस कौशल को िवकिसत करने का यास िकया जाता ह ै । िवशेषकर भाषा के अVयापक को इस बात का   न अव य होना चािहए िक वह मौिखक भाषा- कौशल को िवकिसत करने क: से छा " को िकस तरह से बोलना िसखाय े और उनके मौिखक अिभXयि कौशल को या िदशा दान करे । इसके िलए उसे मौिखक भाषा के िन$न गण" क: जानकारी होना ु आव यक ह।ै 1. अवसर के अनकल (According to Occasion) : अवसर के अनसार ही भाषा का योग ु ू ु होना चािहए। जीवन के िविभ न अवसर" पर हष।, उ लास, शोक, दःख, दया, सहानभित ु ू ु एव Êयार आिद भाव" को Xय करना पड़ता ह ै । इन भाव" के अनकल ही उिचत हाव- भाव के ु ू ं साथ मौिखक अिभXयि करनी चािहए । 2. िश ता (Humbleness) : िकसी भी Xयि के साथ वाता।लाप करते समय िश चार का Vयान रखना चािहए । अिश मौिखक अिभXयि सामािजक सबध" को िबगाड़ देती ह ै । ं ं 3. ोताओ के अनकल भाषा (Language as per the standard of the listener): ु ू ं िजस तर के Xयि य" से बात क: जाए उसी कार क: भाषा का योग करना चािहए । 4. wवाभािवकता (Naturality) :बोलन े म; वाभािवकता होनी चािहए । बनावटी बोली का योग हा या पद हो जाता ह।ै अ वाभािवक भाषा व ा को अिव सनीय बना दते ी ह।ै वाभािवक भाषा एव अिभXयि िव सनीय होती ह ै । ं उ राख ड म िव व लय 80 ु CPS -1 5. मधरता (Sweetness): मौिखक अिभXयि म; मधर वाणी का योग करना चािहए । वाणी ु ु क: मधरता ही Xयि को िम बना लेती ह ै और कठोरता श बना दते ी ह ै । मीठी वाणी का ु ु योग का िकसी Xयि से सहजता से काम िनकाला जा सकता ह ै । 6. िवाहकता (Fluency): मौिखक अिभXयि म; उिचत वाह होना चािहए । िवराम िच ह" के उिचत पालन से अिभXयि म; स$यक गित व वाह आ जाता ह ै । का हा कम कना ह,ै कहाँ पण। िवराम दने ा ह,ै कहाँ Hसचक गित दने ी ह,ै कहाँ िव मयजनक, इन बात" के उिचत ू ू पालन से अिभXयि बहत भावशाली बन जाती ह ै । c 7. सव मािVय भाषा (Universal Language) : मौिखक अिभXयि म; सव।मा य भाषा का योग करना चािहए । अ चिलत शEद" के योग से वाता।लाप नीरस बन जाता ह ै । 8. सरलता (Simplicity): जो भी बात कही जाए उसके िलए सरल व सबोध भाषा का योग ु करना चािहए । अिभXयि का लाभ तभी ह ै जब वह 5ोता को समझ म; आ जाए । 9. श ता (Correctness) : बोलते समय श भाषा का योग करना चािहए । उ चारण भी ु ु श होना चाइये । अश उ चारण व अश भाषा के व Xय भावहीन हो जाता ह ै । ु ु ु 10. wप ता (Clarity) : बोलने म; प ता होनी चािहए । जो भी बात कही जाए प एव साफ़ ं होनी चािहए । बात को घमा – िफराकर नहz िब क सीधे शEद" म; साफ़- साफ़ कहना चािहए । ु अ&य ास (5. मौिखक भाषा के कौन से गण इसको अ य मािVयम" से अलग बनाते ह ? ु 6.

मौखिक भाषा के विशेषताओ पर काश डाल; । 7. मौखिक भाषा के विाहकता पर एक िटEपणी िलख; । 1.6 # # L (Elements of Oral Language) मौखिक भाषा जन सामाय के Xयवहार क: वत ह और इसका उव सामािजक जीवन के िविवध Xयवहार" के सचालन के िलये ही हआ । समाज समय, प/रिथितय" और आवयकताओ के अनसार c बदलता रहता ह और भाषा उसी क: अनगामी बनी रहती ह । िकत भाषा का 2व/रत प/रवतन िकसी भी कार आवयक और उपयोगी नहz ह । इसिलए भाषा के वप को थािय2व िदए जाने क: ज़रत ह । इस आवयकता क: पितI के िलए भाषा के तत्व" का अVययन और उसके सरSण का यास िकया जाता ह । इसी के साथ भाषा के वप को समझने और सही भाषा योग के िलये भाषा का Xयावहा/रक िवEेषण िकया जाना चािहए । उराखड म िवववलय 81 CPS -1 i. वाय शद और अ6र : मौखिक भाषा वाय" के माVयम से अिभXय होती ह । वाय मौखिक भाषा के मौिलक इकाई ह । मौखिक भाषा म; यिद कभी शEद या Sर का एक इकाई के प म; यो

Plagiarism detected: **0.06%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ id: **109**

ग होता ह तो वह भी वाय का थानपन होता ह । उदाहरण के िलए यिद "या तम बाज़ार गए थे ? इस H के उर म; हाँ कहा जाता ह

ित इसका ता2पय ह िक हाँ म; बाज़ार गया था। इस कार वाय मौखिक भाषा क: मौिलक इकाई ह । बालक जब प/रवार क: भाषा के अनकरण से मातभाषा Jहण करता ह तो वाय पी शEद" से ही भाव स$षण करता ह । यिद वह पानी कहता ह तो ता2पय ।

Plagiarism detected: **0.04%** https://mvhindipoint.com/k-se-gya-tak id: **110**

होता ह िक Eयास लगी ह । इस कार से भाषा सीखने और योग करने का वाभािवक म वाय" से आर$भ होता ह

। ii. िवषयानकल भाषा शैली : समाज म; Xयवहार के िलए िविभन अवसर" पर, िविभन िवषय" के बारे म; और िविभन लोग" से बातचीत का तरीका सीखना आवयक ह । िशिSत और अिशिSत, Jामीण व शहरी लोग" क: भाषा म; अतर होता ह । इसी म म; औपचा/रक और अनौपचा/रक, कायालयी और Xयापा/रक भाषा प" म; अतर होता ह । iii. उिचत wवर गित, बालाघात और िवराम : समाज म; भाषा – योग एक सवेदनशील म ह । इसके िलए अनके कार के क: कशलताओ और सावधािनय" क: अपेSा होती ह। इसम; वर और गित शािमल ह । वर का ता2पय। ह बोलते हए आवाज़ क: उचता या मदता और गित का c ता2पय। ह बोलते हए ज़दी-ज़दी या धीरे -धीरे बोलना । सदा ऊँ ची या नीची आवाज़ म; बात c करना सफल वाकशैली नहz कही जा सकती । iv. िवषय / भावानकल शदचयन : भाषा म; एक कार के भाव" और िथितय" को कट करने के िलए एक सामान तीत

Plagiarism detected: **0.05%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ + 3 resources! id: **111**

होने वाले शEद पाए जाते ह । इन शEद" के भाव और अथ म; िकिचत अतर होता ह जो कथन को अिधक भावी बनाने म; उपयोगी ह

ोता ह । जनसाधारण इन शEद" म; पतः भेद नहz कर पाते इसिलए जो शEद सामने पड़ता ह उसी का योग कर डालते ह। v. हाव भाव एव अग सचालन : भाषा समाज क: जीवतता और गितशीलता क: कजी ह। बात करते हए मनqय तो या पश भी अग सचालन अवय करते ह । इससे कय जीवत और अिधक c अथपण हो जाता ह। हाव- भाव का ता2पय। ह बात करते हए माथे क: िसकडन तथा शरीर के ने c िहस" के हरकत" से कय कपो अिधक प और भावपण बनाने का यास करना। इसी कार का यास जब हाथ" क: अगिलया, मëी, बाज और कध" क: सहायता से होता ह तो अग- सचालन कहलाता ह। वातव म; जैसे भाव अपनी अिभXयि के िलए शEद" का आ5य लेते ह वैसे ही हाव-भाव एव अग-सचालन भी अिभXयि को अिधक अथपण बनाने का उपम करते ह। vi. मौिलकता, wवाभािवकता तथा सहजता: भाषा िकसी Xयि क: िनजी व वानभत भावनाओ, आवयकताओ और िवचार" के स$षण का माVयम ह ।हम समाज के सािनVय एव अनकरण से भाषा सीखते अवय ह लेिकन उसका योग हमारे आवयकताओ के अनप होता ह न िक उराखड म िवववलय 82 CPS -1 अय" क: नक़ल या उ2रण से । भाषा के शEद उसके सभी योओ के Xयि गत अतभाव" के काशन के माVयम होते ह । अ&य ास (8. उिचत वर गित, बालाघात और िवराम से आप या समझते ह ? 9. मौिलकता, वाभािवकता तथा सहजता को प/रभािषत क:िजय । 10. वाय शEद और अSर का मौखिक भाषा म; या मह2व ह ? 11. मौखिक भाषा के तत्व पर काश डाल; । 1.7 O k b O$ # !u # $ N m # #" " (Strategies For Using Oral Language in the Classroom to Promote Learning in the Subject Area) मनqय एक सामािजक णी ह वह अपने सोच एव िवचार को एक दसरे तक लेन- देन करना चाहता ह । इस काम के िलए वह भाषा के दोन" प" का योग करता ह । वाणी (Speech) व िलिखत प (Written form)– जब Xयि , Vविनय" के माVयम से, मख के अवयव" के मदद से, उच/रत भाषा का योग करते हए अपने िवचार" को कट करता ह तब उसे मौखिक अिभXयि कहा जाता ह । इस c तरह से मख से अिभXय होने वाली भाषा मौखिक भाषा (Oral Language) ह और मख के अवयव" के #ारा भाव" एव िवचार" क: अिभXयि मौखिक अिभXयि ह । मौखिक अिभXयि भाषायी चार कौशल" म; से एक कौशल ह। साधारण भाषा म; इसे बोलचाल कहा जाता ह । समाज म; हम

अपने अिधकाँश काय। Xयवहार बोलचाल #ारा ही स$प□न करते ह □ । यह िवचार" के आदान □दान का सरलतम माVयम ह ै । िलिप के आिवqकार से पव। सम□त □□न बोल कर ही िदया जाता था और यह □म कई ू पीिढ़य" तक चलता रहता था। आज भी जीवन के सभी S◌े□" म; सफलता □□□ करने के िलए मौिखक अिभXयि म; कशलता ह।ै ु मौिखक भाषा का मह□व (Importance of Oral Language): मानव जीवन क: िजतनी भी मलभत ज□रत; ह,ै उनम; भाव" एव िवचार" क: अिभXयि भी एक अिनवाय।ता ह ै । जीवन के हर S◌े□ म; ू ू ं मौिखक भाषा का अपना ही मह2व ह ै । इसके मह2व को िन$निलिखत □□□ से दखे ◌ा जा सकता ह ै – i. मौिखक भाषा के □योग से कशल Xयि अपनी वाणी से जाद जगा सकता ह ै । भारत के ु ू प/र□□0य म; हम अटल िबहारी बाजपेयी के शा□□य भाषण" (Classical speeches)का उ□राख□ड म िव□□व□□लय 83 ु CPS -1 उदाहरण ले सकते ह □ िक िकस □कार से उ□ह"न े अपने भाषण" के दम पर दशे म; ही नहz बि□क अ□तरराq°◌ीय जगत म; भी अपनी अनठी पहचान बनायी । ू ii. बालक के अदर िज□□सा ज□म लेती ह ै वह तरह के □H पछ कर अपनी इस िज□□सा को शात ू ं ं करता ह ै और □स□नता का अनभव करता ह ै । इससे उसके □वाभािवक िवकास म; सहायता ु िमलती ह ै । उसके आ2म िव□□स म; वि□ होती ह ै और Xयि 2व म; िनखार आता ह।ै ृ iii. भाषा िशSण का एक □वाभािवक □म ह ै – बोलना, सनना, पढ़ाना और िलखना । बालक को ु मौिखक भाषा का □योग सनाने और बोलन े म; दS बनाता ह ै । यह बोल- चाल ह े पढ़ने – ु िलखने के कौशल को िवकिसत करन े का आधार बनता ह ै । iv. मौिखक भाषा ही अिभXयि का सहज एव सरलतम माVयम ह ै । मौिखक भाषा म; ही मनqय ु ं अपन े भाव" को □वाभािवक □प म; दसरे के सामने Xय कर पाता ह ै । ू v. दि◌ नक जीवन म; सभी काय।- कलाप" म; मौिखक भाषा ही □योग होती ह ै । अपने समाज म;, प/रवार म; अ□य सद□य" के साथ िवचार" का आदान – □दान करने के िलए तथा अपनी बात उनसे कहन े व उनकz बात समझने के िलए भाषा के इसी □प का □योग करना होता ह ै । vi. मौिखक भाषा के #ारा िवचारो को नए ढग से आदान- □दान म; बढो□री क: जाती ह ै । ं अिशिSत Xयि बोलचाल के #ारा ही □□न अिज।त कर लेता ह ै । vii. वाता।लाप, बोलचाल या □H◌ो□र #ारा सीखी गयी िव□ाiवा□त अपना □थायी □भाव छोडती ह ै । ु इस □कार िव□□लय म; िशSण – प□□त को रोचक व □भावशाली बनान े म; भी मौिखक भाषा का अ2यिधक मह2व ह ै । viii. सामािजक जीवन म; सामज□य □थािपत करने एव सामािजक सबध" को स□ढ़ बनाने म; भी ु ं ं ं ं मौिखक भाषा क: □मख भिमका होती ह ै । ु ू ix. राजनीितक जीवन म; आिधनक यग म; तथा सफलता क: □□□ से भी मौिखक भाषा का अपना ु ु मह2व ह ै । एक नेता अपनी भासन- कला के #ारा ही जन- समदाय को अपना

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.learncbse.in/class-8-hindi-chapter-9… id: **112**

बना लेता ह ै और ु अपनी बातचीत के #ारा अपने सपक म; आने वाले Xयि य" को □भािवत कर लेता ह

ै । ं x. िव□□लयी पाठय□म म; सभी िवषय" क: िशS◌ा म; मौिखक भाषा ही □मख माVयम होता ह ै । ् ु मौिखक भाषा ही सभी िवषय" का □□नाजान करन े का मल आधार ह ै । मौिखक भाषा के िबना सीखना ू और िसखाना दोन" ही किठन ह ै । अतः □□रिभक □तर पर से ही मौिखक भाषा क: िशS◌ा □दान क: जानी ं आव□यक ह ै तािक उ□च कS◌ा तक पहचँ ते- पहचाते उनक: अिभXयि म; श□, □प□ता, सबोधता, c c ु ु ं मधरता, □िवहकता, □वाभािवकता एव □भावो2पादकता परी तरह से िवकिसत हो जाए । इसके िलए ु ू ं अVयापक िन$निलिखत िशSण िविधय" एव साधन" का □योग कर सकता ह ै – ं i. वाता लाप - पाठय – पढ़ाते समय या िकसी अ□य अवसर पर व िशSक को चािहए क: ् बातचीत करे । हर छा□ को वाता।लाप म; भाग लेन े के िलए □□/रत करना चािहए । वाता।लाप का िवषय ब□च" के □□न व अनभव क: प/रिध के अदर का होना चािहए । यिद कोई ब□चा ु ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 84 ु CPS -1 उ2सकता □H पछे तो उसके □H का उ□र द े कर उसक: उ2सकता को सत□ करना चािहए । ु ू ु ु ं वाता।लाप म; छा□" से भी □H पछकर उनके मख से उ□र िनकलवान े का □यास करना चािहए । ू ु ii. □(◌ो□र – मौिखक िशS◌ा देने के िलए □H◌ो□र एक अ□छी िविध ह ै । सामा□य िवषय" पर या पाठयप□तक से स$बिधत पाठ" पर छा□" से □H पछन े चािहए । छा□" से पण। □प से उ□र ् ु ु ू ू ं □वीकार करना चािहए । यिद उ□र अपण। या अश□ हो तो उसे साहनभित पव।क पण। या श□ ू ु ु ू ू ू ु करवाया जाये । iii. िच2- वण न : िच□ देखने म; छोटे ब□चे □□च लेते ह □ । इस □कार िकसी िच□ को िदखाकर उस पर □H पछ कर ब□च" से िच□ वण।न कराना चािहए । जैसे गाय का िच□ िदखाकर गाय के बारे ू म; अनके बात; बता सकता ह ै । इसी □कार िच□ के #ारा कहानी कही जा सकती ह ै । मौिखक अिभXयि के िलए िच□- वण।न एक रोचक □णाली ह ै । iv. wवत2 आ□म□काशन का अवसर : ब□च" को समय – समय पर अलग- अलग तरह के ं अनभव होते ह।□ अलग – अलग घटनाओ, □□य" या Xयि गत जीवन से स$बिधत इन ु ं ं अनभव" को सनान े के िलए अवसर दके र अVयापक मौिखक भाषा का अGयास करा सकता ह ै । ु ु v. अन□छेद – सार या पाठ का सार : पाठय – प□तक या अ□य िकसी पि□का का कोई पाठ या ् ु ु रचना पढकर उसका सार त2व बताने के िलए

Plagiarism detected: **0.06%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ + 3 resources! id: **113**

कहा जाता ह ै । छा□ रचना क: □मख बात; सS◌ेप ु ं म; Xय करते ह □ । इसी □कार िकसी पाठ का कोई अन□छेद पढकर उसका सार बताने के िलए ु कहा जाता ह

ै vi. वाद- िववाद : पव। – िनधा।/रत िवषय पर इसम; बालक िवचार" का आदान □दान करते ह □ । ू कछ बालक िवषय के पS म; और कछ िवपS म; अपने िवचार □□तत करते ह □ । ु ु ु vii. भाषण: पव। िनधा।/रत कोई □□चकर िवषय दके र, अVयापक छा□" को भाषण देन े का अवसर ू □दान कर सकता ह ै । भाषण मौिखक अिभXयि का एक आसान साधन ह ै । भाषा का िवषय छा□" के मानिसक □तर के अनसार होना चािहए । ज़□रत के अनसार छा□" उिचत माग।दश।न ु ु भी करना चािहए ।

समय- समय िविभ□न भाषण □□तियोगताओ का आयोजन करके छा□" को ं भाषण म; भाग लेने के िलए □□2साहन करने का □यास भी करना चािहए । viii. नाटक- कला: नाटक मौिखक अिभXयि के सभी गण" को िवकिसत करने के िलए एक ु उपयोगी साधन ह।ै इसम; भाग लेन े वाले िव□□थ□ को पा□ के च/र□ के अनसार सही हाव- भाव, ु उतार चढाव के साथ एव □वाह के साथ सवाद □□तत करने होते ह □ । इस □कार उिचत नाटक ु ं ं का चनाव कर, अVयापक को छा□" क नाटक मचन म; पण। सहयोग देना चािहए । इससे छा□ ु ू ू ं परी लगन के साथ मौिखक अिबXयि क: िविवध शैिलय" को सीखते तथा उसका अGयास ू करते ह □ । ix. किवता पाठ : छोटे ब□चे गीत सनाने व सनाने दोन" म; ही काफ: □□च लेते ह।□ अतः किवताय; ु ु याद कराके उ□ह ; किवता पाठ के िलए □□/रत करना चािहए । उिचत हाव – भाव व अग सचालन ं ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 85 ु CPS -1 के साथ किवता पाठ करने म; उ□ह ; बहत आनद का अनभव होता ह ै । इसिलए किवता पाठ c ु ं मौिखक अिभXयि क: िशS□ा दने े का एक उपयोगी साधन ह ै । x. अV□या6री □□तियोगता : इस सािहि2यक ि□या म; बालक किवताओ को कठ□थ करते ह □ ं ं और □□तियोगता के समय पहले दल के #□ारा कही गयी किवता िजस वण। पर समा□ होती ह,ै उसी वण। से श□ होने वाली किवता सनाते ह □ । इससे ब□च" म; किवता के □□त □□च उ2प□न ु ु होती ह ै और मौिखक अिभXयि का अGयास भी होता ह ै । xi. सwवर वाचन : पाठय – प□तक का पाठ श□ करते समय िशSक को चािहए िक वह □वय ् ु ु ं अन□छेद का वाचन करे । िफर िव□□□थाय" से वाचन कराए िजससे िक मौिखक अिभXयि का ु ं सकोच दर हो जाए । ं ू xii. कहानी के मा□यम से पाठ को रोचक बनाना : ब□चे कहािनय" को बहत पसद करते ह □ । c ं अतः अVयापक को चािहए िक वह पहले □वय ही कहानी सनाये और िफर ब□च" को उसी ु ं कहानी को सनाने के िलए कह े । इससे 5वण कौशल एव मौिखक अिभXयि कौशल दोन" को ु ं िवकिसत करने म; सहायता िमलती ह ै । मौिखक अिभ□यि□ दोष कारण ,िनदान तथा उपचार बोलते समय तथा स□वर पठन करते समय ततलाना , हकलाना, शEद" का चबाना आिद मौिखक ु अिभXयि दोष कहलाते ह □ । मौिखक अिभXयि दोष के म□तः तीन कारण होते ह:□ १. शारी/रक ु िवकार २. भय और आतक का वातावरण और ३. मानिसक अव□□ता। ं i. शारी/रक िवकार : मौिखक अिभXयि का सीधा सबध वािग□®य" अथवा उ□चारण अवयव" – ं िजé□ा , कठ , दात , नाक, ताल आिद से ह ै । इनम; िकसी □कार िवकार उ2प□न होने से उ□चारण ू ं ं □प□ नहz हो पाता । मौिखक अिभXयि के अिधकाँश दोष उ□चारण स$बि□धत

Plagiarism detected: **0.06%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ + 3 resources! id: **114**

होते ह □ , जैसे ततलाना, भारी आवाज़ होना, अित/र अननािसकता, शEद" को चबाना आिद। 5विण□®याँ ु ु (कान) म; दोष भी मौिखक अिभXयि म; आड़े आता ह ै , िजसके कारण उ□चारण दोष आ जाता ह।ै ज

ो ब□चे ठीक से सन नहz पाते उ□ह ; बोलने म; भी किठनाई होती ह।ै ु ii. भय और आतक का वातावरण : चाह े घर हो या िव□□लय, भय और आतक का वातावरण ं ं ब□चे का सावेिगक सतलन िबगाड़ दते ◌ा ह।ै □□धी माता- िपता के ब□चे हकलान े लगते ह □ । ु ं ं अVयापक क: लगातार दाट फटकार से ब□चे म; आ2मिव□□स क: कमी हो जाती ह,ै जो उसक: ं मौिखक अिभXयि को दोषपण। बना दते ◌ी ह ै । ू iii. मानिसक अव□□ता : बालक क: मानिसक अव□□ता उसक: मौिखक अिभXयि म; बाधक होती ह।ै ऐसे बालक क: िब□िलEध का □तर सामा□य ब□च" क: तलना म; दो वष। पीछे होता ह ै ु ु और वो अपेS◌ाकत दरे से बोलना सीखते ह।□ ृ वागे□®◌ीय य दोष वाले ब□च" को िन$न लSण" से पहचाना जा सकता ह ै । उ□राख□ड म िव□□व□□लय 86 ु CPS -1 i. ऐसे ब□चे सामान Vविन वाले वण□ म; अ□तर नहz कर पाते और एक ही सामान उसका उ□चारण करके पढते ह □ , जैसे श व स । वे अ□प□□ण व महा□□ण वाले Vविनय" म; भी ठीक से िवभेद नहz कर पाते। जैसे- क, ख, ट, ठ आिद । ii. ऐसे ब□चे बोलते या पढते समय हकलाते ह □ , कभी एकवण। पर और कभी एक शEद पर ही उनक: वाणी □क जाती ह ै । िजससे अगला शEद या वण। देर से मख/रत होता ह ै । इस कारण ु उनक: मौिखक अिभXयि म; □वाह नहz रह पाता ह।ै iii. ऐसे ब□चे बोलते समय ततलाते ह □ िजससे 5ोता को उसका कथन समझने म; किठनाई होती ह।ै ु फलतः उनमे हीनता क: भावना घर कर जाती ह ै तथा वो दसरे से बातचीत करने म; घबराने लग ू जाते ह □ । उपचारा2मक सहायता हते मागा।दशा।क िनदशॆ : अिभXयि स$बि□धत दोष" तथा उनके कारण" का पता ु लगा लेने के बाद अVयापक उ□ह ; सधारन े के िलए िन$न िलिखत उपचारा2मक सहायता कर सकते ह □ । ु i. ततलाने वाले ब□च" को िनरतर बोलने का अGयास करवाए । यिद िनरतर अGयास से भी उनम; ु ं ं ं कोई सधार नहz होता ह ै तो िकसी अ□छे डा□टर से परामश। का सझाव दव; ; । ु ु ii. ततलाने व हकलाने वाले ब□चे को बोलन े के अित/र अवसर अव□य □दान कर; । उनका ु मनोबल ऊँ चा करने के िलए उ□ह ; अित/र अवसर अव□य □दान कर; । उनके साथ □□म एव ं सहानभितपण। रवैया अपनाएँ। इस बात का िवशेष Vयान रखा जाना चािहए िक इन ब□च" के ु ू ू उ□चारण का कS◌ा के अ□य ब□चे मजाक न उडाए । ं iii. इन ब□च" के सािथय" को □□2सािहत कर; िक वे इनके साथ घल िमल जाए और उनका उ□चारण ु ं ठेक करने म; उनक: हर □कार से सहायता कर; । iv. किठन Vविनय" का श□ उ□चारण करने के िलए और सीखाने के िलए टेप /रकाडIर , अ□य □□य ु 5Xय साधन" तथा िविभ□न सॉÖटवेयर का इ□तेमाल िकया जाना चािहए । अ&य ◌ास □(12. मौिखक भाषा के मह2व पर □काश डािलए । 13. मौिखक भाषा से आप □या समझते ह □ ? 14. भाषा िशSण का □वािभावक □म □या ह ै ? 15. मौिखक भाषा के पाच मह2व को उदाहरण सिहत समझाए । ं ं 16. नाटय कला एव किवता पाठ िकस तरह से मौिखक भाषा के प/रमाजान म; सहायक ह?ै ् ं 17. □H◌ो□र एव वाता।लाप के अतर को □प□ कर; । ं ं 18. □वत□ आ2म□काशन का अवसर से आप □या समझते ह □ ? ं 19. मौिखक भाषा के प/रमाजान के िलए अVयापक िकस तरह के िशSण िविधय" एव साधन" का ं □योग कर सकता ह ै ? उ□राख□ड म िव□□व□□लय 87 ु CPS -1 20. िवषय स$बिधत S◌े□ म; अिधगम िव□ के िलए मौिखक भाषा □योग करन े क: रणनीत पर ृ ं □काश डाल; ।

1.8 □□□□N] भाषा मानव समाज का सवाािधक मह2वपणाा आिवqकार ह ै। Vिन के िविवध □वर" और □□ततीकरण के ू ु अ□या□य □प" के माVयम से सि□ के सम□त □□णी पर□पर सचनाओ एव भावनाओ का स$□□षण करते ह □ । ृ ू ं ं ं कS◌ा कS म; सवाद का अपना ही मह2व ह ै □य"िक कS◌ा म; सवाद के #◌ारा ही अिधकाँश अिधगम सप□न ं ं ं होता ह।ै इसके अभाव म; अिधगम क: क□पना ही सभव नहz ह ै । । यिद कS◌ा म; सवाद दोन" ही तरफ ं ं से (िव□□थ□ एव िशSक) के तरफ से आव□यकतानसार ठीक ढग से हो रहा ह ै तो इस तरह का अिधगम ु ं ं सदवै बेहतर होता ह ै । कS◌ा म; सवाद क: □□कित को िन$न तरीके से समझा जा सकता ह ै । ृ ं 1. लोकतिा□क सवाद प/िर□थित ं ं 2. अलोकतिा□क सवाद प/िर□थित ं ं मनqय एक सामािजक □□णी ह ै वह अपने सोच एव िवचार को एक दसरे तक लेन- देन करना चाहता ह ै । ु ं ू इस काम के िलए वह भाषा के दोन" □प" का □योग करता ह ै । वाणी (Speech) व िलिखत □प (Written form)– जब Xयि , Vिनय" के माVयम से, मख के अवयव" के मदद से, उ□च/रत भाषा ु का □योग करते हए अपने िवचार" को □कट करता ह ै तब उसे मौिखक अिभXयि कहा जाता ह ै । ऐसे c तो बालक अनकरण #◌ारा मौिखक भाषा का □योग □वतः ही करने लगता ह ै पर□त िव□□लय म; ु ु औपचा/रक □प से इस कौशल को िवकिसत करने का □यास िकया जाता ह ै । िवशेषकर भाषा के अ□□पक को इस बात का □□न अव□य होना चािहए िक वह मौिखक भाषा- कौशल को िवकिसत करने क: □□□ से छा□" को िकस तरह से बोलना िसखाय े और उनके मौिखक अिभXयि कौशल को □या िदशा □दान करे 1.9]_` □□!" 1. लोकतिा2क सवाद प!िरwथित (Democratic Discourse Situation): लोकतिा□क ं ं ं सवाद प/िर□थितयाँ वो प/िर□थितयाँ होतz ह □ िजनम; िव□□थ□ एव िशSक को सामान अिधकार ं ं □□□ होते ह □ । 2. अलोकतिा2क सवाद प!िरwथित (Non-Democratic Discourse Situation) : ं ं अलोकतिा□क सवाद □कित िव□□थ□ क; िऺत न होकर िशSक क; िऺत होती ह।ै इसम; िव□□□थाय" ृ ं ं के □थान पर िशSक क: □धानता होती ह ै । उ□राख□ड म िव□□व□□लय 88 ु CPS -1 3. वाा|य श□द और अ6र (Sentence, word and letter) : मौिखक भाषा वा□य" के माVयम से अिभXय होती ह ै । वा□य मौिखक भाषा के मौलक इकाई ह ै । मौिखक भाषा म; यिद कभी शEद या Sर का एक इकाई के □प म; □योग होता ह ै तो वह भी वा□य का □थानप□न होता ह ै 4. वाद- िववाद (Debate) : पवा – िनधाा/रत िवषय पर इसम; बालक िवचार" का आदान □दान ू करते ह □। कछ बालक िवषय के पS म; और कछ िवपS म; अपन े िवचार □□तत करते ह □ । ु ु ु 5. हाव भाव एव अग सचालन : हाव- भाव का ता2पय । ह ै बात करते हए माथे क: िसकडन तथा c ु ं ं ं शरीर के ने िह□स" के हरकत" से क□य कपो अिधक □प□ और भावपणाा बनाने का □यास करना । ू इसी □कार का □यास जब हाथ" क: अिगलया, मëु◌ी, बाज और क□ध" क: सहायता से होता ह ै ु ु ू ं ं तो अग- सचालन कहलाता ह ै । ं ं 1.10 □N`□ e fNg □h" □ 1. कमार, के . 2001, □क ल क: िहदी, पटना: राजकमल। ु ू ं 2. चॉ$□क:, एन. 1957, िसनटि□टक □°□चसा, दी हगे : मौटेन क.। ं 3. चॉ$□क:, एन. 1959, /रXय ऑफ ि□कनसा वबाल िबिहे वयर. ल□»वेजेस 35.1.26-58 ू 4. चॉ$□क:, एन. 1972, ल□»वेज एड माइड, □ययाका : हारकोटा ·◌ास जोवानिोवच। ू ं ं 5. चॉ$□क:, एन. 1996, पॉवसा एड □□□पे□टस: /रफले□शस ऑन âमन नचे र एड द सोशल आडार, ् ं ं ं ू िद□ली: माVयम ब□स। ु 6. चॉ$□क:, एन. 1965, आ□पे□टस ऑäफ द □योरी ऑफ िसनटे□स, क□ ि·ज: एम. आइ.। टी. □□स। ् 7. चॉ$□क:, एन. 1986, नॉलेज ऑफ ल□»वेज, □ययाका : □ागर। ू 8. चॉ$□क:, एन. 1988, ल□»वेज एड □□Eल$स ऑäफ नॉलेज, व□फि·ज, मास: एम. आइ.। टी.। ं 9. दआ, एच. आर. 1985, ल□»वेज Êलािनग इन इिडया, िद□ली: हरनाम िपEलशसा। ं ं ु 10. हबे रमास, जे. 1998, ऑन द □□गमैिट□स ऑफ क$यिनवेफशन, क□ ि·ज, मास: एम. आइ.। टी. ु □□स। 11. हबे रमास, जे. 1998, दी िफलॉसिफकल िडसकोसा ऑäफ मॉडिनाटी, क□ ि·ज, मास: एम. आइ.। टी. □□स। 12. िशS◌ा म□□लय, िशS◌ा आयोग कोठारी कमीशन 1964 -1966, िशS◌ा एव राq °ीय िवकास, ं ं िशS◌ा म□□लय, भारत सरकार 1966 ं 13. नेशनल िपॉलसी ऑन एजके शन, 1986, मानव ससाधन िवकास म□□लय, िशS◌ा िवभाग, नयी ु ं ं िद□ली। 14. पटनायक, डी. पी. 1981, म□टीलगएिल¾म एड मदर-टग एजवेफशन, ऑ□सपफोडा यिनविसाटी ं ु ं ं ु ू □□स। उ□राख□ड म िव□□व□□लय 89 ु CPS -1 15. पटनायक, डी. पी. 1986, □टडी ऑफ ल□»वेजेज, ए /रपोटा, नयी िद□ली: एन.सी.इ.। आर.टी। 16. /रचäस, जे. सी. 1990, दी ल□»वेज टीिचग मैि°□स, कै ि·ज :कै ि·ज यिनविसाटी □□स। ू ं ् 17. सायर, डी. 1924, दी इपैफ□ट ऑäफ बाइिलिगल¾मम ऑन इटेिलज;स, ि·िटश जनाल ऑäफ ु ं ं साइकोलॉजी 14:25-38 18. 5ीधर, के .के . 1989, इि»लश इन इिडयन बाइिलिगल¾म ,नयी िद□ ली, मनोहर। ु ं ं ं 19. ितवारी, बी. एन., चतव◌ेदी, एम. और िसह, बी. 1972 (सपादकगण), भारतीय भाषा िव□□न क: ु ं ं भिमका, िद□ली : नेशनल िपEलिशग हाउस। ू ं 20. यने□को, 2003, एजके सन इन ए म□टीलगएल व□डा, यने□को एजके शन पोिजशन पेपर, पे/रस। ू ु ु ू ु ं 21. Xयोगो2सक:, एल. एस. 1978, माइड इन सोसायटी: दी डेवलपम;ट ऑäफ हायर ं साइकोलॉिजकल □□सेस, व□फि·ज, मॉस: हावाड यिनविसाटी □□स। ू 22. जमील, वी. 1985, रे□प"िडग ट □टड;ट राइिटग, टी. इ.। एस. ओ. एल. □□मािसक, 19.1 ू ू ं ं 23. इस वेबसाइट को ज□र देख; : http//www.languageindia.com 1.11 □ □O□L □# □d N 1. मौिखक भाषा के प/रमाजान िलए अVयापक िकस तरह के िशSण िविधय" एव साधन" का □योग ं कर सकता ह ै ? 2. मौिखक भाषा का मानव जीवन म; □या मह2व ह ै ? □काश डािलए । 3. मौिखक भाषा के त2व कौन –कौन से ह □ ? □प□ कर; । उ□राख□ड म िव□□व□□लय 90 ु CPS -1 □□□□ 2 - □[+: □: a□□□\ □: ;□ , □ □bbc, □□□- □□ , Sde □□ f g□, Sde □: S□□□ T C □□□ □□ □A ,□□ Discussion as Tool for Learning, the Nature of Questioning in the Classroom, Types of Questions and Teachers Role 2.1 □□त ◌ावना 2.2 उ□□□ य 2.3 सीखने के उपकरण के □प म; प/रचचाा 2.4 कS◌ा- कS म; □H" का □व□प 2.5 □H" के □कार 2.6 िशSक का िनय□ण ं 2.7 साराश ं 2.8 शEद ◌ावली 2.9 िनबधा2म क □H ं 2.10 सदभाा Jथ सची ू ं ं 2.1 □□□ □□ □ Xयि बहत सी □□न क: बात; एक दसरे सन कर जान पाता ह ै और इस तरह का □□□ □□न तलना2मक □□□ c ु ु ू से □थायी

भी होता ह ै । िकसी भी भाषा का □□न , बोध एव उपयोग के वल कSा गत प/िर□िथितय" म; ं पाठयव□त के घटक" और भाषा त2व" के □□न और अGयास से प/रपण। नहz होता । भाषा सजीव और ृ ु ू सवेदनशील पर$परा ह।ै वह व समाज और प/िर□िथितय" के साथ जीती ह ै और उ□ह ; गित □दान करती ह।ै ं इसिलए भाषा का पण। Xयावहा/रक □□न के वल पाठयप□तक" के अVययन से , और परीSाए □□□ कर के ृ ू ु ं नहz पाया जा सकता । िकसी भी िवषय को सीखने के िलए िविभ□न □कार के उपागम" का □योग करना चािहए । इन उपागम" म; प/रचचा। एक अित मह2वपण। उपागम ह ै । □□तत इकाई म; हम लोग प/रचचा। के ू ु मह2व एव कSा –कS म; िविभ□न □कार के □H" के □योग पर □काश डाला गया ह ै । ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 91 ु CPS -1 2.2 □ □ इस इकाई के अVययन के पyात आप- 1. सीखने के उपकरण के □प म; प/रचचा। के मह2व को समझ सक; गे । 2. कSा-कS म; □H" के िविभ□न □व□प को जान पाएगे ं 3. □H" के िविभ□न □कार" के उपयोग के बारे म; समझ पाएगे । ं 4. कSा- कS म; िशSक का िनय□ण कै सा होना चािहए जान पाएगे । ं ं 2.3 □"□ # '#□□ # x' □ '□□hh□ (Discussion as a tool for m learning) प/रचचा। का अथ। ह ै – िकसी िवषय के सभी पहलओ पर िवचार- िवमश। । प/रचचा। के िलए िवषय सम- ु ं सामियक घटनाओ और चचा। म; आये स□दभ□ से चना जा सकता ह ै । इस □कार क: गितिविध के िलए ु ं अलग से समय िनकालने या तैयारी क: आव□यकता नहz होती । िकसी िदन कSा म; पहचँ ान े पर आप c यिद पाय ; िक िव□□थ□ िकसी िवषय िवशेष पर चचा। के िलए उ2सक ह □ तो प/रचचा। के श□आत क: जा ु ु सकती ह ै । यह िवषय खेल, राजनीित , कोई िवशेष घटना या िनण।य भी हो सकता ह।ै प/रचचा। ले िलए çयादा समय भी खच। करने क: आव□यकता भी नहz होती । िशSक चने हए िवषय" पर िव□□□थाय" को c ु अपन े –अपन े िवचार □□तत करने के अवसर द ; और अत म; अपने िवचार" का समावेश करते हए चचा। का c ु ं सार □□तत कर द ; । ऐसी चचा। अनेक बार कोई पाठ या □करण पढते हए भी सामन े आ सकती ह ै । c ु आव□यकता इस बात को समझने क: ह ै क: ऐसी चचा।ए या िवचार िवमश। कभी भी Xयथ। या समय क: ं बबा।दी नहz होते , अिपत िव□□□थाय" को िवषय और भाषा □□न के साथ साथ □□ततीकरण का अवसर भी ु ु □दान करते ह □ । प/रचचा। के दौरान कछ बात" का Vयान रखा जाए तो इसे çयादा उपयोगी बनाया जा ु सकता ह ै । सबसे पहली बात यह क: प/रचचा। का िवषय िकसी न िकसी □कार से िव□□□थाय" से सब□ ं होना चािहए और उनके िलए उपयोगी भी । दसरी बात क: िव□□□थाय" को चचा। के िवषय से भटकन े न दने े ू के िलए िशSक को पण।तः सचेत रहना चािहए । यिद िव□□थ□ अपने िवचार □□तत करते हए िवषय से c ू ु भटक रह ; ह" तो िशSक को ह□तSेप करना चािहए और चचा। को पनः िवषय पर क; ि®त करना चािहए । ु तीसरी बात िक सभी िव□□□थाय" क: अपनी िवचार रखने क: □वत□□ता और पया।□ अवसर िमलना चािहए। जो पS म; जो कछ कहना चाह ; वह पS म; अपनी बात रखे , िक□त िवपिSय" को भी हतो2सािहत ु ु नहz िकया जाना चािहए । अितम बात □Hो□र , िवचार िविनमय और □प□टीकरण जैसी प/रचचा। के सभी ं गितिविधय" के दौरान □□तभािगय" क: भाषा सधी हयी , आवेश एव □□तशोध से म और सयत होनी c ु ं ं चािहए , तािक चचा। िकसी प/रणाम तक पहचे और सभी पS" के □□तभािगय" को स2य का प/रचय िमल c ं सके । उ□राख□ड म िव□□व□□लय 92 ु CPS -1 अ&य ास □(1. प/रचचा। से आप □या समझते ह □ ? 2. प/रचचा। के िलए आव□यक त2व" का उ□लेख कर; । 3. प/रचचा। के दौरान िकन बात" का Vयान रखना चािहए । 2.4 #k□ – #k □ □d□ #" □#□□□ (The nature of questions in m classroom) □H पछने का कौशल कSा – कS क: प/िर□िथितय" हते एक बहत ही मह2वपण। कौशल ह ै । इस कौशल c ू ु ू के #ारा अVयापक कSा म; □□च बनाए रखने के साथ- साथ िव□□□थाय" के □□न एव िनqिप□ का व□ितन□ ु ं म□याकन भी करता ह।ै हमारे िशSा Xयव□था म; िव□□□थाय" क: िनqिपत को जानने और समझने के िलए ू ं अVयापक यिद के वल औपचा/रक माVयम (स□□त परीSा) पर िनभर। रहगे ा तो वह उसके Xयि2व के ं अ□य पहलओ का िनरपSे म□याकन कर पाने म; शायद ही सSम हो पाए । इसिलए अVयापक" को कSा- ु ू ं ं कS प/िर□िथितय" म; भ े िभ□न िभ□न तरह के □H पछ कर उनके आ2मिव□□स म; वि□ के साथ- साथ ृ ू आ2म □काशन के सहज अवसर भी □दान करने चािहए । हम यह बात ठीक तरीके से जानते ह □ िक आधिनक समय म; Xयि अपन े मनोभाव" का □कटीकरण भाषाके माVयम से दो □प म; □ सकता ह ै । ु ं १. मौिखक भाषा २. िलिखत भाषा मानव □धानतः अपनी अनभितय" तथा मनोभाव" क: अिभXयि सहजता से मौिखक भाषा म; ही करना ु ू पसद करता ह ै । िलिखत भाषा, गौण तथा उसक: □□तिनिध मा□ ह,ै □य"िक भाव" क: अिभXयि का ं साधन साधारणतः सवा।□थम उ□चा/रत भाषा ही होती ह।ै इसिलए भी िव□□□थाय" से □H पछते रहना ू चािहये िजससे िक उनके मनोभाव" का □काशन होते रह े । िव□□लय" म; िह□दी, स□कत, अJेज़ी, आिद ृ ं ं िविभ□न भाषाएँ पढ़ाई जाती ह □ । इसके अित/र भी िविभ□न िवषय यथा भगोल, इितहास , िव□□न पढाये ू जाते ह।□ इन सभी िवषय" को पढ़ान े के िलए अVयापक प□तक पढवा कर अपन े कत।Xय" क: इित5ी समझ ु लेते ह □ । छा□ यिद कछ भी बातचीत करता ह ै तो सामा□यतया उसे डाट िदया जाता ह।ै मनोवै□□□नक" और ु ं भाषािशा□य" ने अपन े □योग" के आधार पर यह मत Xय िकया ह ै िक बोलचाल के #ारा ही िव□□थ□ ज़□दी सीखता ह ै । □Hो□र िविध क: सबसे बड़ी िवशेषता यही ह ै िक इसके #ारा िव□□□थाय" को बोलन े का अवसर िमलता ह ै । क6I- क6 म/ □(पछने का उ□□}य (Objective of questioning in classroom): ऐसे तो ू जीवन के हर एक Sे□ म; िकसी भी काय। को करन े के बाद इस बात क: जाच क:

Plagiarism detected: **0.05%** https://mycoaching.in/barahkhadi + 2 resources! id: **115**

जाती ह ै िक उस काय। म; ं क□□। को िकतनी सफलता िमली ह ै , पर□त िशSा के Sे□ म ; यह और भी ज़□री हो जाता ह ै िक

िशSण ु उ□राख□ड म िव□□व□□लय 93 ु CPS -1 □ि□या को िजस उ□□□ य क: □□□□ के िलए परा िकया गया ह ै उन उ□□□य" क: पिता म; िकतनी सफलता ू ू िमली ह ैएव उन उ□□□ य" क: □□□□ िकस □तर तक हयी ह ै। िकसी भी िवषय म; िनधा।रत □□न , कौशल तथा c ं यो»यताओ को तरत पता लगान े के िलए कS◌ा म; □H पचना आव□यक होता ह ै । भाषा- िशSण म; कS◌ा ु ू ं ं म; □H पछन े क: आव□यकता िन$न □प म; □प□ कर सकते ह □ ू १. छा2f क5 कमजो!रयf को दर करने एव उनक5 □गित म/ सहायता के िलये (To ं ू eliminate the weakness of student and for their development): कS◌ा म ; अVयापक जब □H पछता ह ै तो िव□□थ□ एव अVयापक दोन" को िकस िबद पर और अिधक ू ं ं ु प/र5म करने क: आव□यकता ह ै का नमान चल जाता ह ै एव अVयापक के माग।दशा।न म; िव□□थ□ ु ं िविश□ अGयास कर अपनी कमजो/रय" को दर कर भाषा स$बिधत िवशेष यो»यताओ को ं ं ू िवकिसत करने के िलए □यासशील होते ह ै । २. छा2f को अ□ययन के िलए □□!रत करना(To motivate the students for study) : □H पछने से िव□□□थाय" को पढ़ाई करने क: भी □□रणा िमलती ह ै । जो िव□□थ□ िनयिमत □प से ू अVययन काय। नहz करते अVयापक को उ□ह ; िवशेष □प से □H पचना चािहए िजससे उनके अदर ू ं अVययन क: आकाS◌ा बनी रह े । ं ३. िश6ण िविधयf के उिचत चनाव एव □योग म/ सहायक : िशSण □□□या एक ि□ðवीय ु ं ु □□□या ह।ै िशSण उ□□□य के िनधा।रण के पy◌ात उनक: □□□□ के िलए अVयापक िशSण काय। को ि□यािवत कता। ह ै । िशSण ि□या को कशलता पवाक सप□न करने के िलए अVयापक िविभ□न ु ू ं □कार के िशSण िविधय" का □योग करता ह।ै कS◌ा म; िविभ□न तरह के □H पछन े से िव□□□थाय" ू के िनqपि□ का अनमान िशSक हो जाता ह।ै ु ४. शि6क एव □यावसाियक माग दश न म/ सहायक : कS◌ा म; □H पछने के दौरान िशSक को ू ं िव□□थ□ के अिभ□□च के S◌े□ का पता चल जाता ह ै । िजससे िक वह आसानी से शिSक एव ं Xयावसाियक माग।दशा।न □दान कर सकता ह ै । अ&य ◌ास □(4. कS◌ा- कS म; □H पछने के उ□□□ य" पर □काश डाल; ? ू 5. कS◌ा- कS म; □H" क: □कित िकस □कार क: होनी चािहए ? □काश डाल; । ृ 6. कS◌ा कS म; □H पछना िकस □कार से छा□" क: कमजो/रय" को दर करन े एव उनक: □गित म; ू ं ू सहायक िस□ हो सकता ह ै ? उ□राख□ड म िव□□व□□लय 94 ु CPS -1 2.5 □d□ # □#□□ u□N □]k# #□ □ □N□□ (Types of Questions and Teachers control) िशS◌ा का उ□□□ य िव□□□थाय" के Xयवहार म; सकारा2मक प/रवता।न लाना ह ै तािक वे अपनी अ□तिना।िहत शि य" का अिधकािधक िवकास कर सक; । िशSण इस उ□□□ य क: साधना क: □□□या ह ै । िशSण □□□या अपने ल0य एव उ□□□य म; िकतनी सफलता □□□ िकया ह ै इसका सटीक □□न होना अित ं आव□यक ह ै । िव□□□थाय" को ठीक □कार का □□न हआ ह ै या नहz इसका पता लगाने के िलए सबसे सरल c एव सीधा माVयम कS◌ा म; पछा जाने वाला □H ह ै । इन □H"

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindialphabet.com/ id: **116**

क: सहायता से िशSक कS◌ा म; अपना ू ं िनय□ण भी □थािपत करता ह ै । □H" क: सहायता स

े िशSक कS◌ा म; अनशासन के साथ □□न वधा।न का ु ं काय। भी करता ह ै । कS◌ा म; मलतः िन$न तीन के □H पछे जाने चािहए । ू ू i. िवचारा□मक □(: िवचारा2मक □H मलतः िनबधा2मक □H होते ह □ । इन □H" का कोई एक ू ं उ□र नहz होता ह।ै अपने िवचार □□तत करने क: इस □कार के □H" म पण। □वत□ता होती ह ै । ु ू ं ं ii. िवwतत उ□र वाले िनबधा□मक □(: ऐसे □H" म ; □वत□ अिभXयि िक िलए □वत□□ होने के ृ ं ं ं साथ साथ □H" के उ□□□य भी □प□ होते ह □ और उ□र क: सीमा भी बहत हद तक िनधा।रत रहती c ह ै । iii. भाषा परी6ा एव वwितनwठ □(: के वल िनबधा2मक एव लघ उ□रा2मक □H" से ही भाषा ु ु ं ं ं एव िसाह2य क: परीS◌ा नहz क: जा सकती ह ै । व□त िन□ □H" के ऊतर म; □वत□ भाव या िवचार ु ं ं □काशन क: छट नहz रहती ह ै । ू □(◌ो□र िविध के लाभ (Advantages ofquestion answer method): □H◌ो□र िविध का सबस े महवपण। लाभ यह ह ै िक इससे िव□□□थाय" म; आ2मिव□□स क: िव□ के साथ-साथ उनके मौिखक ृ ू अिभXयि का कौशल भी बेहतर होता ह ै । इसिलए िव□□□थाय" से उनक: □□च, अनभव तथा यो»यता के ु आधार पर ही □H पछे जाने चािहए । □H वाता।लाप के □प म; भी पछे जा सकते ह।ै □H क: भाषा सरल ू ू □प□ तथा िवचारोदबोधक होनी चािहए । □H◌ो□र िविध के िन$न लाभ ह □ 1. िव□□थ□ म; अपन े अनभव , भाव तथा िवचार" को को श□ , □वाभािवक, □प□ तथा □भावपण। ु ु ू शEद" म; बोलकर Xय करने क: यो»यता उ2प□न करता ह ै । 2. सकोच एव िझझक को दर कर दसरे के स$मख यि पण। ढग से अपना मत Xय □ सकने क: ु ु ू ं ं ं ू ु कशलता पैदा करता ह ै । ु 3. उ□र दते े समय अपनी बात तािक। कता एव मधरता से के साथ रखने के हनर का िवकास होता ह ै । c ु ं 4. इससे बोलचाल के साम□य दोष का िनवारण भी होता ह ै । उ□राख□ड म िव□□व□□लय 95 ु CPS -1 क6ा म/ िश6क क5 भिमका (The role of teacher in classroom): ब□च" को समिचत िशS◌ा ू ु तथा सफल अVयापन म; िशSक क: भिमका काफ: मह2वपण। होती ह ै । अतः यहा हम िशSक क: ू ू ं ं भिमका िन$न □तभ" म; दखे ने का □यास कर;गे । ू ं i. कS◌ा के अतगा।त िशSक क: भिमका सवा।□थम एक मनोवै□□□नक (Psychologist) के □प म ; ू ं होती ह ै । िशSक के िलए यह आव□यक ह ै िक वह कS◌ा म; उपि□थत ब□च" क: आव□यकताओ ं (Necessities) , □□रणाओ (Motivations) एव मनोिवतय" (Attitude) क: जानकारी रखे । ृ ं ं िशSक ब□च" को समझन े म; िजस सीमा तक सफल होते ह □ उसी सीमा तक कS◌ा म ; उनका िनय□ण एव अVयापन □भा

Plagiarism detected: **0.06%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ id: **117**

वी होता ह ै तथा बचे ि शSण से लाभाि □वत भी हो पाते ह □ । ं ं ii. ि शSक क: भिमका एक सलाहकार (Counsellor) क: भिात भी ह ै। ऐसे ब□चे भी होते ह □ ज

ो ृ ं अपन े आप को उपेि Sत तथा ि तर□कत महसस करते ह □ । इ□ह ; हम पथक बालक (Isolated ृ ृ ृ Children) कहते ह □ । अतः एक सफल ि शSक ऐसे ब□चे क: सहायता करता ह ै तथा उसके समायोजन सम□या (Adjustment Problem)के समाधान का □यास करता ह ै। इसी तरह पढ़ाई छोडना (Drop Out), गैहाजिर होना (Absenteeism)आिद के कारण" को जानने तथा इनके ि नराकरण के ि लए सफल ि शSक □यास करता ह ै। iii. कS ा के अतगात ि शSक सबसे मह2वपणा भिमका नेता क: होती ह ै। ि शSक अपन े वगा का नते ा ू ू ं होता ह ै। नते 2व के कई □कार होते ह □ ि जनम; स□□धारी नते 2व , □जाति ा□क नेत2व एव न अड़चन ृ ृ ृ ं ं डालन े वाला नेत2व म□य ह ै। ि शSक ि कस □कार के नेत2व क: भिमका अदा करता ह,ै इस बात ृ ृ ु ू पर उसके अVयापन क: □भावशीलता ि नभार करती ह ै। इस स$ब□ध पर अनेक □योगा2मक अVययन ि कये गए ह □ और यह दखे ने का □यास ि कया गया ह ै ि क ि कस □कार का नेत2व ब□च" को ृ सही ि शS ा के ि लए उपयोगी ह ै। स□□धारी नेत2व का अथा ऐसे नते 2व से ह,ै ि जसम; ि शSक सब कछ होता ह ै। ि शSक ही ृ ृ ु ि व□□□थाय" को आदेश दते ा ह ै और ि व□□थ□ उसके आदेश" का पालन करते ह □ । इस तरह के नेत2व ृ म; ि शSक सि□य

Plagiarism detected: **0.06%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 3 resources! id: **118**

होता ह ै और ि शS ाथ□ ि निq□य , दसरी ओर □जाति ा□क नेत2व के अतगात ृ ं ं ू अिधकार" का ि वके □®ीकरण (Decentralisation)पाया जाता ह ै। ि शSक तथा ि शSि थाय" के बीच म

ै□□पणा स$ब□ध , सहयोग एकता का भाव आिद ि वशेषताए दखे ी जाती ह ै। न अड़चन ू ं डालन े वाला नेत2व का ता2पया ऐसे नेत2व से ह ै ि जसके अतगात ि शSक नेता के □प म; के वल नाम ृ ृ ं का रहता ह ै वह ब□च" को परी □वत□ता द े दते ा ह ै और उनके Xयवहार" म; ि कसी तरह क: बाधा ू ं अपनी ओर से नहz डालता ह ै। iv. ि भ□न – ि भ□न □कार के नते 2व के प/रणाम" को दखे ने के ि लए कई सारे □योगा2मक अVययन ृ (Experimental Studies) ि कय े गए । खास कर □□जाति □□क नेत2व (Democratic ृ Leadership) तथा स□□धार नते व (Authoritarian leadership) के □भाव" को दखे ने के ि लए ृ लिवन , ि लिपट तथा éाईट(Levin, Lipit and White, 1939) तथा ि लिपट एव éाईट (Lipit ं and White, 1943) ने ब□च" पर अVययन ि किया , उ□ह"ने दखे ा ि क स□□धारी नेत2व के अतगात ृ ं उ□राख□ड म ि व□□व□□लय 96 ु CPS -1 ब□च" के Xयवहार □जाति ा□क नते 2व से ि भ□न हए । ि शS ा को Vयान म; रखते हए □जा ति ा□क c c ृ ं ं नेत2व पर बल ि दया गया ह ै। शीन (Schein, 1979) के अनसार बड़े सगठन के ि लए □जाति ा□क ृ ु ं ं नेत2व तथा छोटे सगठन के ि लए स□□धारी नेत2व अिधक सफल ह ै। न अड़चन डालने वाला ृ ृ ं नेत2व (Laisseiz faire leadership) ि कसी भ ेसगठन के ि लए उपय नहz ह ै। यह बात वगा या ृ ु ं S प/रि □तती म; भी ि शSक क: भिमका पर भी लाग हो सकती ह ै। ू ू v. कS ा म; ि शSक एक ि वशेष□ (Expert) क: भिमका म; होता ह ै। अतः ि शSक को अपने ू अVयापन ि वषय क: पयाा□ जानकारी होनी चािहए ि ताक छा□" को अVयापन से अिधक से अिधक लाभ ि मल सके । ि शSक को ि शS ा के उ□□□ य से अवगत होना चािहए ि क ि शS ा वतामान समय म; बाल क; ि ®त (Child Centred) हो चली ह ै।और इसका उ□□□ य ह ै ि क बालक का सवाागीण ि वकास (All-round Development) हो अथाात मानिसक ि वकास (Mental Development) , शारी/रक ि वकास (Physical Development) , ह□तकौशल ि वकास (Hand skill development) तथा òदय ि वकास का समिचत □प से हो सके । ु vi. ि शSक का एक आव□यक गण ह ै □नेह, सहानभित , Êयार, Sमाशीलता (Forgiveness) तथा ु ु ू 2याग (Sacrifice) । य े सभी गण वा□तव म; एक माता के गण कहलाते ह □ । इसी अथा म; कहा ु ु जाता ह ै ि क कS ा म; ि शSक को अपने छा□" के साथ ऐसा स¿ाव रखना चािहए जैसा माताए ं अपन े ब□च" के □□त रखती ह ै। लेिकन माता क: भिमका म; ि शSक को सवेग" (Emotions) पर ू ं ि नयं□ण भी रखना चािहए। ं अ&य ास □(7. कS ा म; ि शSक क: भिमका (The role of teacher in classroom) पर □काश डाल; । ू 8. कS ा म; ि विभ□न □कार के नते 2व पर □काश डाल; ? ृ 9. ि शSक क: भिमका एक सलाहकार (Counsellor)क: भिात होती ह ै। इस कथन क: Xया□या ू ं कर; 10. कS ा म; मलतः ि कतने □कार के □H पछे जाने चािहए ? उदाहरण सिहत समझाए । ू ू ं 2.6 साराश ं ि कसी भी भाषा का □□न , बोध एव उपयोग के वल कS ागत प/रि □थितय" म; पाठयव□त के घटक" और ् ु ं भाषा त2व" के □□न और अGयास से प/रपणा नहz होता । भाषा सजीव और सवेदनशील पर$परा ह।ै वह ू ं व समाज और प/रि □थितय" के साथ जीती ह ै और उ□ह ; गित □दान करती ह ै। इसिलए भाषा का पणा ू Xयावहा/रक □□न के वल पाठयप□तक" के अVययन से , Xयाकरण के अGयास से और परीS ाए □□□ कर के ् ु ं नहz पाया जा सकता । भाषा सीखने के ि लए ि विभ□न □कार के उपागम" का □योग करना चािहए । इन उ□राख□ड म ि व□□व□□लय 97 ु CPS -1 उपागम" म; प/रचचाा एक अित मह2वपणा उपागम ह ै। ि व□□□थाय" को ठीक □कार का □□न हआ ह ै या नहz c ू इसका पता लगान े के ि लए सबसे सरल एव सीधा माVयम कS ा म; पछा जान े वाला □H ह ै। इन □H"

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindialphabet.com/ id: **119**

क: ू ं सहायता से ि शSक कS ा म; अपना ि नयं□ण भी □थािपत करता ह ै। □H" क: सहायता स

े ि शSक कS ा म ; ं अनशासन के साथ □□न वधान का काया भी करता ह ै। ु 2.7]_` □□!" 1. प!रचचाा : ि कसी ि वषय के सभी पहलओ पर ि वचार- ि वमशा करना ु ं 2. स□□धारी नेत□व : स□□धारी नते 2व का अथा ऐसे नेत2व से ह,ै ि जसम;

िशSक सब कछ होता ह ै । ृ ृ ृ ु िशSक ही िव□□□थाय" को आदशे देता ह ै और िव□□थ□ उसके आदेश" का पालन करते ह □ । इस तरह के नेत2व म; िशSक सि□य

Plagiarism detected: **0.06%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 3 resources! id: **120**

होता ह ै और िशSाथ□ िनिq□य। ृ 3. □जाताि2क नेत□व : □जाताि□क नेत2व के अतगत अिधकार" का िवके □®ीकरण ृ ृ ं ं ं (Decentralization) पाया जाता ह ै । िशSक तथा िशSाथय" के बीच म

ै□□पण। स$ब□ध , सहयोग ू एकता का भाव अािद िवशेषताए दखे ी जाती ह ै । ं 4. अड़चन डालने वाला नेत□व (Laisseiz faire leadership) : न अड़चन डालन े वाला नेत2व ृ ृ का ता2पय ऐसे नेत2व से ह ै िजसके अतगत िशSक नेता के □प म; के वल नाम का रहता ह ै वह ृ ं ब□च" को परी □वत□ता द े दते ा ह ै और उनके Xयवहार" म; िकसी तरह क: बाधा अपनी ओर से नहz ू ं डालता ह ै । 2.8 □N`□ e fNg □h" □ 1. अJवाल, पी. और सजय कमार 2000 (सपादक), िहदी दशे काल म; ं ु ं ं 2. चॉ$□क:, एन. 1957, िसनटि□टक □°□चस, दी हगे : मौटेन क. । ं 3. चॉ$□क:, एन. 1959, /रXय ऑफ ि□कनस वबल िबिहे वयर. ल□»वेजेस 35.1.26-58 ू 4. चॉ$□क:, एन. 1972, ल□»वेज एड माइड, □ययाक : हारकोटे ·ास जोवािनोवच। ू ं ं 5. चॉ$□क:, एन. 1996, पॉवस एड □□□पे□टस: /रफले□शस ऑन âमन नचे र एड द सोशल ृ ं ं ं ू आडार, िद□ली: मा/Vयम ब□स। ु 6. चॉ$□क:, एन. 1965, आ□पे□टस ऑâफ द □योरी ऑफ िसनटे□स, क□ ि·ज : एम. आइ.। टी. ृ □□स। 7. चॉ$□क:, एन. 1986, नॉलेज ऑफ ल□»वेज, □ययाक : □ागर। ू 8. चॉ$□क:, एन. 1988, ल□»वेज एड □□El$स ऑâफ नॉलेज, व□फि·ज, मास: एम. आइ.। टी. । ं 9. दआ, एच. आर. 1985, ल□»वेज Êलिानग इन इिडया, िद□ली: हरनाम पिEलशस। ं ं ु उ□राख□ड म िव□□व□□लय 98 ु CPS -1 10. हबै रमास, जे. 1998, ऑन द □□गमिैट□स ऑफ क$यिनवेफशन, क□ ि·ज, मास: एम. आइ.। टी. ु □□स। 11. हबै रमास, जे. 1998, दी िफिलॉ□फकल िडसकोस ऑâफ मॉडिनटी, क□ ि·ज, मास: एम. आइ.। टी. □□स। 12. कमार, के . 2001, □क ल क: िहदी, पटना: राजकमल। ु ू ं 13. िशSा म□□लय, िशSा आयोग कोठारी कमीशन 1964 -1966, िशSा एव राq° ीय िवकास, ं ं िशSा म□□लय, भारत सरकार 1966 ं 14. नेशनल पॉिलसी ऑन एजके शन, 1986, मानव ससाधन िवकास म□□लय, िशSा िवभाग, नयी ु ं ं िद□ली। 15. पटनायक, डी. पी. 1981, म□टीलगएिल¾म एड मदर-टग एजवेफशन, ऑ□सपफोड। ु ु ं ं ं यिनविसटी □□स। ू 16. पटनायक, डी. पी. 1986, □टडी ऑफ ल□»वेजेज, ए /रपोट, नयी िद□ली: एन.सी.इ.। आर.टी। 17. /रचâस, जे. सी. 1990, दी ल□»वेज टीिचग मिै°□स, कै ि·ज :कै ि·ज यिनविसटी □□स। ू ं ृ 18. सायर, डी. 1924, दी इपैफ□ट ऑâफ बाइिलिगल¾मम ऑन इटिेलज;स, ि·िटश जनल ऑâफ ु ं ं साइकोलॉजी 14:25-38 19. 5ीधर, के .के . 1989, इि»लश इन इिडयन बाइिलिगल¾म ,नयी िद□ ली, मनोहर। ु ं ं ं 20. ितवारी, बी. एन., चतव्दी, एम. और िसह, बी. 1972 (सपादकगणद), भारतीय भाषा िव□□न ु ं ं ृ क: भिमका, िद□ली : नेशनल पिEलिशग हाउस। ू ं 21. यने□को, 2003, एजवेफशन इन ए म□टीलगएल व□ड, यने□को एजके शन पिोजशन पेपर, ू ु ु ू ु ं पे/रस। 22. वायगो2सक: , एल. एस. 1978, माइड इन सोसायटी: दी डेवलपम;ट ऑâफ हायर ं साइकोलॉिजकल □□सेस, व□फि·ज, मॉस: हावड यिनविसटी □□स। ू 23. जमील, वी. 1985, रे□प"िडग ट □टड;ट राइिटग, टी. इ.। एस. ओ. एल. □□मािसक, 19.1 ू ू ं ं 24. इस वेबसाइट को ज□र देख; : http//www.languageindia.com 2.9 □ □O□L □# □d N 1. सीखन े के उपकरण के □प म; प/रचचा से आप □या समझते ह □ ? 2. कSा- कS म; □H" का □व□प पर □काश डाल; । 3. □H" के □कार एव िशSक का िनय□ण से आपका □या अिभ□□य ह ै ? □प□ कर; । ं ं 4. कSा म; िशSक क: भिमका (The role of teacher in classroom) पर □काश डाल; । ू उ□राख□ड म िव□□व□□लय 99 ु CPS -1 □□□□ 3- □) □:X , □k+ □□)R : □,□ I□ m□+, m□+, \□ T C W □ हn)e □□ □□□□ , , PQ R S□□□□ T C □\□n,□ □) f□,□ C □o□□□□\ □) f□,□ हf□□□C □\ □) f□ □ pb□+□□□ □) f□□ Y □□ S□ □, f□□,□ B□□C Reading in the content areas: Social Science, Science, Science, Mathematics and Literature of relevant languages, nature of Expository texts vs. Narrative texts, Transactional texts vs. Reflexive texts, schema theory, Text structures; examining content area textbooks; reading strategies for children- note making, summarizing 3.1 □□तावना 3.2 उ□□□ य 3.3 पठन कौशल क: अवधारणा 3.4 पठन □□□या का अिभ□□य 3.5 िवषय S े□ म; पठन काय : सामािजक िव□□न, िव□□न, गिणत एव िविवध सािह2य" क: ं भाषा म ; 3.6 अथ □काश िवषय व□त बनाम िववरणा2मक िवषय व□त ु ु 3.7 ह□ता□तरण िवषय व□त बनाम िचतन परक िवषय व□त (Reflective Text) ु ु ं 3.8 साराश ं 3.9 अGयास □H 3.10 सदभ J□थ सची ू ं 3.11 िनबधा2मक □H ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 100 ु CPS -1 3.1 □□□□□ □ भाषा के मल चार कौशल" (सनना, बोलना, पढ़ना, िलखना) म; से पढ़ना (पठन) एक मह2वपण ि□या ू ु ू ह।ै इस कौशल म; बालक िलिखत या मि®त पाठयाश वण□, शEद", वा□य" या अन□छेद" को जोर-जोर से ृ ु ु ं बोलकर या मन म; पढ़कर उनका भाव Jहण करता ह ै । यिद िदए गये अन□छेद को पढ़न े के बाद उसमे से ु □H पछे जाए और बालक अनकल उ□र नहz द े पाता ह ै तो यह इस बात को □प□ करता ह ै िक बालक ने ू ु ू अन□छेद का वाचन ही िकया ह,ै पठन नही । पठन-सामJी के अ□तः भाव को समझकर दसर" को समझा ु ू सकने मे सफल होना ही पठन का म□य उ□□□ य ह ै । अथात िकसी िलिखत या मि®त पाठय व□त, भाषा या ृ ु ु ु िच□ को दखे कर उसके भाव या आशय को समझना या उसका अथ Jहण करना ही पठन (Reading) कहलाता ह ै । 3.2 □ □ 1. िव□□थ□ पढ़ने के अथ को समझ सक; गे । 2. िविभ□न िवषय" के स□दभ । म; पढ़ने के मह2व को जान सक; गे । 3. िविभ□न िवषयS े□ म; पढ़ने क: अवधारणा को समझ सक; गे। 4. पठन □□□या को समझ सक; गे। 3.3 '□ #]! #" b□O□□□□ (□N□L□□) (Concept of Reading) पठन कौशल को समझन े हते इसके म□य अवयव" को समझना अितआव□यक ह ै । यह

अवयव ह-□ शEद" ु ु को पहचानना तथा समझ कर पढना। समझकर पढना तभी सभव हो पायेगा जब हम शEद" के अथ। ं समझते ह" । यह एक □थािपत त□य ह ै िक पढना सीखने पर िलखना और सरल हो जाता ह ै । अत:पढ़ने के समिचत कौशल ही िव□□□थाय" क: □गित के िनधारक ह □ । हम अ□सर यह दखे ते ह □ िक कS◌ा पाचवz तक ु के ब□चे भी ठीक से पढ़ नहz पाते ह □ । यह बात के वल हमारे दशे पर लाग नहz होती वरन , अमे/रका एव ृ ू ं कई अ□य िविकसत दशे भी ब□च" क: पढ़ने क: अSमता क" लेकर िचितत ह ै । यिद हम अमे/रका के बारे ं म; जान; तो यह बात सामन े उभर कर आती ह ै िक वहा पठन कौशल म; सधार हते "नो चाइ□ड लैÒट ु ु ं िबहाइड (No child left behind) " 2002 के समथान मे रीडिग पहले काया□म लाया गया था, िजसम; ं ं वहाँ पर रा¾य" को □□थिमक कS◌ाओ के पठन कौशल िवकास पर वै□□□नक तरीक" को अपनाने हते ु ं सहायता दी जाती ह।ै उ□राख□ड म िव□□व□□लय 101 ु CPS -1 3.4 '□ □□□□□ #□ b□□□□□ (The process of reading process) जो लोग पढ़ नही सकते उनके िलए पढ़ना एक रह□य या आ□य।जनक होता ह ै । कई साल पहले िवशेष□" को भी यह मालम नही था िक जब ब□चा पढ़ना सीखता ह,ै तो दरअसल करता □या ह ै ? अपन े अनभव ू ु और पर$परा

Plagiarism detected: **0.03%** https://saralhindivyakaran.in/swar-and-vyanjan-… id: **121**

के आधार पर िशSक" ने कछ िविधय" क: खोज क: जैसे वण।माला िविध, उ□चारण िविध,

ु शEद िविध इ2यािद । पढ़ने क: □□□या म; मह2वपण। ह ै अिकत सचना को Jहण करना । हमारी आखे जब ू ू ं ं अSर", िवराम िच□ह", शEद" और शEद" के बीच छोड़ी गयी जगह" का मआयना करती ह,ै तो हमारा ु मि□तqक इस Jािफक (हाथ से िलिख गई या छपी हई) सामJी क: स$पण। मा□□ पर Vयान नही दते ◌ा । यिद c ू ऐसा होता तो छोटी-छोटी सचनाओ पर गौर करने से मि□तqक क: Sमता पर अ2यिधक बोझ पड़ता और ू ं अिधकाश लोग िजस रÒतार से पड़ते ह,ै वह अस$भव हो जाता ह ै । पार$प/रक िविधय" से पढ़ना सीखने ं वाले कई ब□चो के साथ यही होता ह ै । वे हर शEद को अSर" क: छोटी इकाईय" म; तोड़ता ह ै और इस तरह शEद" का अथ। Jहण करने हते मि□तqक क: Sमता पर बहत ¾यादा बोझ डाल दते ◌ी ह ै । एक □वीण c ु पाठक क: आख; ऐसा बोझ पड़न े नही दते ◌ी, □य"िक वे पपे र पर अिकत Jािफक सचनाओ के सीिमत, चने ू ु ं ं हए अश से जझती ह ै । □वीण पाठक शEद के परे अSर" व वा□य" के सारे शEद" पर Vयान नही देता । c ू ू ं पढ़ते समय पाठक क: आख; सामJी के एक छोटे से अश पर गौर करती ह,ै शेष वह अनमान के ज/रये ु ं ं Jहण करता ह,ै जो समझ से पण। होता ह ै । इस अनमान का आधार होता ह ै -अSर" क: आिकतयाँ, शEद, ृ ू ु उनके साथ सयोजन और सामा□य दिनया से पाठक का पहले से मौजद प/रचय । पढ़ना एक एकाक: ू ं ु □□□या नही ह,ै उसमे कई □□□याए शािमल ह ै । पढ़ते समय भाषा के उपयोग से जड़े तीन तरह के सके त ु ं ं हमारे Vयान म; आते ह ै – i. अSर" क: आिकतयाँ और उनसे जडी Vविनयाँ । ृ ु ii. शEद" के अथ। । iii. वा□य िव□यास । पढ़ने क: परी □□□या म; अSर पहचान मह2वपण। ह ै । इसके पीछे मा□यता यह भी ह ै िक िलिखत भाषा ू ू अSर" का समह ह,ै िजसमे □2यके अSर एक Vविन का □□ितिनिध2व करता ह ै । अSर को दखे कर उससे ू जडी Vविन का उ□चारण कर देना पढ़ना नही माना जाता ह ै । वा□तव म; पढ़ने का सव□□म तरीका पढ़ना ु ह ै पढ़कर ही पढ़ना िसखा जा सकता ह ै । जैसे – साईिकल व उसे चलाने के बारे म; बारीक़ जानकारी होन े का यह अथ। नही िक Xयि के #◌ारा साईिकल चला ली जाएगी । साईिकल चलाने के िलए तो उस पर बैठकर व चला कर ही िसखा जा सकता ह ै । ठीक जैसे तैरना सीखन े के िलए पानी म; उतरना ही पड़ता ह।ै िनqकषातः पहले िदन से ही पढ़ाने क: साथाक सामJ◌ी होना आव□यक ह ै । यह साथाकता उस िव□□थ□ के सदभ । म; आक: जानी चािहए, जो उस सामJ◌ी का पाठक ह ै । इस स□दभ । म; यह त□य मह2वपण। ह ै िक पढ़ने ू ं ं के िलए दी जाने वाली सामJ◌ी िकस भाषा म; ह ै । िजस भाषा म; सामJ◌ी उपलEध कराई जा रही ह,ै उस भाषा से बालक प/रिचत ह ै । भाषा का समJ □प तो बालक के इ□तेमाल म; उभरता ह,ै चाह े वह िलखने म; हो, बोलने म; हो या पढ़ने म; । अतः ब□चे को भाषा के अिधकािधक □योग के मौके िमलने चािहए । उ□राख□ड म िव□□व□□लय 102 ु CPS -1 अ&य ◌ास □(1. भाषा के म□य कौशल कौन-कौन से ह ै ? ु 2. पढ़ने क: □□□या से आपका □या अिभ□□य ह ै ? □प□ कर;। 3. छोटे बालक" के पठन अवबोध के समय िशSक िकोकस □कार क: चनौितय" का सामना करना ु पड़ता ह ै ? 3.5 □□□□ k□ □ '□ #□□ e : □□□□□□# □□□□ , □□□□ , $□□□ u□N m □□□□O □□□हL□□ #" □□□□ □ m कहन े क: ज□रत नहz ह ै िक पढ़ने के कौशल का सीधा सबध ब□च" क: स□□□□ से होता ह।ै ब□चा जब ं ं ं पढना नहz जानता ह ै तो उसम; िलिखत सामJ◌ी के □□त अ□□च पैदा होती ह।ै यह अ□□च पढ़ने के कौशल म; और कमी करती ह।ै प/रणाम पढाई म; िपछड़ना, हीनता से Jिसत होना और अत म; िव□□लय छोड़ दने ◌ा ं ह।ै यह एक अिघोषत त□य समझा जा सकता ह ै िक यिद िव□□थ□ म; पढ़ने के समिचत कौशल नहz ह ै तो ु वह कै से कोई ग□□श पढ और िलख सकता ह ै ? कै से वह िव□□न म; सघनन या वाqपीकरण जैसी □□□या ं ं □प□ कर सकता ह ै ? कै से वह भगोल के पाठ" को समझ सकता ह ै ? और कै से वह गिणत के इबारती □H ू हल कर सकता ह ै ? कै से वह इितहास क: घटनाओ का अपन े शEद" म; वणान कर पायेगा । कई बार ब□चे ं जोड़-घटाने, भाग क: ि□याएँ तो कर सकते ह □ एक कारण समझकर पढना न आना

Plagiarism detected: **0.16%** https://www.notesinhindi.com/blog/स्पर्श व्यंजन क व… + 5 resources! id: **122**

होता ह ै यह त□य गिणत के साथ ही नहz वरन सभी िवषय" के साथ लाग होता ह।ै ृ ू सामा□यतः मान िलया जाता ह ै िक □□थिमक □तर कS◌ा पाँच उ□□ण। करते ही ब□च" म ; पठन कौशल म; िव□ क: आव□यकता नहz ह ै □य"िक यह समिचत □तर क: होती ह।ै यह िमथक ह ै □य"िक िव□□लय" म; ृ ु इस कौशल के मापन के समिचत उपकरण अपनाए ही नहz जाते ह,ै िजसके कारण ब□च" को सधार के ु ु अवसर □□□ नहz होते ह।□ स

ाथ ही यह भी िचतनीय ह ै िक हमारे दशे म; अVयापक पठन कौशल के ं म□याकन के िलए □□शिSत नहz होते ह।□ यह त□य राq°ीय पाठयचया। क: □परेखा-2005 म; भी ृ ू ं उि□लिखत ह।ै सामा□यतः िव□□लय" म; अVयापक" को ब□चे प□तक क: कोई ग□□श या प□□श पढकर सनाते ु ु ं ं ह,ै िजससे अVयापक पठन कौशल का िनणा।य कर दते े ह।□ यह बहत ही सतही □□□या ह ै व ¢ामक एव c ं अनपयोगी ह।ै पठन कौशल के सधार काया।□म हते िव□□लय" म; □थान ही नहz िदया जाता ह।ै इसे ु ु ु अभिलेखित करना भी आव□यक ह ै □यिोक ब□च" के िलिखत परीSाओ म; िदए गए उ□र इस बात के ं पया।□ सके तक होते ह ै िक उ□ह ; सीखा हआ िलखने म; परेशािनयाँ ह □ जो िक पढ़ने के समिचत कौशल होने c ु ं के कारण उ2प□न हई होती ह।□ c यह मा□यता िक कथा-उप□यास पढना समय न□ करना ह ै पठन को हतो2सािहत करने का बडा कारण ह।ै पढ़ने के कौशल िलए रोचक व िविवधापणा। वाह□यता म; उपलEध सामJी क: आव□यकता ह।ै c ू पढ़ने के कौशल के िवकास को तीन चरण" म; दखे ा जा सकता ह।ै उ□राख□ड म िव□□व□□लय 103 ु CPS -1 □थम चरण म; उसक: बातचीत क: भाषा के कौशल सनने व बोलन े के कौशल" को सविधात करना ु ं आव□यक ह।ै कSाओ म; बातचीत, कहानी कहना, सनना-सनाना, सनकर िनqकष । □□तत करना, िच□" से ु ु ु ु ं कहानी कहना, किवता सनना, लया2मक किवता बनाना जैसे काया।□म होने चािहए। इन □□□याओ से ु ं ब□च" क: शEदावली िव□ता/रत होती ह।ै शEद" पर चचा। करना जैसे- आम पर, शहर पर, नदी पर, इ2यािद-इ2यािद। Vविनय" का समझकर पढ़ने क: Sमता से गहरा सबध ह।ै ं ं ि#तीय चरण म; शEद पहचान व अSर □□न के बाद, वा□य वाचन हो सकता ह।ै इसम; लय व Vविन का खास Vयान रखा जाना चािहए। इस चरण म; भी □थम चरण क: गितिविधयाँ जारी रखी जानी चािहए। वा□य एव □□□त ऐसे होने चािहए, जो दिै नक जीवन से ह"। ऐसे होने चािहए, जो दैिनक जीवन से ं ं ह"। ऐसे वा□य अपनेपन व जडाव का अहसास दते े ह।□ मानक भाषा और मानक शEद" पर श□आती चरण ु ु म; अ2यिधक जोर देना पठन दSता के िवकास म; बाधक ह,□ तथािप ब□चे के शEद भडार के िवकास पर ं Vयान क; ि®त िकया जाना चािहए। लिेकन यह शEद भडार िलखाकर, रटाकर नहz वरन दिै नकचया। का ृ ं िह□सा होना चािहए। पढते समय कोई भी पाठक यिद □चिलत शEदावली पाता ह ै तो पढ़ने और समझन े क: गित बढ जाती ह ै जो उसे िलिखत सामJी से जोड़कर रखती ह।ै प□तक" का चयन एक िविश□ Sे□ ह ै िजस पर Vयान िदए जान े क: आव□यकता ह।ै साथ ही पठन ु दSता सवधान हते भाषा के पाठय□म क: प□तक" से इतर कहानी, िच□कथा, िच□कहानी क: प□तक; ली ृ ु ु ु ं जाए। कहािनयाँ लबी नहz होनी चािहए। इन कहािनय" के पा□" पर चचा। क: जाए ब□च" को अपनी ं ं ं कहानी या िक□सा िलखन े और कहने हते अवसर िदए जाए। ु ं िविभ□न िवषय" क: प□तक; चनते समय उनम; भाषा क: सरलता, सहजता पर खास Vयान िदया ु ु जाए। यिद प□तक म; सामJी क: भाषा किठन ह ै तो उसे अVयापक वैकि□पक □प से सरल भाषा म; ु िलखवाएँ या ऐसे पाठ" को चाह े िवषय कोई भी हो को छोड़ने या िकसी अ□य प□तक से िलया जाए, ु अGयास हते प□तक के □थान पर एक प□ क: कहानी या कोई घटना दी जा सकती ह।ै यह छट अVययपक" ृ ु ु ू को दी जानी आव□यक ह।ै के वल भाषा ही नहz, अ□य िवषय" के माVयम से भी पठन कौशल के िवकास पर Vयान िदया जाना चािहए। िवĖेषण करने, ग□□श" का साराश िलखने, उन पर चचा। करन े जैसी गितिविधया क: जानी ं ं ं चािहए। इितहास म; के वल वह िितथयाँ दी जाए, जो अित मह2वपणा। ह" वरना इितहास म; घटनाएँ कम व ू ं िितथयाँ अिधक होने से □□रिभक कSा के ब□च" म; पढ़ने म; अ□□च पदै ा हो सकती ह।ै िलयो नाड□ डा ं िव□सी ने कहा था- िबना इ□छा के अVययन करना याददा□त खराब करता ह ै और कछ भी Jहण नहz होता ु ह।ै यह कथन मागा।दशाक ह।ै इस □कार सभी िवषय क: प□तक" क: भाषा एव सामJी का □□ततीकरण अ2यत मह2व रखता ह ै ु ु ं ं □य"िक यह एक ¢िात ह ै िक पठन कौशल का िवकास के वल भाषा क: प□तक" से या भाषा के अVयापक" ु ं के #ारा ही िकया जाता ह।ै ततीय चरण म; कSा पाँचवी से आठवz म; पठन कौशल के िवकास हते वै□□□नक आलेख लबी ृ ु ं कहानी, छोटे रोचक बाल उप□यास रखे जा सकते ह।□ छा□ सिेमनार, तीÛ गित पठन, सामJी पर चचा। उ□राख□ड म िव□□व□□लय 104 ु CPS -1 इ2यािद काया।□म कराए जा सकते ह।□ टेलीिवजन से समाचार सकलन, ि#भाषी िफ□म िजसम; वह िफ□म ं ब□चे को □□त भाषा से अलग भाषा के उपशीषाक □□तत करती िफ□म इ2यािद काया।□म िकये जा सकते ु ह।ै पठन कौशल के काया।□म" व परीSण का उ□□□ य उतीणा। या अनतीणा। करना नहz वरन ब□च" क: पठन ृ ु दSता के □तर क: पहचान व सव□।न होना चािहए। िव□□थ□ को पढ़ने क: सामJी चनने क: छट दी जानी ु ू ं चािहए। इस □कार □2येक िव□□लय म; पठन कौशल िवकास का काय□। म रखा जाना चािहए। यिद ब□च" म; उनके □तर के अनकल पठन कौशल िवकिसत

Plagiarism detected: **0.07%** https://www.notesinhindi.com/blog/स्पर्श व्यंजन क व… id: **123**

हो जाते ह,ै तो उनक: िविभ□न ु ू िवषय" को समझने, त□य" को िवĖेषण करन,े सार Jहण करने, साराश िलखन,े सĖेषण व िवĖेषण करने ं ं क: Sमताएँ भी उिचत □तर क: होती ह □ ज

ो उनक: उपलिEध को बढाती ह।□ िविभ□न देश" म; िकए गए शोध अVययन इस त□य क: पि□ करते ह।□ पाठय□म सिमा□ के □थान पर ल0य दSता □□□□ होना आव□यक ह ै ृ ु और पठन कौशल भी स$□□□□ के म□याकन का भाग होना चािहए, यह अिभलेखन भी होन े चािहए। ू ं अतः िव□□लयी □□□याओ म; पढ़ने के कौशल को समिचत □थान िदए जान े क: आव□यकता ु ं ह।ै इसके िलए समिचत काया।□म बनाये जान े क: आव□यकता ह।ै िजसक: श□आत होती ह ै पढ़न े क: ु ु सामJी रोचक बनाने एव पाठय□म म ; पठन कौशल को समिचत □थान िदए जाने से। िव□□थ□ को उनक: ृ ु ं पढ़ने के कौशल म ; उ□रो□र वि□ के िलए उनको □□2सािहत िकए जान े क: आव□यकता होती ह।ै पढ़ने ृ के कौशल को एक िव□ता/रत □□□प म; दखे ने क: आव□यकता ह।ै यह के वल □□थिमक □तर (कSा पहली से पाँचवी) का ही िवषय नहz ह,ै

वरन इसे □□रिभक िशS□ा (कS□ा पहली से आठवz) म; समJता के साथ ◌ृ ◌ं परे च□ म; दखे ◌े जान ◌े क: आव□यकता ह ◌ै और लगातार Vयान िदए जान ◌े क: आव□कयता ह ◌ै । ◌ू िव□□लय" म; पढ़ने के कौशल िवकास को एक आदोलन के □प म; िलए जान ◌े क: आव□यकता ह।◌ै साथ ◌ं ही इसे सेवापव। व सेवारत □□शSण का अग बनाया जाना चािहए। इस हते □□शSण सामJ◌ी को समJता ◌ू ◌ु ◌ं से िविकसित करने क: भी आव□यकता ह।◌ै अ&य ◌ास □(1. िव□□लयी □□□याओ म; पढ़ने के कौशल को समिचत □थान िकस □कार से िदया जा सकता ह?◌ै ◌ु ◌ं 2. पठन कौशल क: अिभवि□ के िलए कौन से तीन चरण होते ह □ ? Xया□या कर;। ◌ृ 3.6 bge □#□]# □□□□□□□□ (Expository Text) Vs □□□□□□L□# □□□□□□□□ (Narrative Text) िशSण का उ□□□ य बालको को िवषय के □□त □□न □□□ हो जाना नहz ह ◌ै बि□क इसका म□य उ□□□ य ◌ु बालको म; पढ़ने के □□त □□च जाJत करना ह ◌ै । इस हते बालक" को पाठय प□तक के अलावा अ□य ◌ृ ◌ु ◌ु उ□राख□ड म िव□□व□□लय 105 ◌ु CPS -1 प□तक; या मैगजीन आिद के अVययन करन ◌े के िलए □□/रत करे िजससे उनमे पठन करने □□च बढ़े । पठन ◌ु अवबोध के िन$न □कार ह ◌ै – 1. अथ □काशक िवषयवwt (Expository Text): अथ।□काशक िवषयव□त का अथ। ह ◌ै ◌ु ◌ु िवषयव□त से स$बिधत त□य" को सरल व □प□ □प म; □□तत या उजागर करना ह ◌ै अथा।त ◌ु ◌ु ◌ं िवषयव□त क: वा□तिवकता एव स2यता से अवगत करता ह ◌ै । इस □कार क: िवषय व□त लेखन ◌ु ◌ु ◌ं का उ□□□ य पाठक को सचना □दान करना होता ह ◌ै । इस टे□सट के #◌ारा □दान सचनाए ◌ँ व त□य ◌ू ◌ू उ□□□ यपण। व िव□नीय 5ोत" से □□□ होते ह ◌ै । यह स2य व सहज □प से िशSण के ि□®त िवषय ◌ू व□त को पाठक तक पहचँ ◌ाने का काय। करता ह ◌ै । इन टे□सट का लेखन □प□, आ2मक; ि®त व c ◌ु सगिठत होता ह ◌ै । इसके माVयम से क; ® िबद पर ज□दी व □भावी ढग से पहचा जा सकता ह ◌ै । c ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं ◌ु □य"िक ये टे□सट सचना आधा/रत होती ह ◌ै तथा इन सचनाओ को िन$न के #◌ारा □□□ िकया जा ◌ू ◌ू ◌ं सकता ह ◌ै । उदाहरणत : पाठयप□तक, समाचार अिभलेख, अनदशे न, मानक पा□, भाषायी ◌ृ ◌ु ◌ु प□तक; , □व-सहायक प□तक; , दशे आिद । ◌ु ◌ु अथ □काशक िवषयवwt को |ýf सीखे ? ◌ु सोच या िवचार को िविकसित करने म; अथ।□काशक िवषयव□त हमारी मदद करता ह ◌ै । ◌ु अथ।□काशक िवषयव□त लेखक" के #◌ारा सरचना2मक त2व" का उपयोग कर िवषय व□त को ◌ु ◌ु ◌ं अपन ◌े िवचार" के साथ जोड़ते हए Xयिव□थत करते ह ◌ै । जो बालक िवषय व□त क: सरचना2मक c ◌ु ◌ं त2व" के िवचार" को समझ लते ◌ा ह ◌ै वो आसानी से इस □कार क: िवषय व□त का िवĖ◌ेषण करना ◌ु सीख जाता ह ◌ै । िवषय व□त क: िवशेषताएँ पढ़ाने वाले को सचनाओ को सगिठत करने व ◌ु ◌ू ◌ं ◌ं पहचान बताने का काय। करती ह।◌ै जैसे कोई हि डग (म□य िबद या □करण) से बालक" को ◌ु ◌ं ◌ं ◌ु उनक: सहायता से अवगत करना । िकसी िवषय व□त क: हि डग से प/रिचत होन ◌े पर िव□□थ□ ◌ु ◌ं उससे स$बिधत कछ िविश□ सचनाएँ िमल जाती ह ◌ै िजनके आधार पर पव। म; □□□ □□न से बालक ◌ं ◌ु ◌ू ◌ू उससे जोड़ लेता ह ◌ै और िवषयव□त को ल$बे समय तक अपनी □मित म; सJिहत कर लेता ह ◌ै । ◌ृ ◌ु ◌ं अथा।त िबना हि डग के िकसी भी □कार सचना का िव□तार करना अँधेरे म; तीर चले के समान ह।◌ै ◌ु ◌ं 2. िववरणा□मक िवषयवwt (Narrative Text) - जब हम का□पिनक उप□यास, नाटक, ◌ु कहानी या घटना क: बात करते ह,◌ै तो वा□तव म; हम िववरणा2मक िवषय व□त के स$ब□ध म ; ◌ु बात कर रह ◌े होते ह ◌ै । िववरणा2मक िवषय व□त का म□य उ□□□य मनोरजन करना तथा पाठक का ◌ु ◌ु ◌ं Vयान आकिष।त करना ह ◌ै । इनका लेखन सचना देने, िशS◌ा दके र अिभवित को बदलन ◌े या ◌ृ ◌ू सामािजक िवचार" या मत" के □□त अिभवित □□तत करने से ह ◌ै । इसके अतग।त चा/रि□क ◌ृ ◌ु ◌ं िवशेषताएँ समय व जगह के अनसार बदलते रहते ह ◌ै तथा कहिनय" म; एक या एक से अिधक ◌ु घटना/ सम□याएँ इस तरह □मब□ होती ह ◌ै िक उनका समाधान एक के बाद एक कड़ी स ◌े सलझता चला जाता ह ◌ै । ◌ु उ□राख□ड म िव□□व□□लय 106 ◌ु CPS -1 िववरणा□मक िवषय वwt के □कार ◌ु िववरणा2मक िवषय व□त कई □कार क: होती ह ◌ै िजनमे का□पिनक व त□या2मक दोन" का ◌ु सहयोग होता ह ◌ै । िन$न लेख सिS□◌ीकरण के अतग।त ह-ै प/रय" क: कहनी, रोमाचक कहािनयाँ, ◌ं ◌ं ◌ं डरावनी कहािनयाँ, झठ आधा/रत का□पिनक कहािनयाँ, ऐितहािसक सिS□◌ीकरण, लोक ◌ं ◌ू कथाए,◌ँ अनभव आधा/रत घटनाएँ, Xयि गत अनभव आधा/रत कथाएँ, जाससी या रह□यमयी ◌ु ◌ु ◌ू पहिे लयाँ । िववरणा□मक िवषयवwt क5 िवशेषताए ◌ँ ◌ु i. बोले जान ◌े वाले सवाद" का काल प/रवत।नशी

Plagiarism detected: **0.07%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ + 5 resources! id: **124**

ल होता ह ◌ै । जैसे – वत।मान काल से भिवqय ◌ं काल तक । ii. पा□" क: िवशेषताओ को उनके Xयि 2व एव अिभनय के □प म; प/रभािषत िकया जाता ह ◌ै । ◌ं ◌ं जैसे र

◌ाम या रावण का अिभनय करने वाला पा□ का □□ततीकरण इनके गण" के अनसार ही ◌ु ◌ु ◌ु होगा । iii. वणा।2मक भाषा का □योग िकया जाता ह ◌ै िजससे पाठक के िदमाग म; सजा।ना2मक / का□पिनक िच□ क: छिव बन ◌े और वह कहनी या सिS□◌ीकरण के बे म; पवा।नमान लगा सके िजससे ◌ू ◌ु ◌ं उसका कहनी पढ़न ◌े या दके ने म; □□च बनी रह ◌े । िववरणा□मक िवषयवwt क5 सरचना ◌ु ◌ं पर$परागत िववरणा2मक क: िवषय व□त क: सरचन के िलए िन$न ि□याओ को क; ® म; रखना होता ह-ै ◌ु ◌ं ◌ं i. अिभनवन (orientation) ii. सम□या या िजटलता (problem or complication) iii. समाधान (resolution) िववरणा2मक लेखन िन$न पद" म; पण। होता ह ◌ै – ◌ू i. Plot– कहानी म; □या होने वाला ह?◌ै ii. Setting – कहानी कब, कहाँ और कै से श□ होगी । ◌ु iii. चा/रि□करण (Characterisation) – कौन म□य पा□ होगा और वह कै सा लगेगा । ◌ु iv. सरचना (Structure)–कहानी क: सरचना कै सी होगी, कहानी कहाँ से श□ होगी, सम□या □या ◌ु ◌ं ◌ं होगी व समाधान □या होगा । v. थीम (Theme)– कहानी क: म□य थीम या क; ® □या होगा, इस कहानी के माVयम से लेखक ◌ु □या स□दशे या सीख देना चाहता ह ◌ै । अत: िववरणा2मक िवषय व□त वह का□पिनक उप□यास या कहिनयाँ होती ह ◌ै जो भावनाओ व सवेगो से ◌ु ◌ं ◌ं प/रपण। होती ह ◌ै जो मनोरजन कराने के उ□□□ य से िलखे जाते ह ◌ै । वही दसरी तरफ ए□□पोिस°◌ी टे□सट वह ◌ू ◌ं ◌ू उ□राख□ड म िव□□व□□लय 107 ◌ु CPS

-1 ह ैजो त□य" को शौSिणक व उ□□□ पणा तरीके से □□तत करते ह ै। यह टे□सट सचना □दान करने का काया ू ु ु करते ह ै। अ&य ास □(1. अथा□काशक िवषयव□त से आप □या समझते ह □ ? ु 2. िववरणा2मक िवषयव□त से आप □या समझते ह □ ? ु 3.7 ह□□□N□□□ □□□□ □□□□ (Transactional Text)Vs □h□ '□# □□□□ □□□□ (Reflexive Text) 1. हwतातरण िवषय वwत (Transactional Text)–ह□तातरण िवषय व□त वह ह ै िजसम; □H ु ु ं ं पछना और उन □H" का जवाब देना समिाहत हो अथाात िकसी ि□या के □□त □□ति□या उ2प□न ू करना या आचार िवचार व भाव" का स$□□षण के माVयम स े िविनमय करना ही 'ह□तातरण ं िवषयव□त' कहलाता ह ै। जैसे एक िम□ के आये हए प□ के जवाब म; दसरा िम□ उसे □शसनीय c ु ं ू प□ िलखता ह ै। शEद" के आधार पर ह□तातरण िवषय व□त को दो भाग" म; िवभािजत िकया जाता ु ं ह ै – a. वहद हwतातरण िवषयवwत (Long Transactional Text)-वह टे□सट जो 80 या उससे ृ ु ं अिधक व 200 से 250 से कम शEद" के होते ह ै उ□ह ; लॉ□ग ह□तातरण िवषयव□त कहते ह ै। ु ं लॉ□ग ह□तातरण िवषयव□त के अतगात िन$न टे□सट आते ह-ै ु ं ं • ऑिफिसयल या फॉमाल लेटर (Official or Formal Letter) • ½; डली लेटर (Friendly Letter) • आ□त/रक □□पन (Internal Memorandum) • एज;डा एड िमनटस ऑफ़ मीिटग (Agenda and minutes of the meeting) ृ ं ं • सिS□ लेख िलखना (Writing a short article) ं • डायलोग (Dialogue) • साSा2कार (Interview) • /रXय (Review) ु • समाचार प□ अिभलेख (Newspaper Article) उ□राख□ड म िव□□व□□लय 108 ु CPS -1 • मैगज़ीन अिभलेख (Magzine Article) • □यज़ पेपर कॉलम (Newspaper Column) ू • Xयि गत वत (Curriculum Vitae or CV) ृ • शोक स□दशे (Obituary) • ·ाउशर (Broucher) • एिडटो/रयल (Editorial) b. सि6_ हwतातरण िवषयवwत (Shorter Transactional Text)- वह टे□सट जो 80- ं ं ु 100 शEद" से कम म; िलखे जाते ह ै सिS□ ह□तातरण िवषयव□त कहलाते ह ै। सिS□ ु ं ं ं ह□तातरण िवषयव□त के अतगता िन$न टे□सट आते ह-ै ु ं ं • आम□ण प□ (Invitation) ं • डायरी (Dairy) • पो□टकाडा (Postcard) • िनदशॆ पि□तका (Direction) ु • अनदशे न (Instruction) ु • िव□□पन (Advertisment) • िव□□पन पि□तका (Flyer) ु • पो□टर (Poster) • □प□ भरना (Filling in a Form) • ई-मेल िलखना (Writing Email) • फै □स भजे ना (Sending Fax) c. िचतनपरक िवषय वwत (Reflexive Text)- लेखक अपने लेखन काया के माVयम से ु ं अपन े □वय के िवचार", सवेगा2मक ि□याओ एव भाव" को इस रचना2मक ढग से □□तत करता ु ं ं ं ं ं ं ह ै िक पाठक भी उ□ह ; पढ़कर □वय को उ□हz भावो म; डबा हआ महसस करता ह ै िजसका उसके c ू ू ं जीवन पर बहत गहरा □भाव पड़ता ह ै। लेखक के गहन िवचार एव सवेगा2मक भाव ही स$पणा c ू ं ं ससार के पाठक" के िवचार" एव भाव" को □भािवत करते ह।ै जैसे क: लेखक के □वय के सपने ं ं ं व आकाSाओ पर लेख िलखता ह।ै उदाहरण - 'अपन े जीवन काल के पसदीदा टीचर के बारे ं ं ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 109 ु CPS -1 म; बताना' ।

Quotes detected: **0.02%** id: **125**

'जीवन के बारे म; □वय के िवचार तथा जीवन कैसे िजया जाए '

। जैसे िवषय" ं पर अपन िवचार" म; लेख िलखना । िचतनपरक िवषय व□त को िलखने के िलए िकनि-किन बात" का Vयान रखना चािहए – ु ं i. िवषय व□त सै#ाि□तक होती ह ै। ु ii. भाव व सवेग म□य भिमका िनभाते ह ै। ु ू ं iii. लेखन का कछ भाग कछ अिधक िव□तत हो सकता ह ै िजसके अतगता लेखक उन बात" ृ ु ु ं को िव□तार से बताता ह ै िजसके #ारा पाठक िविवध व उ□□□ पणा घटनाओ के माVयम से ू ं भावनाओ को पन: □कट करता ह।ै ु ं iv. उन िवचारो व भावनाओ को □दिशात करना जो अित सवेदनशील व Xयि गत ं ं भागीदारी के □प म; लेखक के #ारा महसस िकय े जा चके हो । ू ु अत: ह□तातरण िवषय व□त वह ह ै िजसम; िवचार व भाव" को स$□□षण के माVयम से िविनमय ु ं या िकसी ि□या के □□त □□ति□या के □प म; िदया जाता ह ै वही दसरी तरफ िचतनपरक िवषय ं ू व□त ह ै िजसम; लेखक □वम के िवचार, सपन" व आकाSाओ को कथा या कहानी के □प म ; ृ ु ं ं □□तत करता ह ै। ु अ&य ास □(3. ह□तातरण िवषयव□त से आप □या समझते ह □ ? ु ं 4. िचतनपरक िवषयव□त से आप □या समझते ह □ ? ु ं 3.8 □#"□□ □□□ ह? n (What is Schema?) □क:मा - □क:मा (Schema) से ता2पया ऐसी मानिसक सरचना से ह ै जो Xयि िवशेष के मि□तक म; ं सचनाओ को सगिठत तथा Xया□याियत करने हते िव□मान होती ह।ै यह □क:मा दो □कार का होता ह।ै ू ु ं ं पहला 1. साधारण wक5मा (General Schema) 2 . िजटल wक5मा (Complex Schema) सधारण □क:मा से ता2पया ' □क:मा मोटरकार िखलौने के □क:मा से ता2पय । समझा जा सकता ह।ै इसी □कार अत/रS का िनमााण कै से हआ का □क:मा िजटल □क:मा का उदाहरण ह।ै c ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 110 ु CPS -1 □क:मा िस□□□त इस बात को □□तपािदत करता ह ै िक पाठय अश से सीखने एव समझने के िलए हम; ृ ं ं इसे अपने पवा□ान से जोड़ना ही पड़ेगा। (□मेल हाटा, 1980), वा□तव म; □क:मा शEद का पहली बार ू □योग बारलेट #ारा सन 1932 म; िकया गया िजसम; उसन े □क:मा क: पवा ि□ि□याओ एव अनभव" ृ ू ु ं ं का िस□य सगठन कह कर □□तपािदत िकया। ं भाषा के सदभा म; □क:मा िस□□□त" को □प□ करते हए जो सबसे मह2वपणा बात कही जाती ह ै वह यह c ू ं ह ै िक िलखा हआ कोइ । भी वा□य या वा□य" के समह अपन े आप मे कोइ । िवशेष अथा नहz रखता ह।ै c ू बि□क वह तो के वल एक िदशा क: तरफ इिगत करता ह ै िजससे िक पाठक □वय उसके अथा का ं ं िनमााण कर सके । पाठक अपने पवा□ान

Plagiarism detected: **0.05%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ id: **126**

के आधार पर उस वा□याश का अथा Jहण करता ह।ै यह ू ं □□रिभक पाठक का पवा □ान एव □□न सरचना □क:मेटा के मान से जाना जाता ह

।ै िकसी भी पाठक ू ं ं ं का □क:मेटा एक ऊपर से नीचे के □म म; Xयवि□थत रहता ह।ै िजसम; िक साधारण □□न ऊपर के □म तथा िवशेष □□न नीचे के □म म; Xयवि□थत रहता ह।ै □क:मा िस□□□त के अनसार िकसी भी वा□याश ु ं को समझन े हते पाठक का पवा □ान एव वा□याश के बीच सम□वय □थािपत करना आव□यक होता ु ू ं ं ह।ै ठीक तरीके से समझने हते पवा□ान एव वतामान पठन के बीच सम□वय □थािपत होना ही चािहए - ु ू ं wक5मेटा के □कार (Types of Schemata) i. औपचा/रक □क:मेटा (Formal Schemata) ii. िवषयव□त सबधी □क:मेटा (Content Schemata) ु ं ं iii. सा□कितक □क:मेटा (Cultural Schemata) ृ ं iv. भाषाइ । □क:मेटा (Linguistic Schemata) 1. औपचा!रक wक5मेटा (Formal Schemata) - औपचा/रक □क:मेटा से ता2पया िविभ□न □कार के आलाका/रक सरचना2मक वा□याश" के सदभ । का पवा □ान से ह।ै यिद दसरे शEद" म ; ू ं ं ं ं ू कहा जाय तो औपचा/रक का □क:म" से ता2पय । िविभ□न □कार के स□2यय" के □□ततीकरण से ु ं ह।ै िविभ□न □कार के पाठ जैसे कहािनया, प□, भाषण, किवताए, ग□□श आिद क: पहचान एक ं ं ं दसरे से िभ□नता के आधार पर ही

Plagiarism detected: **0.03%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ id: **127**

होता ह। इनके आधार म; िनिहत सरचना ह ै उसे औपचा/रक ं ू □क:मेटा कहा जाता ह।ै उदाहरण

के िलए बहत सी कहािनय" के आधार म; जो □क:मेटा होता ह।ै c वह िन$न □कार का होता ह।ै कहानी = □यवwथा (िwथित + िwथित) + □करण + घटना¦म + □□ित¦या Story = Setting State + state + episode + event + reaction कहािनयाँ इस तरह क: प□भिम म; होती ह □ िजससे िक समय, □थान एव च/र□ क: पहचान हो ृ ू ं सके तथा साथ ही साथ िविभ□न □करण िविभ□न □□ित□याओ को ज□म दते ा ह।ै िविभ□न □कार ं क: िवधाए म; िविभ□न □कार सरचनाए होती ह।ै ं ं ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 111 ु CPS -1 2. िवषयवwत सबधी wक5मेटा (Content Schemata) - िवषयव□त सबधी □क:मेटा से ु ु ं ं ं ं मलत: वा□याश (पाठ) के िवषय व□त सबधी प□भिम □□न से सबिधत ह।ै (कैरेली ए□ड ए□टर ृ ू ु ू ं ं ं ं ं हो□ड, 1983), इसका जड़ाव िकसी शीषाक िवशेष के स□2यया2मक □□न एव सचना ह ै जो िक ु ू ं ं एक Xयवि□थत तरीके से जड़ा हआ होता ह।ै िवषय व□त सबधी □क:मेटा िवशेष घटनाओ एव c ु ु ं ं ं ं व□तओ का एक खला सेट होता ह।ै उदाहरण के िलए यिद हम िकसी रे□तराँ म; उपलEध सिवाास, ु ु ं मीन, िविभ□न □कार के भोजन का ऑडार दने ा, िबल अदा करना, िटप देना आिद क: सचना से ू ू होगा। िवषय-व□त सबधी □क:मेटा ¾यादातर स□कित बाVय (Cultural- bound) होता ह।ै ृ ु ं ं ं इसिलए सा□कितक □क:मा को सामा□यतया िवषय व□त □क:मा म; वगीकत िकया जाता ह।ै ृ ृ ु ं 3. साwकितक wक5मेटा (Cultural Schemata) -- जॉनसन (1981) एव कै रेली (1981) के ृ ं ं अVययनो ने इस बात को प□ िकया ह ै िक िकसी पाठ (वा□याश) म; िनिहत सा□कितक □□न ृ ु ं ं पाठक के □वय के सा□कितक प□भिम से #□# करता ह।ै □वय के सा□कितक प□भिम से सबिधत ृ ृ ृ ृ ू ू ं ं ं ं ं ं पाठ या वा□याश" को दसरे सा□कितक प□भिम से पाठ या वा□याश के मकाबले समझना सहज ृ ृ ू ु ं ं ं ू एव आसान होता ह।ै िविभ□न सा□कितक समह उसी पाछ या वा□याश को अलग अलग ृ ू ं ं ं समझते ह ै और उसक: Xया□या करते ह।□ िकसी पाठ के पणा □प से समझने के िलए उसक: ू सा□कितक प□भिम (Cultural Background) क: समझ अित-आव□यक ह।ै ृ ृ ू ं 4. भाषाइ wक5मेटा (Linguistic Schemata) - भाषाइ । □क:मा का सबध Xयाकरण एव शEद" ं ं ं के □□न से ह।ै यह िकसी भी पाठ को समझने म; अित मह2वपणा भिमका अदा करता ह।ै इ□क: ू ू (1988) के अनसार अ□छे पाठक िकसी पाठ-िवशेष को अ□छी तरह Xया□याियत करने के ु साथ साथ उसे अ□छी तरह से िडकोड (Decode) भी करते ह।□ िबना अ□छी िडकोिडंग दSता (Decoding skill) के कोइ । भी अ□छा पाठक बन ही नहz सकता ह।ै wक5मेटा क5 □कित (The Nature of Schemata): □क:मा िस□□त क: मल धारणा यह ह ै िक ृ ू ं मानव □मित मलतः शEदाथा क: तरह Xयवि□थत है न िक वणामाला □म" के अनसार और न ही ृ ू ु Vव□या2मकता के अनसार । इसके अलावा □मित एक थेसारस क: तरह Xयवि□थत ह ै न िक एक शEदकोष ृ ु क: तरह । कोइ भी Xयि िवशेष □2येक तरह क: व□त क: तरह □क:मेटा रखता ह ै चाह ; वो व□त िदखने ु ु म; साधारण हो या िि□ल□ हो । जैसे Xयि कलम, फटबाल या च□मा का □क:मेटा रखता ह ै वैसा ही वह ू Êयार (Love), □□ध (Anger) या िफर जलन जैसे स$□2यय" का □क:मेटा भी रखता ह ै । वह िभ□न - िभ□न िि□याओ का भी □क:मेटा रखता ह ै जैसे िकसी व□त को खरीदना , फटबाल खेलना या िफर ु ु ं सेमीनार म; उपि□थत होना इ2यािद । एक कस□ क: □क:मा उसी तरह क: हो सकती ह ै जैसा िक िच□ स□या ु ं – १ म; िदखाया गया ह ै । उ□राख□ड म िव□□व□□लय 112 ु CPS -1 A Partial Semantic Network of “CHAIR” यह कई अलग □क:मेटा का एक समह भी हो सकता ह ै । िकसी भी व□त को कस□ कह े जाने के िलए ू ु ु कोई िनियत गण या िवशेषताए होता ह ै । जैसे क: एक कस□ म ; एक सीट, दो हड□ ल एव, बैक, काउच, ु ु ं ं होना अिनवाय । ह ै तभी उसको कस□ कह सकते ह □ । इसी तरह से घर क: कस□, आिफस क: कस□, दिै नग ु ु ु कमरे क: िकसाय" के अलग- अलग गण ह"गे । ु ु उ□राख□ड म िव□□व□□लय 113 ु CPS -1 Fig. A partial representation of what might exist in a person’s

Quotes detected: **0%** id: **128**

‘buy’

schema. अमतl स□□ओ (Abstract Entities) जैसे – □□म (Love), □□ध (Anger), जलन (Envy) इ2यािद जैसे ू ं के िलए □क:मेटा एक स□2यय (Concept) क: ही तरह होता ह ै । िक□त िविभ□न ि□याओ एव घटनाओ ु ं ं ं ं ं के िलए □क:मेटा स□2यय" क: तरह न होकर िवमाओ क: तरह होती ह ै । िच□ स□या २ □□सिगक एव ं ं ं ं ं ं □मब□ िवमाओ क: भिात िकसी व□त को खरीदने क: □क:मेटा का उदाहरण □□तत कर रह े ह □ । ु ु ं ं अ&य ास □(5. □क:मा □या होता ह ै ? □प□ कर; । 6. साधारण □क:मा एव जिटल □क:मा म; अतर □प□ कर; । ं ं 7. □क:मेटा के िविभ□न □कार" का वणlन कर; । 8. □क:मेटा क: □कित से आपका □या ता2पयl ह ै ? ृ 9. िकसी Xयि के िकसी व□त के खरीदने का □क:मा का िनमाlण या □□□प कै सा हो सकता ह ै ? ु िन□पण कर; । 3.9 □□□□N] □□तत इकाई म; पठन अवबोध को समझाते हए यह बताया गया ह ै िक पठन कौशल अ□य तीन" कौशल" c ु से अिधक मह2वपणl ह ै । पठन का अथl जोर से पढ़ना या मौन वाचन करना ह ै िजससे िलिखत या मि®त ू ु उ□राख□ड म िव□□व□□लय 114 ु CPS -1 सामJी का अथl भाव समझ म; आ जाए । िबना अथl भाव समझे पढ़ना के वल शEद" पर िनगाह घमाना ु ह ै । 3.10 □N`□ e fpg □h" □ 1. डॉ. िसह, िनरजन कमार (2008),

Quotes detected: **0.07%** id: **129**

"माVयिमक िव□□लय" म; िहदी िशSण, राज□थान िहदी J□थ ु ं ं ं ं अकादमी,जयपर । ु 2. डॉ. मगल, उमा (2006),"िहदी िशSण" आयाबक िडपो, करोल बाग, नई िद□ली । ु ं ं 3. डॉ. शमाl, खेमराज & ·जराज (2012),"िहदी िशSण"

अJवाल पिEलके श□स, आगरा । ं 4. डॉ. पा□डेय, िन2यानद & डॉ. गगाराम शमाl (2005),

Quotes detected: **0.01%** id: **130**

"िहदी भाषा िशSण"

एच.पी.भागlव बक ु ं ं ं हाउस, आगरा । 5. भाई योगे□® जीत (2006),

Quotes detected: **0.01%** id: **131**

"िहदी भाषा िशSण"

िवनोद प□तक मिदर, आगरा । ु ं ं 6. डॉ. चतव°दी िशखा,

Quotes detected: **0.01%** id: **132**

"भाषा एव िहदी सिाह2य िशSण"

आर लाल बक िडपो, आगरा। ु ु ं ं 7. डॉ. डबास रामकरण, पा/रक िशवराज,

Quotes detected: **0.01%** id: **133**

"िहदी भाषा िशSण एव □वीणता"

(SIERT उदयपर), ु ं ं राज□थान रा¾य पाठयप□तक मडल, जयपर । ् ु ु ं 8. NCF पाठयचयाl (2005),

Quotes detected: **0.01%** id: **134**

"NCERT नई िद□ली"

् 9. डॉ. पाठक पी. डी. (2009),

Quotes detected: **0%** id: **135**

"िशSा मनोिव□□न"

आर लाल बक िडपो, आगरा । ु 10. डॉ. गाँधी, भारत कमार, बी एल िनापत (2014),

Quotes detected: **0.02%** id: **136**

"भाषा, स□□न और समाज पाठयचयाl के सदभ । ् ु ं ं म;"

(SIERT उदयपर), राज□थान रा¾य पाठय प□तक मडल, जयपर । ् ु ु ु ं 11. अि»नहो□□, रमाकात (2011),

Quotes detected: **0.11%** id: **137**

"बहभािषकता , साSरता, भाषा िशSण एव बौि□क िवकास c ं ं छ□□सगढ़ पाठयप□तक िनगम, रायपर । ् ु ु 12. भारतीय भाषाओ िशSण (2009),"आधार प□ NCERTनई िद□ली" ं 13. िसह सरजभान (2008),"िहदी भाषा सदभ । और सरचना,सिाह2य सहकार,नई िद□ली । ू ं ं ं ं ं 14. वाजपेयी िकशोरीदास, "शEदकोश अनशासन, वाणी□काशक,नई िद□ली ु 15. □साद वासदेवनदन (2013),"आिधनक िहदी Xयाकरण एव रचना",

भारती भवन □काशक, ु ु ं ं ं पटना । 16. डॉ. 2यागी ओकारिसह& एम. पी. िसह,

Quotes detected: **0.01%** id: **138**

"शैिSक □□□□□गक: एव कS◌ा-कS □बध"

अ/रहत ◌ ◌ ◌ ◌ ◌ ◌ ◌ ◌ िशS◌ा □काशन, जयपर । ◌ उ□राख□ड म िव□□व□□लय 115 ◌ CPS -1 3.11 □ □O□L□# □d N 1. िकसी Xयि के िकसी व□त के खरीदने का □क:मा का िनमाIण या □□□प कैसा हो सकता ह ै ? ◌ िन□पण कर; । 2. अथI □काशक िवषयव□त से आप □या समझते ह □? ◌ 3. िववरणा2मक िवषयव□त से आप □या समझते ह □ ? ◌ 4. ह□तातरण िवषय व□त के □कार" को उदाहरण सिहत बताइए ? ◌ ◌ 5. िचतनपरक िवषय व□त को िलखने के िलए िकन-िकन बात" का Vयान रखना चािहए ? ◌ ◌ उ□राख□ड म िव□□व□□लय 116 ◌ CPS -1 □□□□ 4 - □:□ @O□u , □:[+ : □,□ I□ m□+, m□+, \□ T C W □ हn)e □□ □□□□□ , □[+: □□ S v)□,□w+: T C □[+: □: □b V @W fQ□ □□ □□+□ , xe □: CSn)) □□ ,y+: □: □T a+□: □:[+ □□ z□:□\ □□+□ : □[+: T C ,y+: □: □T □□□□: T C ,□{), □: ;□ , a|z)□□□ □:[+ : Writing in the specific content areas: Social Sciences, Science, Mathematics, and Literature of Relevant Languages, Making Reading-Writing Connections, Process of Writing, Process of Analyzing Children's Writing to Understand their Conceptions: Ways and Means of Writing with a Sense of Purpose Writing to Learn and Understand 4.1 □□त ◌ावना 4.2 उ□□□ य 4.3 लेखन कौशल का अिभ□□य 4.4 िलखने क: □□□या 4.5 िलखने एव पढ़ने के मVय स$ब□ध ◌ 4.6 िवशषे स□दभ□ म; लेखन : सामािजक िव□□न, िव□□न, गिणत एव िविवध ◌ सािह2य" क: भाषा म; िलखने क: □□□या 4.7 ब□च" के स□2यय को समझने के िलए उनके लेखन का िवEेषण करना : सीखने ◌ एव समझने के िलए तरीके एव माVयम के □प म; उ□□□ यपरक लेखन ◌ ◌ 4.8 साराश ◌ 4.9 सदभI J4 सची ◌ ◌ ◌ 4.10 िनबधा2म क □H ◌ उ□राख□ड म िव□□व□□लय 117 ◌ CPS -1 4.1 □□□ □□ □ िव□□थ□ ने जो कछ पढ़ा, या उसे जो भी □□न िदया गया, उस □□न का भली- भाित आ2मीकरण करन े के ◌ ◌ िलए, उसका कशलतापवIक उपयोग करन े क: Sमता का िवकास करने, उसक: जाच करने अथवा □□□ ◌ ◌ ◌ □□न के िवषय म; उसक: अिभXयि का िवकास करन,े उसके िवकास का म□याकन करने, उसम; ◌ ◌ मौिलकता क: शि का िवकास करने अथवा मौिलकता क: यो»यता क: गित व िदशा का □□न व म□याकन करने हते जो कायI िव□□थ□ को िदया जाता ह ै उसे ही िलिखत कायI कहा जाता ह ै ।हमारे दशे म; ◌ ◌ ◌ आकािदमक उपलिEध (Academic Achievement) क: सफलता मलतः िलखने क: यो»यता पर ही ◌ िनभरI ह ै चँिक जो बेहतर तरीके से िलख सकता ह ै वही अपने आप को ठीक ढग से परीS◌ा म; □□तत कर ◌ ◌ ◌ सकता ह ै । िलखना एक तरीके से बात करने के सामान ह ै । जैसे ही हम िलखते ह □ हम िकसी से बात करते ह □ हालािक अिधकतर िजससे से हम बात कर रह े होते ह ै वह हमारे सामने उपि□थत नहz होता ह ै । हम ◌ वतIमान क: प/िर□िथतय" या घटनाओ क: याद ताज़ा रखने के िलए भी िलखते ह □ । एक अVयापक को ◌ िलखने क: िशS◌ा ठीक उसी □कार देनी चािहए जैसे क: वह बात करने क: िशS◌ा पा रहा हो । चँिक जब ◌ तक ब□चा □कल आता ह ै तब तक वह नए नए वा□य बनाना सीख चका होता ह ै हालािक अभी वह उन ◌ ◌ ◌ वा□य" का □मब□ □योग करने म; मािहर नहz होता ह ै । 4.2 □ □ इस इकाई क अVययन करने के पy◌ात आप- 1. लेखन कौशल का अिभ□□य □प□ कर सक; गे । 2. िलिप क: िशS◌ा क: आव□यकता को समझ सक; गे । 3. िलखने एव पढ़ने के मVय जो अतसIबध ह ै उसे समझ सक; गे । ◌ ◌ ◌ 4. िलखने क: □□□या का अथI बता सक; गे एव प/रभािषत कर सक; गे। ◌ 4.3 ! □ #]! #□ b□□□□□ (Meaning of Writing Skill) भाषा एक कौशल ह ै । इस कौशल पर पणI अिधकार पाने के िलए िव□□□थाय" म; सनने, बोलने, पढ़न े एव ◌ ◌ ◌ िलखने के कौशल का िवकास करना ज़□री ह ै □य"िक भाषा का इ□तेमाल दो तरीक" से ही होता ह ै – मौिखक एव िलिखत । मौिखक □प पर अिधकार करन े के िलए सनना और बोलना तथा िलिखत □प पर ◌ ◌ अिधकार करने के िलए पढ़ना और िलखना । इन चार" कौशल" को िवकिसत करना ही म□य उ□□□ य ह ै । ◌ Xयि िजन Vविनय" का □योग िवचार" क: अिभXयि के िलए करता ह ै उसे मौिखक भाषा कहते ह □ । इ□हz Vविनय" को िजन िविश□ िच□ह" के माVयम से ि□िकिहत □प म; Xय िकया जाता ह,□ उ□ह ; िलिप कहते ह □ । □2यके भाषा क: अपनी एक िलिप होती ह ै । दवे नागरी ि

Plagiarism detected: **0.09%** https://hindialphabet.com/ id: **139**

ह□दी भाषा क: िलिप ह ै एव रोमन ◌ अJेज़ी भाषा क: िलिप ह ै । सामा□य □प से िलखकरिवचार" क: अिभXय करना लेखन कौशल या ◌ उ□राख□ड म िव□□व□□लय 118 ◌ CPS -1 िलिखत अिभXयि कहा जाता ह ै । िलिप का □□न □□□ करने के पy◌ात भाषा के िल

िखत □प म; □योग कर Xयि अपने भाव" एव िवचार" को लेखन कौशल के #◌ारा □िथाय2व □दान करता ह ै । ◌ िलिप क5 िश6I क5 आव}यकता (Requirement of Script Writing): ब□च" म; लेखन कौशल का िवकास करने के िलए िलिप क: िशS◌ा अ2यत आव□यक ह ै । िजस तरह Vविनय" के पणI □◌ान ◌ ◌ के िबना उ□चारण श□ नहz हो सकता एव मिखक अिभXयि म; पणIता नहz आ सकती, उसी □कार ◌ ◌ ◌ ◌ िलिप के □□न के िबना िव□□थ□ न तो श□ वतIनी का □योग कर सकता ह ै और न ही िवचार" को िलिखत ◌ □प म; अिभXय कर सकता ह ै । जब तक िव□□थ□ को िलखना पढ़ना नहz आता तब तक भाषा पर उसका पणI अिधकार नहz हो सकता । अतः भाषा पर पणI अिधकार करान े एव अिभXयि कौशल को ◌ ◌ ◌ परी तरह से िवकिसत करने के िलए ब□चे को िलिप का पणI □◌ान देना अित आव□यक ह ै । लेखन कौशल ◌ ◌ या िलिखत अिभXयि के मह2व को हम िन$न □प से □प□ कर सकते ह □ । 1. िलिखत भाषा िव□□थ□ के हाथ और मि□त□क म; सतलन बना कर रखती ह ै । ◌ ◌ 2. िलिखत भाषा ही सािह2य के भ□डार म; वि□ करती ह ै । यिद िलिप न होती तो आज सािह2य ◌

का□हा से आता ? यिद लेखन कौशल न होता तो नई- नई रचनाए का□हा से आती ? ं ं ं 3. आिधनक िशSा □णाली क: □मख िवशेषता परीSा ह ै । इसके िबना िशSा □णाली क: क□पना ृ ृ भी नहz क: जा सकती । लेखन- कौशल के #ारा ही िव□□थ□ क: यो»यता का म□याकन िकया ू ं जाता ह ै । 4. दशे - िवदशे म; हो रह े □□न- िव□□न आिद से प/िरचत करान े का म□य साधन िलिखत भाषा ही ह।ै ृ 5. Xयाविसयक एव औ□□□गक □गित का आधार भी िलिखत भाषा ही ह।ै मौिखक □प से काया- ं Xयवसाय म; सफलता □□□ नहz क: जा सकती ह ै । हर Xयवसाय म; तरह –तरह के /रकाडा आिद िलखकर रखन े पड़ते ह □ । 6. आज तो लेखन एक □वत□ Xयवसाय के □प म; भी मानव जाित का क□याण कर रहा ह ै अनेक ं Xयि अपनी लेखनी क: कला से ही अपनी रोजी –रोटी क: Xयव□था कर रह े ह □ । 7. अपन े िवचार" को सरिSत रखन े के िलए िलिखत अिभXयि क: आव□यकता ह ै । िलखाकर हम ु अपन े िवचार" को वष□ के िलए □थाियत्व □दान कर सकते ह □ । 8. जीवन के अनेक ऐसे S□े ह □ ज□हाँ के वल मौिखक अिभXयि से काम नहz चल सकता ह ै । दर ू रहन े वाले िम□ या सबधी को अपना स□दशे देने, एक दसरे के साथ कोई काया करने या अ□य ं ं ू कोई समाचार पहचाने के िलए िलिखत भाषा क: आव□यकता होती ह ै । c ं 9. दिै नक जीवन का िववरण रखने, घर पर दिनक िहसाब िकताब रखने आिद Xयावहा/रक काय□ िलिखत भाषा का □योग करना पड़ता ह ै । 10. िशSा Jहण करते समय पिठत सामJी को सगिठत करने □H" का उ□र तैयार करने, पाठ का ं सार तैयार करन,े गहकाय। करने आिद म; िलखाण – कौशल इत्यािद क: आव□यकता पड़ती ह ै । ृ उ□राख□ड म िव□□व□□लय 119 ु CPS -1 11. हमारे पवाज" क: सGयता और स□कित को िलिखत भाषा ने ही हम तक पहचाया ह ै । इसी □कार c ृ ू ं ं हमारी स□कित आगे आन े वाली पीढ़ी तक भी िलिखत भाषा के ही माVयम से ही ह□तात/रत ृ ं ं होती रहगे ी । अ&य ास □(1. लेखन कौशल से आप □या समझते ह □ ? 2. िलिप क: िशSा क: आव□यकता पर □काश डाल; । 3. लेखन कौशल या िलिखत अिभXयि के मह2व को □प□ कर; । 4.4 □!□ #" □□□□□ (Process of Writing) भाषा सीखने का एक □वाभािवक □म ह ै – सनना, बोलना और िलखना । भाषा क: िशSा देन े के िलए ु □□थिमक □तर से ही ब□च" म; इन चार" कौशल" को िवकिसत करन े का □यास िकया जाता ह ै । पहली अवwथा (First Stage) ब□च" को पहले मौिखक भाषा के िशSा

Plagiarism detected: **0.04%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ + 7 resources! id: **140**

दी जाती ह,ै उसके पyात पढ़ना सीखाया जाता ह ै और उसके तरत पyात लेखन- कौशल का िशSण आर$भ िकया जाता ह ै । जैस

े ही ब□चे अSर" का उ□चारण कर ु ं उनके िलिपबVह □प को पहचानन े लगते ह,□ वैसे ही इन अSर" के िलिपब□ □प" को िलखना सीखना भी श□ कर िदया जाता ह ै । यह काया तभी श□ िकया जाना चािहए जब ब□च" क: उगिलया कलम पकड़ने ु ु ं ं क: अGय□त हो जाए । ं लेखन कौशल को िवकिसत करने के िलए सवा□थम ब□च" को मानिसक □प से तैयार करना चािहए, □य"िक िलखना श□ करने से पहले से यह जानना आव□यक होता ह ै िक ब□चा िलखन े के लए तैयार ह ै ु या नहz । यह बात सवािविदत ह ै िक िलखना सीखना मौिखक या वाचन- कौशल से किठन होता ह।ै ब□चे को िलखना सीखाने के लए अVयापक को िन$न □यास करना चािहए । i. पि□सल से कागज़ पर या चाक से □यामप¯ पर तरह- तरह क: रेखाए खzचने का अGयास कराना ं चािहए । ii. अVयापक बालक को कोई बोडा पर बड़े अSर िलख कर उनके चार" तरफ अगली घमाने का ब□च" ु ु ं से अGयास कराये तािक उनके अदर का डर दर हो । ं ू iii. तरह – तरह के बीज, दाने, मोती आिद

Plagiarism detected: **0.03%** https://sabsastaa.com/english-barakhadi/ id: **141**

क: सहायता से भी खेल –खेल म; वण□ क: आकितयाँ ृ बनाने का अGयास कराया जा सकता ह

ै । iv. क6ा का आकष क वातावरण (The attractive environment of Classroom)– कSा के कमरे म; आकषाक रग – िबरगे िच□ एव चाटा टागने चािहए । चाटा म; िच□, शEद व वणा बन े होने ं ं ं ं ं चािहए । कSा क: दीवार" पर फशा से २ फट उ□ह ; □यामपट बने होने चािहए । रग- िबरगी चाक राखी ु ं ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 120 ु CPS -1 होनी चािहए । इन चाट□ व िच□" से वण□ क: आकितयाँ ब□चे के मास- पटल पर अिकत हो जाती ृ ं ं ह □ और चाक से वह मनचाही रेखाए खzचता ह ै तथा चाक पकड़न े का अGयास करता ह ै । ं इस □कार के िविभ□न साधन" व ि□याओ के माVयम से ब□च" क: उँगिलय" क: मासपेिशय" को ं ं कलम पकडने तथा िविभ□न िदशाओ म; घमन े का अGयास करान े के पyात ही वण□ क: रचना ु ं िसखानी चािहए । इससे पहले ब□च" के िलखना नहz सीखाना चािहए । दसरी अवwथा (Second Stage) ू वणª क5 रचना सीखना (Learning the shape of the letters) : लेखन कौशल क: िशSा के यह दसरी अव□था ह ै । जब ब□चा िलखना सीखने को तैयार हो जाए तो उसे िविधवत □प से वणामाला के ू सभी वण□ को िलखना सीखाना चािहए । वण□ को िलखना सीखाने के कई िविधया ह।□ अVयापक इनम; से ं कोई सी भी िविध को अपना सकता ह ै । i. िच2 िविध (Pictorial Method): वा□तव म; िलिप का िवकास ही िच□" के #ारा हआ ह ै । वैस े c भी बÓहा िच□ बनान े म; çयादा □□च रखता ह ै । अतः इस िविध म; ब□च" को खेल खेल म; ही िलखना सीखा िदया जाता ह ै । ii. माटेसरी िविध (Montessori Method) : 5ीमती माटेसरी ३ वषा क: आय के पyात ब□चे को ु ं ं वणा-रचना सीखाने का सथन करती ह □ । इस िविध म; ब□चे को सवा□थम लकड़ी या ग□□ के बने अSर िदए जाते ह □ और उन पर उगली फे रन े को

Plagiarism detected: **0.06%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ + 3 resources! id: **142**

कहा जाता ह,ै िफर उनके बीच पिे □सल चलाने को ं कहा जाता ह।ै जब उनक: उगली साध जाती ह ै तब □वत□ □प से वण। िलखने को कहा जाता ह

।ै ं ं iii. अनसरण िविध(Imitation Method) : इस िविध म; अVयापक ब□चे को □लेट या त□ती पर ु पिे □सल से वण। िलख दते ◌ा ह ै । अEछे उस िलखे हए वण। के ऊपर □याही के साथ कलम चलाते ह □ । c iv. रेखा िविध (Line Method): इस िविध म; ब□चे को विभ□न □कार क: रेखाए खीचने का ं अGयास कराया जाता ह ै । । जैसे- खड़ी रेखा, पडी रेखा, ितरछी रेखा, अ□। व□, पण। व□ आिद । ृ ृ ू िफर रेखाओ को िमला कर वण। रचना सीखाई जाती ह ै । ं v. पेwटालाजी क5 रचना□मक िविध (Constructivist approach of Pestalozzi): इस िविध म; अSर" को टकड़े म; िवभ करके एक –एक टकड़े क: आकित बनाने का अGयास करा

Plagiarism detected: **0.06%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ + 9 resources! id: **143**

या ृ ु ु जाता ह ै और िफर सभी टकड़" को िमलाकर परा अSर बनाना सीखाया जाता ह ै । जो अSर सरल ु ू होते ह □ उ□ह ; पहले बनाना सीखाया जाता ह

ै । तीसरी अवwथा (Third Stage) श□दf तथा वा|यf क5 रचना क5 िश6I वण□ क: रचना सीख लेने के पy◌ात ब□चे वण। िमलाकर शEद बनाना और उसके पy◌ात वा□य िलखना सीखते ह □ । लेखन िशSण क: इस अव□था म; ब□च" पर çयादा Vयान दने े क: आव□यकता ह।ै इस समय ब□चे म; िलखन े से स$बिधत जैसी आदत; िवकिसत हो जाती ह,□ वे आगे भी चलती रहतz ह □ । अतः इस ं उ□राख□ड म िव□□व□□लय 121 ु CPS -1 अमय ब□चे को स□दर, सडौल व □प□ □प से िलखने का अGयास कराना िचाहए । इसके िलए िन$न ु ु िविधय" का □योग िकया जा सकता ह ै। i. सलेख िलखने का अ&यास कराना : इस अव□था म; सलेख िलखने का Gयास कराना ब□च" ु ु के िलए लाभकारी िस□ हो सकता ह ै । ii. अनिलिप : अनिलिप का ता2पय। जैसा िलखा ह ै वैसा ही िलखना ह ै । ु ु iii. □ितिलिप : □□ितिलिप िकसी भी छपी हई प□तक म; से दखे - दखे कर ग□□श या प□□श िलखा c ु ं ं जाता ह ै । इसके िलए अVयापक को यह Vयान रखना िचाहए िक □□ितिलिप क: सामJी ब□चे के मानिसक □तर एव □□च के अनसार हो । ु ं iv. ितिलिप : □□ितिलिप म; ब□चे दखे कर िलखते ह,□ िक□त 5त िलिप म; िबना दखे े, िसफ। सनकर ु ु ु ु िलखते ह □ । इसम; अVयापक बोलते जाता ह ै और छा□ सन-सन कर िलखते जाते ह □ । इससे ु ु िव□□□थाय" का सन कर िलखने का अGयास होता रहता ह ै । ु चौथी अवwथा – (Forth Stage) लेखन अ&यास करना (Practices of Writing) : लेखन कौशल का यह चतथ। एव आिख़री चरण ु ं ह।ै अब तक ब□च" को दखे कर व सनकर स□दर लेख के ज़/रए सहबद एव वा□य िलखने का Gयास

Plagiarism detected: **0.1%** https://www.learncbse.in/class-8-hindi-chapter-9… + 2 resources! id: **144**

हो ु ु ं जाता ह ै । अब ब□च" को दखे कर एव सनकर स□दर लेख के ज़/रए वा□य िलखन े का अGयास हो जाता ह ै । ु ु ं अब ब□च" को अपन े भाव" व िवचार" को तािक। क □म म;, Xयाकरण के अनसार भाषा का □य2न करते ु हए िलखने का अGयास करना होता ह,

ै िजससे उनम; लेखन कौशल परी तरह िवकिसत हो सके । इसके c ू िलए कS◌ा म; समय- समय पर िलिखत काय। कराते रहन े क: कोिशश क: जानी िचाहए । अ&य ◌ास □(4. िलखने क: दसरी अव□था – वण□ क: रचना का िव□तार से वणान कर; । ू 5. िलखने के िलए तैयार करन े क: अव□था का िव□तार से वणान कर; ? 6. िलखने क: माटेसरी िविध से आप □या समझते ह □ ? ं 7. िच□ -िविध क: Xया□या कर; ? 4.5 □!□ S□ '□ #□ □N□O (Connection between Reading and N Writing) हम; यह बात समझनी होगी िक पढ़ना लेखन को □भािवत करता ह ै और िलखना पढ़ने को □भािवत करता ह ै ।िविभ□न शोध" म; यह पाया गया ह ै िक यिद कोई Xयि बहत çयादा पढ़ने का काय। करता ह ै वह c उतना ही बिढ़या लेखक भी होता ह ै ।यिद हम िव□□□थाय" को िविभ□न □कार के सािह2य यथा कहानी, उ□राख□ड म िव□□व□□लय 122 ु CPS -1 किवता,उप□यास या िनबध पढ़ने के िलए □□/रत करते ह □ तो उनक: भाषा और बेहतर िनखर करके हमारे ं सामने आती ह ै ।बहत वष□ तक िव□□□था" को पढना और िलखना अलग अलग िसखाया जाता था , c िक□त िवगत दस वष□ के शोध ने यह □मािणत एव □प□ कर िदया ह ै िक िलखना एव पढना एक ही िस□के ु ं ं के दो पहल ह □ ।शोध म; यह बात भी िनकल कर सामने आयी िक भािषक िवकास िलखने एव पढ़न े के ू ं अतसंबध परिनभार करता ह।ै ं ं हम अपने िव□□लय" म; िव□□□थाय" को दो तरह से िसखाते ह।□ पहला अVयापक कछ □□न क: ु बात उदाहरण दके र सीखाता ह ै एव दसरा िव□□थ□ अपने पाठय□म म; िनधा/रत प□तक को पढ़ कर ् ् ु ं ू सीखता ह।ै हम सब यह बात ठीक तरह से जानते ह □ िक लेखन क: □□□या का म□य उ□□□ य □□न को ु िलिखत □प म; □थानात/रत करता ह ै वहz दसरी तरफ हम यह आसानी से समझ सकते ह □ िक जो कछ भी ं ु ू िलखा जाता ह ै वह पहले से ही हमारे िदमाग म; होता ह ै , इसिलए हम यह कह सकते ह □ िक पढना , िलखने म; मह2वपण। भिमका अदा करता ह।ै छोटे ब□च" को यिद िलखने का ठीक से अGयास करवाया जाय तो ू ू उनका पढ़ने के हनर का भी िवकास होता □य"िक िलखने बार बार अGयास करन े से अSर पहचानना c आसान हो जाता ह ै और पढ़ने म; भी सहायता िमलती ह ै । 4.6 □□] □ □p`□□ □ ! □ : □□□□□□# □□□□ , □□□□ , $□□□ u□N □□□□O m □□□हL□□ #" □□□□ □ □!□ #" □□□□□ (Writing in the Specific m Content Areas: Social Sciences, Science, Mathematics, and Literature of Relevant Languages) इस बात म; कोई भी सदहे नहz ह ै िक िलखना एक हनर ह□ िजसम; हम अपन े िवचार" को अिभXयि □दान c ं करते ह।□ िवषय कोई भी हो चाह े सािमाजक

ि◌व□□न हो, चाह ; ि◌व□□न हो या गिणत या सािह2य या ि◌फर भाषा हर ि◌वषय म; ि◌लखने का ि◌वशेष मह2व ह ै । हमारी आज क: ि◌शS◌ा Xयव□था म; ि◌कसी भी ि◌व□□थ□ क: सफलता ि◌लखने पर ही ि◌नभर। ह ै इसिलए ि◌लखन ◌े का मह2व और भी बढ़ जाता ह ै ।साम□यतया ि◌लखन ◌े क: यो»यता का ि◌वकास करने का ठेका आज कल भाषा ि◌शSक के ि◌ज$मे ही होता ह ै , ि◌क□त यह ठीक नहz ह ै ◌ु ।अलग अलग ि◌वषय" म; लेखन काय। सपािदत करन ◌े क: अलग अलग हनर होता ह।ै ि◌जस हनर क: c c ◌ं आव□यकता सािह2य या सामािजक ि◌व□□न के ि◌वषय म; ि◌लखने म; होगी वह ि◌नiyt □प से ि◌व□□न या गिणत जैसे ि◌वषय" से अिनवायत। ◌ः ि◌भ□न होगी।अतः लेखन कौशल ि◌वकिसत करने का काय। के वल भाषा के अVयापक का ह ै ऐसा नहz ह ै ।ि◌लखन ◌े क: यो»यता का ि◌वकास करने हते ि◌विभ□न ि◌वषय" के □□न के ◌ु साथ साथ उन ि◌वषय" म; ि◌कस तरह से लेखन काय। सपािदत होगा भी अित मह2वपण। ह ै । ◌ू ◌ं उ□राख□ड म ि◌व□□व□□लय 123 ◌ु CPS -1 4.7 □□□ # □N□L□□ # □□□ # □!u # ! □ #□ □□□! □□ #□ □ : □"□ u□N □□□ # □!u □□"# u□N □□w□□ # x' □ □ □'□# ! □ m (Process of analyzing children's writing to understand their conceptions : ways and means of writing with a sense of purpose writing to learn and understand) जब कभी हम भाषा ि◌शSण के उ□□□ य" क: चचा। करते ह □ तब हम ि◌व□□□थाय" म; बोलने, सनने, पढ़न,◌े और ◌ु ि◌लखने के कौशल का ि◌वकास करने क: बात करते ह □ । इसके साथ- साथ ब□च" म; अपन ◌े ि◌वचार" को □भावशाली ढग से रखन ◌े एव अिभXय करने क: यो»यता का ि◌वकास करने को □□थिमकता दते ◌े ह □ । ◌ं ◌ं ि◌व□□थ□ के अदर जब तक अपने ि◌वचार" को □भावशाली ढग से रखने या अिभXय करन ◌े क: Sमता ◌ं ◌ं ि◌वकिसत नहz होती ह ै तब तक उसका भाषा पर परा अिधकार नहz हो पाता । इसिलए रचना ि◌शSण ि◌जसे ◌ू उ□□□ य परक रचना ि◌शSण (Purpose Writing) भी कहते ह,□ क: आव□यकता पड़ती ह ै । सामा□यतया मनqय अपन ◌े ि◌वचार" क: अिभXयि दो तरह से करता ह- बोलकर (मौिखक □प म;) एव दसरा ि◌लखकर ◌ु ◌ं ◌ू (ि◌लिखत □प म;) । उ□□□य परक लेखन के म□य उ□□□ य ि◌न$िनिलिखत होते ह □ – ◌ु १. उ□□}य परक लेखन का n◌ान २. ि◌लख कर अिभ□य□ कर सकने क5 6मता ३. रचना काय म/ मौिलकता लाना उपय। तीन" उ□□□ य" क: पित। उ□□□ यपरक लेखन के अतगा।त क: जानी चािहए । यिद आप इन उ□□□ य" को ◌ु ◌ू ◌ं भली-भाित दखे ;गे तो यह पता चलता ह ै ि◌क पहले उ□□□य म; हमारा Vयेय रचना काय। के ि◌विभ□न □प" क: ◌ं जानकारी कराना होगा । यह VयातXय ह ै ि◌क पव। □◌ािथमक □तर पर इनक: जानकारी □तारानकल ही सभव ◌ू ◌ु ◌ू ◌ं हो सके गी । ि◌#तीय उ□□□य के अतगा।त हमने ि◌लख कर अिभXय करने क: यो»यता □□त करन ◌े क: यो»यता को □थान ◌ं ि◌दया ह ै । इसम; प□, □□थाना प□, वणा।न, ि◌ववरण ि◌नबध, कहानी या अित लघसवाद ि◌दए गए ह □ । इनक: ◌ु ◌ं ◌ं भी अपनी- अपनी सीमाए ह।□ हमारी परीS◌ा □णाली मलतः ि◌लख कर अिभXय कर सकने क: Sमता पर ◌ू ◌ं ि◌नभर। ह ै । ि◌जसक: लेखन शैली ि◌जतनी अ□छी ह ै वो अपन ◌े आप को उतना ही यो»य ि◌स□ कर पाता ह ै । उप□यास, कहािनयाँ, स□मरण, डायरी, लेख, ि◌नबध आिद ि◌विभ□न तरह के उ□□□ यपरक लेखन ि◌लख ◌ं ◌ं कर अिभXय कर पाने क: Sमता पर ही ि◌नभर। ह □ । मौिलकता लान ◌े के स$ब□ध तीसरा उ□□□ य, उ□□□ यपरक लेखन के S◌े□ म; अ2यिधक मह2वपण। ह ै । इससे ◌ू पव। हम ि◌नबधादी के अतगा।त □□यः रटी – रटाई बात; ही दखे ◌ा या जाचा करते थे, पर□त आज के यग म; यह ◌ू ◌ु ◌ु ◌ं ◌ं ◌ं आव□यक हो गया ह ै ि◌क छा□ इस ि◌वषय म; मौिलकता का प/रचय द ◌े । जब हम मौिलकता क: बात करते ह □ तो इसका अथ। आप को यह नहz लेना चािहए ि◌क इस □तर पर छा□ को एक लेखक ही बना द ; । यहा ◌ं ◌ं उ□राख□ड म ि◌व□□व□□लय 124 ◌ु CPS -1 इसका अिभ□□य उसम; मौिलकता क: उ¿◌ावना करना होगा । जो कछ वह ि◌लखे उसम; उसके अपने ◌ु अनभव क: बात उसके अपन ◌े ढग से आनी चािहए । उसक: भाषा अपनी हो उसके भाव अपन ◌े ह" । इस ◌ु ◌ं ि◌वषय म; एक बात मह2वपण। और भी ह ै ि◌जसका वणा।न करना यहा उिचत होगा । मौिलकता का अथ। ◌ू ◌ं ◌ं असब□, अ□□िसगक या □मरिहत लेखन से कदािप नहz ह ै । इसका अथ। ि◌वचार", अनभव" या शैली क: ◌ु ◌ं ◌ं मौिलकता ह,ै ि◌क□त ि◌वषयातर कदािप नहz । इतना होते हए भी आप बहली- भाित जानते ह ◌ै ि◌क □□र$भ c ◌ु ◌ं ◌ं म; ि◌व□□थ□ अ□□िसगक, □महीन बात; तो ि◌लखेगा ही, अतः इस प/र□िथत म; □या□ धैय।, □नेह व ◌ं सहानभितपवा।क सहयोग क: िव□ ही अपनानी होगी । ◌ृ ◌ु ◌ू ◌ू ब□चा के स□□यय को समझने के ि◌लए उनके लेखन का ि◌व®◌े षण करना (Process of ◌ं analyzing children's writing to understand their conceptions): साम□यतया ब□च" के लेखन शैली को ि◌वकिसत करन ◌े के ि◌लए कछ ि◌नधा।/रत ि◌वषय" पर ही ि◌लखन ◌े के ि◌लए ि◌दया जाता था ◌ु ि◌क□त अब □वत□ लेखन को □धानता दी जाती ह ै । जब ब□चा □वय से कछ ि◌लखन ◌े के ि◌लए चनता ह ै तो ◌ु ◌ु ◌ु ◌ं ◌ं वह उस ि◌वषय के साथ □याय कर पान ◌े म; सफल हो पाता ह ै । ब□चे के लेखन से ब□च" के स□2यय के बारे ◌ं म; भी आसानी के साथ पता लगाया जा सकता ह ै । लेखन उनके स$□2यय ि◌नमा।ण म; अित मह2वपण। ◌ू भिमका ि◌नभाता ह ै ।ब□चे अपने आस -पास बहत सी बात; देखते ह □ और उ□हz के आधार पर वे उन ि◌वशेष c ◌ू चीज़" के बारे धारणा का ि◌नमा।ण करते ह □ । अ&य ◌ास □(8. उ□□□ यपरक लेखन से आप □या समझते ह □ ? 9. उ□□□ यपरक लेखन के उ□□□ य" को □प□ कर;। 10. रचना काय। म; मौिलकता लाना से आप □या समझते ह □ ? 11. ि◌लख कर अिभXय करने यो»यता से आप □या समझते ह □ ? 4.8 □□□□N] हमारे दशे म; आकािदमक उपलिEध क: सफलता मलतः ि◌लखने क: यो»यता पर ही ि◌नभर। ह ै चँ◌ि◌क जो ◌ू ◌ू बेहतर तरीके से ि◌लख सकता ह ै वही अपने आप को ठीक ढग से परीS◌ा म; □□तत कर सकता ह ै । ि◌लखना ◌ु ◌ं एक तरीके से बात करन ◌े के सामान ह ै । जैसे ही हम ि◌लखते ह □ हम ि◌कसी से बात करते ह □ हालाक ◌ं अिधकतर ि◌जससे से हम बात कर रह ◌े होते ह ै वह हमारे सामने उपि□थत नहz होता ह ै । हम वता।मान क: प/र□थतय" या घटनाओ क: याद ताज़ा रखने के ि◌लए भी ि◌लखते ह □ । एक अVयापक को ि◌लखन ◌े क: ◌ं ि◌शS◌ा ठीक उसी □कार देनी चािहए जैसे क: वह बात करने क: ि◌शS◌ा पा रहा हो कहने का ता2पय। ह ै ि◌क ि◌लखना ि◌सखाने क: □□□या ि◌ब□कल □वािभावक होनी चािहए । चँ◌ि◌क जब तक ब□चा □कल आता ह ै ◌ु ◌ू ◌ू उ□राख□ड म ि◌व□□व□□लय 125 ◌ु CPS -1 तब तक वह नए नए वा□य बनाना सीख चका होता ह ै हालाक अभी वह उन वा□य" का □मब□

□योग ु ं करने म; मिाहर नहz होता ह ै ।भाषा सीखने का एक □वाभािवक □म ह ै – सनना, बोलना और िलखना । ु भाषा क: िशS ा दने े के िलए □□थिमक □तर से ही ब□च" म; इन चार" कौशल" को िवकिसत करन े का □यास िकया जाता ह ै । ब□च" को पहले मौिखक भाषा के िशS ा

Plagiarism detected: **0.04%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ + 7 resources! id: **145**

दी जाती ह,ै उसके पy ात पढ़ना सीखाया जाता ह ै और उसके तरत पy ात लेखन- कौशल का िशSण आर$भ िकया जाता ह ै । जैस

े ही ब□चे अSर" ु ं का उ□चारण कर उनके िलिपब□ □प को पहचानन े लगते ह,□ वैसे ही इन अSर" के िलिपब□ □प" को िलखना सीखना भी श□ कर िदया जाता ह ै । यह काया तभी श□ िकया जाना चािहए जब ब□च" क: ु ु उगिलया कलम पकड़न े क: अGय□त हो जाए । ं ं ं 4.9 □N`□ efNg □h" □ 1. अJवाल, पी. और सजय वफमार 2000 (सपादक), िहदी देशकाल म; ु ं ं ं 2. चॉ$□क:, एन. 1957, िसनटि□टक □°□चसा, दी हगे : मौटेन क.। ं 3. चॉ$□क:, एन. 1959, /रXय ऑफ ि□कनसा वबाल िबिहे वयर. ल□»वेजेस 35.1.26-58 ू 4. चॉ$□क:, एन. 1972, ल□»वेज एड माइड, □ययाका : हारकोटा ·ास जोवािनोवच। ू ं ं 5. चॉ$□क:, एन. 1996, पॉवसा एड □□□पे□टस: /रफले□शस ऑन âमन नचे र एड द सोशल ृ ं ं ं ू आडार, िद□ली: माVयम ब□स। ु 6. चॉ$□क:, एन. 1965, आ□पे□टस ऑãफ द □योरी ऑफ िसनटे□स, क□ ि·ज : एम. आइ.। टी. ृ □□स। 7. चॉ$□क:, एन. 1986, नॉलेज ऑफ ल□»वेज, □ययाका : □ गर। ू 8. चॉ$□क:, एन. 1988, ल□»वेज एड □□El$स ऑãफ नॉलेज, व□िफ·ज, मास: एम. आइ.। टी.। ं 9. दआ, एच. आर. 1985, ल□»वेज Êिलानग इन इिडया, िद□ली: हरनाम पिEलशसा। ं ं ु 10. हबै रमास, जे. 1998, ऑन द □□गमिैट□स ऑफ क$यिनवेफशन, क□ ि·ज, मास: एम. आइ.। टी. ु □□स। 11. हबै रमास, जे. 1998, दी िफिलॉ□फकल िडसकोसा ऑãफ मॉिडनाटी, क□ ि·ज, मास: एम. आइ.। टी. □□स। 12. कमार, के . 2001, □क ल क: िहदी, पटना: राजकमल। ु ू ं 13. िशS ा म□□लय, िशS ा आयोग कोठारी कमीशन 1964 -1966, िशS ा एव राq° ीय िवकास, ं ं िशS ा म□□लय, भारत सरकार 1966 ं 14. नेशनल पॉिलसी ऑन एजके शन, 1986, मानव ससाधन िवकास म□□लय, िशS ा िवभाग, नयी ु ं ं िद□ली। 15. पटनायक, डी. पी. 1981, म□टीलगएिल¾म एड मदर-टग एजवेफशन, ऑ□सपफोडा ु ु ं ं ं यिनविसाटी □□स। ू उ□राख□ड म िव□□व□□लय 126 ु CPS -1 16. पटनायक, डी. पी. 1986, □टडी ऑफ ल□»वेजेज, ए /रपोटा, नयी िद□ली: एन.सी.इ.। आर.टी। 17. /रचäस, जे. सी. 1990, दी ल□»वेज टीिचग मिै°□स, कै ि·ज :कै ि·ज यिनविसाटी □□स। ू ं ृ 18. सायर, डी. 1924, दी इपैफ□ट ऑãफ बाइिलगिल¾मम ऑन इटेिलज;स, ि·िटश जनाल ऑãफ ु ं ं साइकोलॉजी 14:25-38 19. 5ीधर, के .के . 1989, इि»लश इन इिडयन बाइिलगिल¾म ,नयी िद□ ली, मनोहर। ु ं ं ं 20. ितवारी, बी. एन., चतव°दी, एम. और िसह, बी. 1972 (सपादकगणद), भारतीय भाषा िव□□न ु ं ं ृ क: भिमका, िद□ली : नेशनल पिEलिशग हाउस। ू ं 21. यने□को, 2003, एजवेफशन इन ए म□टीलगएल व□डा, यने□को एजके शन पोिजशन पेपर, ू ु ु ू ु ं पे/रस। 22. Xयोगो2सक:, एल. एस. 1978, माइड इन सोसायटी: दी डेवलपम;ट ऑãफ हायर ं साइकोलॉिजकल □□सेस, व□िफ·ज, मॉस: हावाड यिनविसाटी □□स। ू 23. जमील, वी. 1985, रे□प"िडग ट □टड;ट राइिटग, टी. इ.। एस. ओ. एल. □□मािसक, 19.1 ू ू ं ं 24. इस वेबसाइट को ज□र देख; : http//www.languageindia.com 4.10 □ □O□L □# □d N 1. िलिप क: िशSण क: आव□यकता एव लेखन कौशल के मह2व पर □काश डाल; । ं 2. उ□□□ य परक लेखन से आप □या समझते ह?□ □प□ कर; । 3. लेखन कौशल या िलिखत अिभXयि के मह2व को □प□ कर; । 4. पढ़ने एव िलखने के मVय के अतसांबध को □प□ कर; । ं ं ं 5. िवशेष स□दभ□ म; लेखन जैसे सामािजक िव□□न, िव□□न, गिणत एव िविवध सािह2य" क: भाषा ं म; िलखने क: □□□या से आपका □या अिभ□□य ह ै ? उ□राख□ड म िव□□व□□लय 127 ु

Disclaimer:

This report must be correctly interpreted and analyzed by a qualified person who bears the evaluation responsibility!

Any information provided in this report is not final and is a subject for manual review and analysis. Please follow the guidelines: Assessment recommendations

Plagiarism Detector - Your right to know the authenticity! © SkyLine LLC